04 - सड़कों को मौत नहीं, जीवन का रास्ता बनाएं

05 - ट्रंप की आंखों की किरकिरी

06 - पानी बचाना हमारी जरूरत भी है और जिम्मेदारी भी: मुख्यमंत्री

07 - "न्याय सेवा में उत्कृष्टता का नया अध्याय

सुबह सवेरे

A Daily News Magazine
इंदौर
मंगलवार, 21 अप्रैल, 2026

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 11 अंक 198, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

छोटी आकाशगंगाओं में भी छिपे हो सकते हैं ब्लैक होल

ललित मौर्य

ब्रह्मांड की सबसे छोटी आकाशगंगाओं में भी बड़े रहस्य छिपे हो सकते हैं। भारतीय वैज्ञानिकों द्वारा किए एक नए अध्ययन ने यह संभावना जताई है कि हमारी मिल्की वे (आकाशगंगा) के आसपास घूमने वाली बेहद छोटी, धुंधली और गोलाकार आकाशगंगाओं (ड्वार्फ स्फेरॉइडल गैलेक्सीज) में भी ब्लैक होल मौजूद हो सकते हैं। यह खोज कॉस्मिक टाइम में ब्लैक होल के जन्म और आकाशगंगाओं के विकास को समझने में अहम कड़ी साबित हो सकती है।

आमतौर पर विशाल आकाशगंगाओं के केंद्र में सुपरमैसिव ब्लैक होल नियमित रूप से पाए जाते हैं, लेकिन छोटी आकाशगंगाएं बहुत मंद, गैस-विहीन और डार्क मैटर से भरी होती हैं। इसी कारण इनमें ब्लैक होल का पता लगाना बेहद कठिन रहा है।

छोटी आकाशगंगाओं में बड़ा रहस्यः यह सवाल सिर्फ खोज तक सीमित नहीं है, बल्कि इससे यह समझने में मदद मिलती है कि ब्रह्मांड के शुरुआती दौर में पहले ब्लैक होल कैसे बने, वे छोटे कम द्रव्यमान वाले वातावरण में कैसे बढ़े, और क्या आकाशगंगाओं के केंद्र में ब्लैक होल के द्रव्यमान और तारों की गति के बीच संबंध (वेलोसिटी डिस्पर्शन) जो बड़ी आकाशगंगाओं में देखा जाता है, क्या वह सबसे छोटी आकाशगंगाओं में भी लागू होता है या नहीं। गौरतलब है कि 'वेलोसिटी डिस्पर्शन' आकाशगंगाओं की संरचना और विकास को समझने में एक अहम संकेतक है।

इसका जवाब इसलिए भी जरूरी है, क्योंकि इससे हमें पूरे ब्रह्मांड में समय के साथ ब्लैक होल कैसे विकसित हुए, इसकी एक साफ और बेहतर समझ मिल सकेगी। भारत के इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ एस्ट्रोफिजिक्स के वैज्ञानिकों, के आदित्य और अरुण मंगलम ने इस दिशा में महत्वपूर्ण सफलता हासिल की है। उन्होंने मिल्की वे के आसपास घूमने वाली छोटी गोलाकार आकाशगंगाओं के सटीक मॉडल तैयार किए। इन मॉडलों में तारे, डार्क मैटर का घेरा और संभावित सेंट्रल ब्लैक होल तीनों प्रमुख घटक शामिल हैं।

तारों की गति से मिला सुरागः उन्होंने तारों की गति से जुड़े उच्च गुणवत्ता वाले आंकड़ों का उपयोग कर यह समझा कि इन आकाशगंगाओं में तारे कैसे चलते हैं, और इसी आधार पर यह अनुमान लगाया कि अगर कोई ब्लैक होल मौजूद है, तो उसका द्रव्यमान कितना हो सकता है।

इस अध्ययन के नतीजे प्रतिष्ठित द एस्ट्रोफिजिकल जर्नल में प्रकाशित हुए हैं।

इस अध्ययन में शोधकर्ताओं ने स्टेलर एनीसोट्रॉपी तकनीक का उपयोग किया, यानी तारों की गति हर दिशा में एक जैसी नहीं होती, कुछ केंद्र की ओर (रेडियल) और कुछ गोलाकार (टैन्जेंशियल) होती है। इससे आकाशगंगाओं में तारों की वास्तविक गति को बेहतर तरीके से समझना संभव हुआ।

इस तरीके से उन्होंने एक साथ तारों, डार्क मैटर और संभावित ब्लैक होल के प्रभाव का आकलन किया। वैज्ञानिकों ने इसकी मदद से कई छोटी गोलाकार आकाशगंगाओं का विश्लेषण कर ब्लैक होल के द्रव्यमान की मजबूत सीमाएं तय कीं।

सबसे खास बात यह रही कि उन्होंने अपने नतीजों को पहले के शोधों से जोड़कर ब्लैक होल के द्रव्यमान और तारों की गति के बीच एक एकीकृत संबंध तैयार किया। यह संबंध करीब 10 से 300 किलोमीटर प्रति सेकंड तक की गति को कवर करता है और ब्लैक होल के द्रव्यमान की बहुत बड़ी रेंज को समझने में मदद करता है।

शोध के मुताबिक, इन छोटी आकाशगंगाओं में ब्लैक होल का द्रव्यमान आमतौर पर 10 लाख सूर्य द्रव्यमान से कम होता है, जबकि कई मामलों में यह इससे भी काफी कम हो सकता है। यानी यहां विशाल ब्लैक होल का होना जरूरी नहीं, बल्कि ये मध्यम द्रव्यमान (इंटरमीडिएट) के ब्लैक होल की मौजूदगी से अधिक मेल खाते हैं।

छोटी-बड़ी आकाशगंगाओं को जोड़ता नियमः सबसे अहम बात यह है कि इस अध्ययन ने ब्लैक होल के द्रव्यमान और तारों की गति के बीच एक एकीकृत संबंध का सुझाव देता है, जो छोटी से बड़ी सभी आकाशगंगाओं पर लागू होता है। यह संबंध ब्रह्मांड में ब्लैक होल के विकास को समझने के लिए अब तक का सबसे व्यापक आधार बन सकता है। हालांकि छोटी आकाशगंगाओं के मामले में थोड़ी अनिश्चितता बनी रहती है। कुल मिलाकर, यह शोध इस संबंध को समझने के लिए अब तक का सबसे व्यापक और भरोसेमंद आधार देता है। अध्ययन से जुड़े शोधकर्ता अरुण मंगलम ने प्रेस विज्ञप्ति में बताया कि, 'उन्होंने अपने नतीजों की तुलना ब्लैक होल के बढ़ने के अलग-अलग वैज्ञानिक मॉडलों से भी की है।

क्या बताते हैं वैज्ञानिक मॉडल?: उन्होंने पाया कि गैस के जरिए बढ़ने वाले मॉडल छोटी आकाशगंगाओं में करीब 1,000 सूर्य द्रव्यमान तक के ब्लैक होल का अनुमान देते हैं, जबकि तारों को पकड़ने (स्टेलर कैप्चर) की प्रक्रिया से यह 10,000 सूर्य द्रव्यमान या उससे ज्यादा तक बढ़ सकता है, यहां तक कि जब गैस मिलना बंद हो जाए तब भी। अच्छी बात यह है कि ये दोनों अनुमान उन सीमाओं के अंदर ही आते हैं, जो अवलोकन से सामने आई हैं।'

इसके अलावा, वैज्ञानिकों ने एक और संभावना भी देखी कि ये छोटी गोलाकार आकाशगंगाएं पहले बड़ी रही हों और मिल्की वे के साथ टकराव या खिंचाव (टाइडल स्ट्रिपिंग) के कारण अपने कई तारे खो चुकी हों। यह भी इस रहस्य को समझाने का एक दूसरा तरीका हो सकता है।

शोधकर्ताओं के मुताबिक यह अध्ययन सिद्धांत और भविष्य के अवलोकनों के लिए बेहद महत्वपूर्ण है। छोटी से छोटी आकाशगंगाओं तक एक समान संबंध स्थापित कर यह आकाशगंगाओं और ब्लैक होल के विकास को समझने के लिए एक मजबूत आधार देता है। उन्हें उम्मीद है कि आने वाले अत्याधुनिक टेलीस्कोप जैसे प्रस्तावित नेशनल लार्ज ऑप्टिकल टेलीस्कोप और अत्यंत विशाल टेलीस्कोप (ईएलटी), इन छोटी और धुंधली आकाशगंगाओं में तारों की गति का पहले से कहीं अधिक सटीक अवलोकन कर सकेंगे। इन नई सुविधाओं के जरिए वैज्ञानिक यह स्पष्ट कर पाएंगे कि क्या वास्तव में छोटी आकाशगंगाओं में प्रारंभिक ब्लैक होल के संकेत मौजूद हैं। साथ ही, अध्ययन में बताए गए अलग-अलग मॉडल जैसे गैस से ब्लैक होल का बढ़ना, तारों को पकड़कर बढ़ना या आकाशगंगाओं का टूटना, ऐसी भविष्यवाणियां करते हैं जिन्हें आने वाले समय में नई दूरबीनों से सीधे जांचा जा सकेगा। अगर ऐसा साबित होता है, तो यह खोज ब्रह्मांड के जन्म और विकास की हमारी समझ को एक नई दिशा दे सकती है।

('डाउन टू अर्थ' हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

जम्मू में भीषण हादसा, 21 की मौत

तीखा मोड़ और स्टियरिंग बेकाबू होते ही 100 फिट गहरी खाई में गिरी बस

श्रीनगर (एजेंसी)। सोमवार की सुबह जम्मू-कश्मीर में तब चीख-पुकार मच गई, जब एक यात्री बस 100 फिट गहरी खाई में गिर गई। इस हादसे में 21 लोगों की मौत हो गई, जबकि 30 लोग घायल हो गए। ये हादसा तब हुआ, जब एक यात्री बस रामनगर से उधमपुर जा रही थी, तभी अचानक बस का संतुलन बिगड़ गया और बस सीधे खाई में जा गिरी। इस हादसे के बाद वहीं चीख-पुकार मच गई। जहां ये दुर्घटना हुई है, वह कनोट गांव है, जो उधमपुर जिले के तहत आता है। हालांकि, हादसे के बाद स्थानीय पुलिस, स्थानीय लोग और सेना के जवानों ने तुरंत बाद बचाव अभियान शुरू कर दिया। पुलिस अधिकारियों ने बताया कि यात्रियों को ले जा रही बस जिले की रामनगर तहसील के कनोट मोड़ के पास दुर्घटनाग्रस्त हो गई। बस में करीब 50 यात्री सवार थे जिनमें अधिकांश अपने कामकाज के लिए रामनगर से उधमपुर जा रहे थे। अधिकारियों ने बताया कि पहाड़ी सड़क पर मोड़ आया और बस गिर गई।

राष्ट्रपति, उप राज्यपाल और मुख्यमंत्री ने भी जताया शोक

पीएम ने सोशल मीडिया एक्स पर भी लिखा, जम्मू-कश्मीर के उधमपुर में एक बस दुर्घटना के कारण लोगों की मौत के बारे में सुनकर दुख हुआ। मैं उन लोगों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता हूं जिन्होंने अपने प्रियजनों को खो दिया है। मैं घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की प्रार्थना करता हूं। दुखद दुर्घटना में अपनी जान गंवाने वाले प्रत्येक व्यक्ति के निकटतम परिजन को पीएमएनआरएफ से 2 लाख रुपये की अनुग्रह राशि दी जाएगी। घायलों को 50,000 रुपये दिए जाएंगे। इनके अलावा राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू, उपराज्यपाल मनोज सिन्हा और राज्य के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने भी इस घटना पर शोक और दुख जताया है।

पीएम ने किया मुआवजे का ऐलान

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी इस घटना पर दुख जताया है और हादसे के मृतकों के परिजनों को 2-2 लाख रुपये बतौर मुआवजा देने का ऐलान किया है। उन्होंने सभी घायलों को भी 50-50 हजार रुपये की सहायता का ऐलान किया है।

केंद्रीय मंत्री ने स्थिति पर नजर रखी

केंद्रीय मंत्री जितेंद्र सिंह ने बताया कि घटना के तुरंत बाद उन्होंने उधमपुर के डिप्टी कमिश्नर मिंगा शेरपा से बात की और स्थिति का जायज़ा लिया। उन्होंने एक्स पर एक पोस्ट में बताया, अभी-अभी उधमपुर के डीसी मिंगा शेरपा से बात की, क्योंकि मुझे एक घंटे से भी कम समय पहले कानोट गांव में रामनगर से उधमपुर जा रही एक सार्वजनिक परिवहन बस के दुर्घटनाग्रस्त होने की सूचना मिली। उन्होंने कहा, बचाव अभियान तुरंत शुरू कर दिया गया है। कई लोगों के हताहत होने की आशंका है।

पीड़ितों को हर संभव सहायता प्रदान की जा रही है। घायलों को चिकित्सा सहायता के लिए अस्पताल ले जाया जाएगा। गंभीर रूप से घायलों को एयरलिफ्ट करने की व्यवस्था की जा रही है।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने उज्जैन के शांतम आश्रम में भगवान श्री हनुमान जी का पूजन कर प्रदेशवासियों और मातृ शक्ति की सुख समृद्धि की कामना की।

फिरोजिया ट्रॉफी विजेताओं के लिये अतिरिक्त पुरस्कार की घोषणा की

प्रदेश में खेल सुविधाओं का हो रहा निरंतर विस्तार : मुख्यमंत्री

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि मध्यप्रदेश में खेल सुविधाओं का निरंतर विस्तार किया जा रहा है। शासन का प्रयास है कि खिलाड़ियों को हर स्तर पर आधुनिक खेल संरचना, प्रशिक्षण और अन्य आवश्यक संसाधन उपलब्ध हों। शासन के इन प्रयासों से मध्यप्रदेश की खेल प्रतिभाएं विश्व स्तर पर उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रही हैं। उज्जैन में भी विभिन्न खेल मैदानों में खेल व्यवस्थाओं का आधुनिकीकरण किया जा रहा है। उज्जैन के क्षीर सागर मैदान को भी नगर निगम और खेल विभाग द्वारा विकसित किया जाएगा।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव रविवार को देर रात उज्जैन में फिरोजिया ट्रॉफी का फाइनल मैच देखा और खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन किया। उन्होंने इस अवसर पर फिरोजिया ट्रॉफी की विजेता टीम को रुपए 1 लाख और उप विजेता टीम को 51 हजार रुपए के अतिरिक्त नगद पुरस्कार की घोषणा भी की।

फिरोजिया ट्रॉफी का आयोजन 12 अप्रैल से 19 अप्रैल तक उज्जैन के क्षीर सागर मैदान पर किया गया। फाइनल मुकाबले में दोनों टीमों के बीच रोमांचक संघर्ष देखने को मिला, जिससे दर्शक अंत तक मैच का आनंद लेते रहे। सांसद अनिल फिरोजिया ने मुख्यमंत्री डॉ. यादव का फिरोजिया ट्रॉफी में प्रत्येक वर्ष पधारने और खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन करने पर आभार व्यक्त किया।

फिरोजिया ट्रॉफी सांसद अनिल फिरोजिया के पिता स्व. भूरेलाल फिरोजिया की स्मृति में विगत 21 वर्षों से हर वर्ष आयोजित की जा रही है। प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार रुपए 5 लाख 51 हजार है और द्वितीय पुरस्कार 2 लाख 51 हजार रुपये है। प्रतियोगिता में इस वर्ष नारी शक्ति वंदन की भावना को साकार करते हुए महिला क्रिकेट मैच और मातृशक्ति सम्मान समारोह भी आयोजित किया गया।

कार्यक्रम में विधायक श्री अनिल जैन कालूहेड़ा, रवि सोलंकी और बड़ी संख्या में दर्शक उपस्थित रहे।

पश्चिम बंगाल में न गाय कटेगी, न हिंदू बंटेगा

योगी बोले-ममता दीदी का इस बार खेला बंद

मेदिनीपुर (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल में सीएम योगी ने कहा- टीएमसी वालों को जय श्रीराम नारे से चिढ़ है, दुर्गा पूजा नहीं करने देते, सरकार जुलूस पर प्रतिबंध लगाती है। ममता दीदी कहती हैं- खेला होबे। मैं कहता हूं- ए बार खेला बंद, उन्नयन शुरू। बंगाल में गाय कटने नहीं देंगे, हिंदू को बंटने नहीं देंगे। योगी ने बांग्ला में कहा-आमार सोनार बांग्ला, टीएमसी मुक्तो बांग्ला। ओंधोकार होटबे, सूरज उठबो, कोमल खिलबे। बलटानो दोरकार, चाही बीजेपी सोरकार। (यानी मेरा प्यारा स्वर्णिम बंगाल, टीएमसी मुक्त बंगाल। अंधकार हटेगा, सूरज उगेगा, कमल खिलेगा। बदलाव जरूरी है...बीजेपी की सरकार चाहिए।) मुख्यमंत्री ने सोमवार को पश्चिम मेदिनीपुर जिले की पिंगला विधानसभा क्षेत्र में रैली की। भाजपा प्रत्याशियों को जिताने की अपील करते हुए सीएम योगी ने ममता सरकार पर जमकर निशाना साधा। रैली में समर्थक बुलडोजर लेकर पहुंचे थे।

टीएमसी गोहत्या नहीं रोक सकती, इस बार खेला बंद

सीएम योगी ने कहा- टीएमसी तुष्टीकरण के नाते गोहत्या रोक नहीं सकती। माफिया पर लगाम नहीं लगा सकती। ये सुरक्षा के साथ खिलवाड़ कर रही है। बांग्लादेश बॉर्डर पर फेंसिग को रोक रही है। 15 सालों में बंगाल में गुंडागर्दी हो रहा है। 2017 के पहले यूपी में भी ऐसा ही था लेकिन वहां डबल इंजन सरकार आने के बाद नो कर्फ्यू नो दंगा, यूपी में है सब चंगा। अब वहां हाईवे, मेट्रो, रैपिड रेल बन रहे हैं। माफिया की पसली तोड़ने के लिए बुल्डोजर का इस्तेमाल होता है। पहले रामभक्तों पर लाठी गोली चलती थी, अब राम भक्तों का सत्कार होता है। सीएम ने कहा- ममता दीदी कहती हैं- खेला होबे। मैं कहता हूं- ए बार खेला बंद, उन्नयन शुरू। बंगाल में गाय कटने नहीं देंगे, हिंदू को बंटने नहीं देंगे।

शरद की सुबह

स्वर्ग से निकाल दिया
गया है फरिश्तों को
धरती से खदेड़ दी गई हैं औरतें
बम विस्फोट में बचे बच्चे
अब बेघर शरणार्थी हैं
सारे पेड़ कागज़ों में
तब्दील हो चुके हैं
हिरण की खालें जैकेट
बन टंगी है मॉल में
नदियां अपने उद्गम स्थल पर
वापस लौट चुकी हैं
सारी ऑक्सीजन सिर्फ आग
लगाने के काम आ रही है
गूंगे विश्वविद्यालयों में
सिखाया जा रहा है संगीत
सबसे बड़े म्यूज़ियम में शीशे के
जार में बंद है प्रेम के अवशेष
दुनिया अब पूरी तरह सुरक्षित है।

- श्रुति कुशवाहा

दुनिया के एक तिहाई तेल सप्लाई को तबाह कर देंगे

ट्रंप के धमकी का ईरानी सेना ने दिया जवाब, वार्ता से किया इंकार

तेहरान (एजेंसी)। ईरान को तबाह करने की डोनाल्ड ट्रंप की धमकी पर आईआरजीसी ने कड़ी प्रतिक्रिया दी है। ईरान के इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कॉर्प्स ने कहा है कि अगर अमेरिका की ओर से देश के बुनियादी ढांचे पर हमला हुआ तो वह कोई भी बड़े से बड़ा कदम उठाने से नहीं चूकेंगे। ऐसे हमले किए जाएंगे, जो दुनिया की एक तिहाई तेल आपूर्ति को खत्म देंगे और वैश्विक स्तर पर हाहाकार मच जाएगा। आईआरजीसी ने डोनाल्ड ट्रंप से कहा है कि उनको ईरान के खिलाफ धमकीभरी भाषा का इस्तेमाल बंद करना होगा।

ईरान ने फिलहाल अमेरिका के साथ वार्ता नहीं करने की बात भी कही है। आईआरजीसी की तस्नीम न्यूज एजेंसी ने कहा है कि अमेरिका अगर ईरान के पावर प्लांट को निशाना बनाता है तो फिर उनको एक ऐसे सरप्राइज का सामना करना होगा, जिससे पार पाना उनके लिए आसान नहीं होगा। ट्रंप के रवैया का जवाब हम उसी तरीके से देंगे। यह खाड़ी देशों की तेल फैसिलिटी और पाइपलाइन पर हमला होगा।

अमेरिका के सहयोगी सहेंगे हमले

आईआरजीसी सूत्रों से हवाले से तस्नीम ने बताया है कि उनकी ओर से सऊदी अरब की अरामको और यानबू ऑयल फैसिलिटी और यूएई की फुजैरा पाइपलाइन को निशाना बनाया जाएगा। ईरान ऐसा करते हुए दुनिया की एक तिहाई तेल सप्लाई को ध्वस्त करने में नहीं हिचकिचाएगा। इससे अमेरिका के साथ उसके सहयोगियों को भी खामियाजा उठाना होगा। आईआरजीसी ने अमेरिका की नौसैनिक नाकेबंदी का कड़ा विरोध किया है। आईआरजीसी ने कहा है कि जब तब अमेरिकी नेवी का घेरा ईरानी बंदरगाहों पर रहेगा, तब तक समझौते की बातचीत आगे नहीं बढ़ सकती है। ईरानी अधिकारियों ने नाकेबंदी को पिछली आपसी सहमतियों का सीधा और स्पष्ट उल्लंघन माना है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने रविवार को कहा है कि बातचीत विफल होती है तो ईरान के साथ कोई नरमी नहीं बरती जाएगी और उनके बुनियादी ढांचे पर हमले करते हुए सब कुछ तबाह कर दिया जाएगा। ट्रंप ने कहा कि मेरे प्रतिनिधि पाकिस्तान जा रहे हैं। हम एक अच्छी डील का प्रस्ताव दे रहे हैं। मुझे उम्मीद है कि ईरानी इसे स्वीकार करेंगे। ऐसा नहीं हुआ तो ईरान के सभी पावर प्लांट और पुल तबाह कर दिए जाएंगे। अमेरिका और ईरान की दूसरे दौर की वार्ता पाकिस्तान में होनी है।

1947 के विभाजन के लिए सिर्फ कांग्रेस जिम्मेदार

ओवैसी बोले-हम बंगाल में भाजपा की बी टीम नहीं

लिंबायत (एजेंसी)। एआईएमआई चीफ असदुद्दीन ओवैसी ने रविवार को कहा कि 1947 के विभाजन के लिए मुसलमान नहीं, बल्कि कांग्रेस जिम्मेदारों में शामिल थी। ओवैसी गुजरात के लिंबायत में एक रैली को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने मौलाना अबुल कलाम आजाद की पुस्तक इंडिया विन्स फ्रीडम का हवाला देते हुए कहा कि आजाद ने गांधी और नेहरू से भारत के विभाजन को रोकने की अपील की थी। उन्होंने पश्चिम बंगाल में अपनी पार्टी को भाजपा की बी टीम कहे जाने पर कांग्रेस और तृणमूल कांग्रेस पर निशाना साधा और 11 सीटों पर चुनाव लड़ने को लेकर हो रही आलोचना का विरोध किया।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 20 °c | न्यूनतम 18°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ मंगलवार, 21 अप्रैल 2026

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

संक्षिप्त समाचार

ईरान युद्ध के बीच भारतीय सेना का दिखा बड़ा प्लान

- तेल और गैस की कमी दूर करने के मिशन में जुटी अपनी सेना

नई दिल्ली (एजेंसी)। ईरान युद्ध के चलते तेल और गैस संकट के बीच भारतीय सेना ने आगे का पूरा प्लान तैयार कर लिया है। भारतीय सेना एलपीजी और फ्यूल में काफी कटौती करके वैकल्पिक रास्ता अपना रही है। अगले महीने से यह एक मिशन के स्तर पर शुरू हो जाएगा। सेना बायोगैस और सोलर जैसे वैकल्पिक ऊर्जा के साधनों का उपयोग कर रही है। रिपोर्ट के मुताबिक

सेना ने बायोगैस स्टोव्स खरीदने का ऑर्डर जारी कर दिया है। इसके अलावा सेना के जवानों का मूवमेंट 400 किलोमीटर के अंदर ही सीमित किया जाएगा जिससे फ्यूल बचाया जा सके। अधिकारी ने बताया बिना किसी ऑपरेशनल क्षमता को कम किए सेना के वाहनों का आवागमन सीमित किया जा रहा है। वाहनों की पूलिंग, एक साथ कई काम निपटाने की योजना भी तैयार की गई है। जिससे कि फ्यूल के खर्च को कम किया जा सके। अधिकारियों ने बताया कि इलेक्ट्रिक गाड़ियों और सीएनजी का इस्तेमाल बढ़ाया जाएगा। कुछ चीजें लागू हो गई हैं और वहीं फ्यूल बचाने के लिए कुछ नियम अगले एक दो हफ्ते में लागू हो जाएंगे। अधिकारियों ने बाताया कि सेना से संबंधित उड़ानों को भी सीमित किया जाएगा। जिससे सेना की क्षमता को प्रभावित किए बिना फ्यूल बचाया जा सके।

डंकी वाले रूट से 6 महीने में अमेरिका पहुंचा, जलकर मौत

- हरियाणवी युवक की 6 महीने में शादी थी, वीडियो कॉल से शगुन डाला, ट्रक में फंसकर मरा

कैथल (एजेंसी)। हरियाणा के कैथल जिले के एक छोटे से गांव बाकल में जन्में 26 साल के सिमरनजीत सिंह की अमेरिका में सड़क हादसे में मौत हो गई। सिमरनजीत बेहतर भविष्य की तलाश में हजारों किलोमीटर दूर परिवार की आर्थिक स्थिति सुधारने का सपना लेकर आया था। वो खतरनाक 'डंकी रूट' के जरिए 6 महीने के अंदर विदेश पहुंचा था। कई देशों की कठिन यात्रा, जेल तक का सामना और संघर्ष भरी जिंदगी के बाद उसने ट्रक ड्राइवर के रूप में काम शुरू किया, लेकिन सड़क हादसे ने उसके सपनों के साथ-साथ परिवार की उम्मीदों को भी खत्म कर दिया। परिवार को जब उसके मरने की खबर मिली तो सभी का रो-रो कर बुरा हाल था। परिवार सिमरनजीत की 6 महीने में शादी करने की तैयारी में था, लेकिन कैलिफोर्नियां में ट्रक की टक्कर के चलते उसकी जलकर मौत हो गई। टक्कर होते ही चिंगारी निकली और ट्रक में आग लग गई। मौत के बाद सिमरनजीत की केवल जली हुई हड्डियां मिलीं। डंकी रूट से 6 महीने में अमेरिका पहुंचाः सिमरनजीत सिंह की मौत के बाद परिवार से बातचीत के दौरान कई बातें सामने आई। उसके चचेरे भाई इंद्रपाल सिंह ने बताया कि सिमरनजीत सिंह को डंकी रूट से अमेरिका जाने में करीब 6 महीने का समय लगा था।

पीएम के दौरे से पहले पचपदरा रिफाइनरी में लगी आग

लोकार्पण से पहले धूं-धूं कर जली, सुरक्षा एजेंसियां अलर्ट

बालोतरा/ पचपदरा (एजेंसी)। राजस्थान के बालोतरा जिले से सबसे बड़ी और चौंकाने वाली खबर सामने आ रही है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की ओर से कल यानी 21 अप्रैल को पचपदरा रिफाइनरी के जिस ऐतिहासिक लोकार्पण समारोह को लेकर पूरे देश की नजरें टिकी हैं, उससे ठीक 24 घंटे पहले रिफाइनरी परिसर में भीषण आग लग गई। इस अचानक हुई घटना ने न केवल करोड़ों के प्रोजेक्ट को नुकसान पहुंचाया है, बल्कि वीवीआईपी सुरक्षा और तकनीकी मानकों पर भी गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। सुरक्षा एजेंसियां ऐक्टिव हो गई हैं।

आसमान में छाया काला धुआं, अफरा-तफरी का माहौल

सोमवार दोपहर जब रिफाइनरी परिसर लोकार्पण की अंतिम तैयारियों में जुटा था, तभी एक विशिष्ट यूनिट से आग की ऊंची लपटें उठने लगीं। देखते ही देखते धुएं का गुबार इतना घना हो गया कि इसे कई किलोमीटर दूर से देखा जाने लगा। जिस परिसर को प्रधानमंत्री के दौरे के मद्देनजर एसपीजी और राजस्थान पुलिस ने नो फ्लाई जोन और अभेद्य किले में तब्दील कर रखा था, वहां अचानक मची इस अफरा-तफरी ने प्रशासन के हाथ-पांव फुला दिए।

फायर फाइटिंग ऑपरेशन्स और तकनीकी डैमेज

आग की सूचना मिलते ही रिफाइनरी का अत्याधुनिक इन-हाउस फायर सेफ्टी सिस्टम सक्रिय हो गया। मौके पर मौजूद दर्जनों दमकल गाड़ियां और हाइड्रेंट सिस्टम के जरिए आग बुझाने का प्रयास किया जा रहा है। एचपीसीएल के तकनीकी विशेषज्ञों की टीम डैमेज कंट्रोल में जुटी है। हालांकि, अभी तक किसी जनहानि की खबर नहीं है, लेकिन माना जा रहा है कि रिफाइनरी की संवेदनशील मशीनरी को भारी नुकसान पहुंचा है। प्रधानमंत्री के दौरे से ठीक पहले हुई इस घटना ने सुरक्षा व्यवस्थाओं को लेकर कई सवालिया निशान लगा दिए हैं। फिलहाल जिला प्रशासन और रिफाइनरी के उच्चाधिकारी मौके पर मौजूद हैं। एसपीजी की टीमें भी घटना स्थल का मुआयना कर रही हैं ताकि कल के दौरे की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके।

झारखंड में गोड्डा-महगामा रेल प्रोजेक्ट को मिली रफ्तार

- पटरी बिछाने का काम हो गया शुरू 468 करोड़ होंगे खर्च

गोड्डा (एजेंसी)। गोड्डा-महगामा-पीरपैंती रेल परियोजना ने रफ्तार पकड़ ली है। परियोजना के पहले चरण में गोड्डा से महगामा के बीच 27.5 किमी लंबी पटरी बिछाने काम शुरू हो गया है। गोड्डा प्रखंड के दियारा, नेपूरा,पंचकाठी मौजा आदि क्षेत्र में पटरी बिछाई जा रही है। साथ ही अधिग्रहित जमीन के चारों ओर बाउंड्री का भी निर्माण किया जा रहा है। ऐसे में गोड्डा के बाद पथरगामा व महगामा भी रेल के मानचित्र में दिखेगा। इस परियोजना से क्षेत्र के समाजिक व आर्थिक रफ्तार को भी गति मिलेगी। दूसरे फेज में महगामा से पीरपैंती तक रेल पटरी बिछाने का काम होगा।

चिप्स से शिप्स तक रहेगा भारत-दक्षिण कोरिया का साथ

- मजबूत और बेहतर इकोसिस्टम बनाने पर काम कर रहे दोनों देश
- पीएम मोदी और साउथ कोरिया के राष्ट्रपति के बीच हुई बातचीत

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सोमवार को नई दिल्ली के हैदराबाद हाउस में दक्षिण कोरिया के राष्ट्रपति ली जे म्युंग के साथ द्विपक्षीय बैठक की। बैठक के बाद दोनों देशों के नेताओं ने अपना संबोधन दिया। दोनों देशों के बीच एमओयू एक्सचेंज हुए। इसके साथ ही दोनों देशों ने व्यापार, संस्कृति और तकनीक के क्षेत्र में सहयोग बढ़ाने पर जोर दिया। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि भारत और दक्षिण कोरिया तकनीक, ऊर्जा और उन्नत विनिर्माण क्षेत्रों में 'चिप्स से शिप्स' तक मजबूत इकोसिस्टम बनाने पर काम कर रहे हैं। इसके तहत दोनों देशों ने महत्वपूर्ण तकनीकों और सप्लाई चेन पर केंद्रित एक 'इकोनॉमिक सिक्योरिटी डायलॉग' को संस्थागत रूप देने पर भी सहमति जताई।

एक साल में अपग्रेड होगा ट्रेड समझौता

पीएम मोदी ने कहा, अगले एक वर्ष के अंदर हम भारत-कोरिया ट्रेड समझौते को अपग्रेड भी करेंगे। एआई, सेमीकंडक्टर और आईटी में साझेदारी और गहरा करने के लिए हम इंडिया-कोरिया डिजिटल ब्रिज लॉन्च कर रहे हैं। शिप बिल्डिंग, सस्टेनिबिलिटी, स्टील जैसे क्षेत्रों में एमओयू कर रहे हैं। कल्चर और क्रिएटिविटी के क्षेत्र में आपसी सहयोग से फिल्म, एनीमेशन और गेमिंग में भी नए आयाम स्थापित करेंगे। आज का बिजनेस फोरम इन अवसरों को ठोस परिणामों में बदलने का मंच बनेगा।

द्विपक्षीय व्यापार बढ़ाने पर जोर

पीएम मोदी ने कहा कि भारत और कोरिया का द्विपक्षीय व्यापार आज 27 अरब डॉलर तक पहुंच चुका है। साल 2030 तक इसे 50 अरब डॉलर तक पहुंचाने के लिए हमने आज कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए हैं। दोनों देशों के बीच फाइनेंशियल फ्लो को सुगम बनाने के लिए भारत-कोरिया फाइनेंशियल फोरम की शुरुआत की गई है। पीएम मोदी ने कहा कि सहयोग को बल देने के लिए हमने एक इंडस्ट्रियल कॉपरेशन कमेटी का गठन किया है। क्रिटिकल टेक्नोलॉजी और सप्लाई चेन में सहयोग बढ़ाने के लिए इकोनॉमिक सिक्योरिटी डायलॉग शुरू कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि हम कोरिया की कंपनी खासकर एसएमई की भारत में एंट्री सहज करने के लिए कोरियन इंडस्ट्रियल टाउनशिप भी स्थापित करेंगे।

इधर-उधर घूमता रहा विमान यात्रियों की अटकी रही सांसें

- 4 घंटे तक मुश्किल में रही जान, फ्लाई-91 की फ्लाइट में आई खराबी

बेंगलुरु (एजेंसी)। हैदराबाद से हुबली जा रही फ्लाई-91 की एक फ्लाइट को तकनीकी खराबी आने के बाद रास्ता बदलकर बेंगलुरु ले जाना पड़ा। इस दौरान विमान करीब चार घंटे तक आसमान में ही चक्कर लगाता रहा। इससे यात्रियों में डर और घबराहट का माहौल बन गया। इस पूरी घटना का एक वीडियो भी सामने आया है। वीडियो में कई यात्री घबराए हुए नजर आ रहे हैं। कुछ यात्री प्रार्थना करते हुए दिखाई दे रहे हैं तो कुछ भी रहे हैं। इस दौरान फ्लाइट उतरने से पहले अलग-अलग इलाकों के ऊपर चक्कर लगाती रही। जानकारी के अनुसार, फ्लाइट रविवार दोपहर लगभग 3 बजे राजीव गांधी इंटरनेशनल एयरपोर्ट से रवाना हुई थी। इस फ्लाइट को शाम साढ़े चार बजे हुबली पहुंचना था।

प्यार के लिए घर से भागी रुखसार, महादेवगढ़ मंदिर आकर बनी राधिका और प्रेमी अजय से रचाई शादी

खंडवा (नप्र)। मध्य प्रदेश के खंडवा स्थित महादेवगढ़ मंदिर एक बार फिर चर्चा में है, जहां अक्षय तृतीया के अवसर पर एक प्रेमी युगल ने सामाजिक बंधनों को तोड़ते हुए विवाह रचाया। राजस्थान की रहने वाली युवती रुखसार ने भोपाल के युवक अजय के साथ विधि-विधान से सात फेरे लिए। विवाह से पहले मंदिर परिसर में युवती की 'घर वापसी' करवाई गई, जिसके बाद उसका नाम बदलकर राधिका रखा गया।

विधि-विधान के साथ हुआ धार्मिक अनुष्ठान- महादेवगढ़ मंदिर में पंडितों की उपस्थिति में पूरे वैदिक रीति-रिवाज के साथ विवाह संपन्न हुआ। पूजा-अर्चना, हवन और मंत्रोच्चार के बीच युवती के माथे पर तिलक लगाया गया। इस दौरान मंदिर परिसर में 'जय श्रीराम' और 'बजरंग बली' के जयकारे भी लगाए गए। मंदिर प्रबंधन ने पूरे आयोजन को धार्मिक परंपराओं के अनुसार सम्पन्न कराया।

युवक-युवती ने स्वयं संपर्क कर विवाह की इच्छा जताई थी। इसके बाद जिला प्रशासन को सूचना देकर सभी

औपचारिकताओं के साथ यह कार्यक्रम आयोजित किया गया।

रुखसार से बनी राधिका- विवाह से पहले युवती की घर वापसी करवाई गई, जिसके तहत उसका नाम रुखसार से बदलकर राधिका रखा गया। युवती ने बताया कि उसे शुरू से ही सनातन धर्म के प्रति झुकाव था और वह अपनी इच्छा से इस मार्ग पर चली है। उसने कहा कि अक्षय तृतीया के दिन किए गए कार्य को शुभ और स्थायी माना जाता है, इसलिए इसी दिन विवाह का निर्णय लिया गया।

नए जीवन की शुरुआत- मंदिर प्रबंधन ने विवाह सम्पन्न होने के बाद नवविवाहित जोड़े को आशीर्वाद दिया और उनके सुखद वैवाहिक जीवन की कामना की। तमाम विवादों और विरोध के बीच इस जोड़े ने अपने रिश्ते को एक नई पहचान दे दी है।

परिवार की मर्जी के खिलाफ शादी

युवती ने स्पष्ट किया कि यह विवाह उसने अपने परिवार की मर्जी के खिलाफ किया है। इस समारोह में उसके परिवार का कोई भी सदस्य शामिल नहीं हुआ। वहीं, युवक अजय भोपाल का निवासी बताया जा रहा है जो राजस्थान के एक कंपनी में कार्यरत है। वहीं, दोनों की मुलाकात हुई और धीरे-धीरे यह संबंध प्रेम में बदल गया।

सुरक्षा की मांग, परिवार से मिल रही धमकियां

विवाह के बाद युवक अजय ने दावा किया कि युवती के परिवार की ओर से उन्हें धमकियां मिल रही हैं। उसने प्रशासन से सुरक्षा प्रदान करने की मांग की है, ताकि वे अपने वैवाहिक जीवन को सुरक्षित तरीके से शुरू कर सकें। स्थानीय स्तर पर इस घटना को लेकर चर्चा का माहौल है, वहीं प्रशासन की भूमिका भी महत्वपूर्ण मानी जा रही है, खासकर सुरक्षा और कानून व्यवस्था को लेकर।

अब भारत में अपने युद्धपोत तैनात करेगा रूस

- 3000 सैनिकों की भी तैनाती हो गई न्यू डिफेंस डील

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत और रूस के बीच नया सैन्य समझौता लागू हो गया है। इसके साथ ही अब दोनों देश एक-दूसरे की जमीन पर सैनिक, युद्धपोत और सैन्य विमान तैनात कर सकेंगे। रिपोर्ट के मुताबिक इस डिफेंस डील के तहत भारत और रूस एक-दूसरे के देश में एक समय में अधिकतम 3000 सैनिक, 5 युद्धपोत और 10 सैन्य विमान तैनात कर सकते हैं। इसे दोनों देशों के संबंधों में एक नया अध्याय माना जा रहा है। रूस के आधिकारिक कानूनी पोर्टल के मुताबिक यह नया समझौता बीते 12 जनवरी से लागू हो गया है। इससे पहले रूस में इस समझौते को मंजूरी देने वाले एक कानून को दिसंबर 2025 में पारित कराया गया था। अब

यह डिफेंस डील 5 साल तक लागू रहेगी, जिसे आपसी सहमति से आगे 5 साल और बढ़ाया जा सकता है। फर्स्टपोस्ट ने अपनी एक रिपोर्ट में बताया कि इस समझौते के तहत दोनों देश एक-दूसरे के सैन्य ठिकानों, जैसे एयरबेस और पोर्ट का इस्तेमाल कर सकेंगे। जहां एक तरफ भारत को रूस के एयरबेस, यहां तक कि आर्कटिक क्षेत्र में मौजूद ठिकानों तक भी पहुंच मिलेगी, वहीं रूस को भारत के सैन्य ठिकानों का उपयोग करने की इजाजत होगी।

संयुक्त सैन्य अभ्यास, ट्रेनिंग और मानवीय मिशन शामिल

भारत और रूस के इस रक्षा समझौते में संयुक्त सैन्य अभ्यास, ट्रेनिंग और मानवीय मिशन भी शामिल हैं। साथ ही इसमें यह भी जिक्र है कि सैन्य कर्मियों और उपकरणों की तैनाती कैसे होगी और उन्हें किस तरह की लॉजिस्टिक मदद दी जाएगी। युद्धपोतों के लिए इसमें बंदरगाहों तक पहुंच, मरम्मत की सुविधा, पानी, खाना, तकनीकी संसाधन जैसी जरूरी चीजें शामिल हैं। वहीं, सैन्य विमानों के लिए एयर ट्रैफिक कंट्रोल, नेविगेशन सिस्टम और जरूरी उड़ान से जुड़ी जानकारी दी जाएगी। इस समझौते का मकसद दोनों देशों के बीच सैन्य सहयोग को और मजबूत करना है। खासतौर पर भारत के पास जो रूसी हथियार और सैन्य उपकरण हैं, उनके रखरखाव और इस्तेमाल में यह समझौता मदद करेगा। इसके अलावा इससे लंबी ओवरसीज डिप्लॉयमेंट को समझने में भी मदद मिलेगी।

टीसीएस के बाद एक और कांड से हिल गया महाराष्ट्र

- अब नागपुर में एनजीओ अध्यक्ष रियाज फाजिल पर लगा यौनशोषण का आरोप

नागपुर (एजेंसी)। महाराष्ट्र के नागपुर में जरूरतमंद बच्चों के लिए काम करने का दावा करने वाले एनजीओ के अध्यक्ष पर यौन शोषण के आरोप लगे हैं। पुलिस ने इस मामले में केस दर्ज कर एनजीओ के अध्यक्ष रियाज फाजिल काजी को गिरफ्तार कर लिया है। काजी के खिलाफ कई युवा महिलाओं ने कथित यौन शोषण, धार्मिक दबाव, बदनामी और साइबर स्टॉकिंग के आरोप लगाए हैं। इस मामले में शनिवार रात करीब 10 बजे मनकापुर पुलिस स्टेशन में एफआईआर दर्ज की गई थी। पुलिस ने इस मामले में विभिन्न धाराओं के तहत मामला दर्ज किया है। इनमें महिला की गरिमा को ठेस

पहुंचाने, अश्लील हरकतें करने, धार्मिक भावनाएं आहत करने, मानहानि और साइबर अपराध से जुड़ी धाराएं शामिल हैं। एनजीओ की 23 वर्षीय एचआर इस मामले मुख्य शिकायतकर्ता है। वो सितंबर 2023 से एनजीओ में एडमिनिस्ट्रेशन और एचआर हेड के रूप में कार्यरत थी।

मजदूर बन गए चोर, 15 बैटरियां जब्त

इंदौर। टाइल्स लगाने वाले दो मजदूर जल्दी पैसा कमाने के लिये चोर बन गए। उनके कब्जे से ई रिक्शा में प्रयुक्त होने वाली 15 बैटरियां जब्त की गई हैं। खजराना थाने में शनिवार को फरियादी संदीप पिता कांतिलाल सोलंकी निवासी भवानी नगर बाणगंगा ने शिकायत दर्ज कराई थी। बताया गया कि 15 अप्रैल की शाम 7 बजे मैं अपनी ई-रिक्शा नाहरशाह वली दरगाह ग्राउंड पर खड़ी कर अपने दोस्त से मिलने चला गया था। जब दोस्त से मिलकर वापस नाहर शाह वली ग्राउंड पर लौटा तो रिक्शा की बैटरी और अन्य सामान गायब थे। सामान को लेकर आसपास के लोगों से पूछताछ की, लेकिन कुछ पता नहीं चला, इसके बाद थाने पहुंचा। पुलिस ने फरियादी की रिपोर्ट पर अज्ञात आरोपियों के खिलाफ धारा 303(2) का केस दर्ज किया था। टीआई मनोज सेंधव ने घटना को गंभीरता से लेते हुए आरोपियों को पकड़ने टीम गठित की। इसी बीच मुखबिर से सूचना मिली की बैटरी चुराने वाले दो युवक स्टार चौराहे के पास सर्विस रोड पर खड़े हैं। यहां से अल्ताफ पिता रफीक खान निवासी ममता कॉलोनी खजराना तथा साबिर पिता अब्दुल शकूर निवासी सिल्वर कॉलोनी खजराना को पकड़ा। आरोपियों ने वाहन और मोबाइल चोरी करना भी कबूला।

कृषि कॉलेज परिसर में सूखी घास जली

इंदौर। कृषि महाविद्यालय परिसर में रविवार दोपहर करीब 12 बजे अचानक सूखी घास में आग लगने से अफरा-तफरी मच गई। अज्ञात कारणों से लगी आग ने देखते ही देखते मैदान के बड़े हिस्से को अपनी चपेट में ले लिया। आग की लपटें बढ़ती देख आसपास के लोगों में हड़कंप मच गया। स्थानीय निवासी एवं अधिवक्ता कमल गौड़ ने तुरंत मौके पर पहुंचकर पुलिस और फायर ब्रिगेड को सूचना दी। सूचना मिलते ही दमकल की टीम मौके पर पहुंची और आग बुझाने का प्रयास शुरू किया। करीब पौन घंटे की कड़ी मशक्कत के बाद फायर ब्रिगेड ने आग पर काबू पाया। राहत की बात यह रही कि रविवार होने के कारण कॉलेज परिसर में स्टाफ मौजूद नहीं था, जिससे किसी प्रकार की जनहानि नहीं हुई। फिलहाल आग लगने के कारणों की जांच की जा रही है।

पड़ोसियों में विवाद, झगड़े का वीडियो वायरल

इंदौर। चंदन नगर थाना क्षेत्र के राजनगर में पड़ोसियों के बीच मामूली विवाद ने अचानक हिंसक रूप ले लिया। दो परिवारों के बीच शुरू हुआ झगड़ा देखते ही देखते मारपीट और पथराव में बदल गया। घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल होने के बाद पुलिस हरकत में आई और दोनों पक्षों के खिलाफ प्रकरण दर्ज कर कार्रवाई शुरू कर दी गई। जानकारी के मुताबिक राजनगर कॉलोनी में आमने-सामने रहने वाले अंकित पगारे और कुलदीप के परिवारों के बीच किसी बात को लेकर विवाद हुआ था। पुलिस के अनुसार, घटना के समय दोनों पक्षों के लोग नशे की हालत में थे, जिससे कहासुनी ने जल्द ही उग्र रूप ले लिया। दोनों तरफ से जमकर गाली-गलौज, हाथापाई और एक-दूसरे के घरों पर पथराव किया गया, जिससे इलाके में कुछ देर के लिए अफरा-तफरी और तनाव का माहौल बन गया। वीडियो सामने आने के बाद पुलिस ने तत्परता दिखाते हुए आरोपियों की पहचान की और कुछ लोगों को गिरफ्तार कर लिया है, जबकि अन्य की तलाश जारी है। एडिशनल डीसीपी अमरेंद्र सिंह ने बताया कि मामले में सख्त कार्रवाई की जा रही है।

लेनदेन विवाद में युवती को पीटा

इंदौर। नौलखा चौराहे के पास युवती के साथ सरेआम मारपीट का मामला सामने आया है। घटना का वीडियो वायरल होने के बाद पुलिस ने तुरंत कार्रवाई करते हुए आरोपी युवक को गिरफ्तार कर लिया है। भंवरकुआं पुलिस के अनुसार, मयूर नगर 28 वर्षीय सीमा पति रणजीत चौहान ने 19 अप्रैल को शिकायत दर्ज कराते हुए बताया कि पैसों के लेनदेन को लेकर आरोपी राहुल से विवाद हुआ था। इसके बाद उसने गाली-गलौज कर सड़क पर पीटा और घसीटा। घटना के दौरान मौके पर मौजूद लोगों ने हस्तक्षेप कर युवती को बचाया और पुलिस को सूचना दी। पुलिस ने शिकायत के आधार पर आरोपी के खिलाफ केस दर्ज है। उधर, मामले की गंभीरता को देखते हुए थाना प्रभारी संतोष दूधी ने टीम बनाकर आरोपी की तलाश शुरू की। मोबाइल लोकेशन ट्रेस कर उसे पकड़ लिया गया। पूछताछ में आरोपी ने अपनी गलती स्वीकार करते हुए माफी मांगी।

5 माह की बच्ची पलंग से गिरी, मौत

इंदौर। रावजी बाजार क्षेत्र में दुखद घटना सामने आई है, जहां पांच महीने की मासूम बच्ची की पलंग से गिरने के बाद मौत हो गई। हादसे के समय उसकी मां घर में खाना बना रही थी। बच्ची बिस्तर पर खेलते-खेलते करवट लेते हुए नीचे गिर गई, जिससे उसके सिर में गंभीर चोट आई। घटना 14 अप्रैल की बताई जा रही है। परिजन तुरंत बच्ची को अस्पताल लेकर पहुंचे, जहां उसे एमवाय अस्पताल में भर्ती कराया गया। करीब पांच दिन तक इलाज चलने के बाद शनिवार रात बच्ची ने दम तोड़ दिया। मृत बच्ची आयत (5) पिता अबरार शेख है। परिवार आर्थिक रूप से कमजोर है और किराए के मकान में रहता है। पिता मजदूरी कर परिवार का पालन-पोषण करते हैं। परिवार में दो अन्य बच्चे भी हैं। बच्ची की मौत के बाद परिजन पोस्टमार्ट्म कराने के पक्ष में नहीं थे। उन्होंने डॉक्टरों से इस बारे में चर्चा की, लेकिन अस्पताल प्रबंधन ने पुलिस से संपर्क करने की सलाह दी। फिलहाल पुलिस ने मर्ग कायम कर मामले की जांच शुरू कर दी है।

कारीगर पर हमला, युवक से मोबाइल छीना

इंदौर। शनिवार रात अपराध की दो अलग-अलग घटनाओं ने इलाके में दहशत फैला दी। नंदबाग क्षेत्र में फर्नीचर कारीगर के साथ लूटपाट करते हुए बदमाशों ने उस पर चाकू से हमला कर दिया, वहीं तिलक नगर इलाके में एक युवक से मोबाइल झपट लिया गया। मल्हारगंज थाना क्षेत्र के नंदबाग की है, जहां 34 वर्षीय धर्मेंद्र शर्मा रात 10 बजे कचरा प्लांट के पास से गुजर रहे थे। इसी दौरान उनकी बाइक असंतुलित हो गई। तभी 4-5 बदमाश मदद के बहाने उनके पास पहुंचे और मोबाइल छीनने की कोशिश करने लगे। विरोध करने पर आरोपियों ने चाकू मारकर उन्हें घायल कर दिया और जेब में रखे 8 हजार रुपए लेकर फरार हो गए। घटना के बाद धर्मेंद्र काफी देर तक मौके पर घायल पड़े रहे। होश आने पर वे खुद अनमोल नर्सिंग होम पहुंचे और परिजनों को सूचना दी। हालत गंभीर होने पर उन्हें एमवाय अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां उनका इलाज जारी है। पुलिस के अनुसार मामला संदिग्ध भी लग रहा है और सभी पहलुओं की जांच की जा रही है। दूसरी घटना तिलक नगर के स्कीम नंबर 140 में हुई, जहां कमल भंडारी नामक युवक सड़क किनारे खड़े होकर फोन पर बात कर रहे थे। तभी बाइक सवार नकाबपोश बदमाश आया और उनका मोबाइल छीनकर फरार हो गया। पुलिस ने दोनों मामलों में शिकायत दर्ज कर ली है और आरोपियों की तलाश जारी है।

खजराना में पकड़ाए 5 सटोरिए

इंदौर। विजयनगर पुलिस ने शनिवार को पांच सटोरियों को पकड़ा था। इसके बाद रविवार को खजराना पुलिस ने पांच सटोरिए पकड़ लिए। ये सटोरिए स्टार चौराहे के पास ग्रीन बेल्ट में आईपीएल क्रिकेट मैच का सट्टा लगा रहे थे। मामले में पुलिस ने वीरसिंह सांवलिया, दिनेश राठौर, अंगद पटेल, रोहित परमार और सचिन सोलंकी सभी निवासी खजराना को गिरफ्तार किया है।

अतिक्रमण पर बड़ी कार्रवाई, खजराना व किला मैदान रोड में बुलडोजर चला

विरोध के बीच 22 से अधिक निर्माण ध्वस्त, कई परिवारों को मोहलत

इंदौर। सोमवार को जिला प्रशासन और नगर निगम ने अतिक्रमण के खिलाफ बड़ा अभियान चलाते हुए खजराना के ताज नगर और किला मैदान रोड पर व्यापक कार्रवाई की। इस दौरान कुल मिलाकर 40 हजार स्क्वेयर फीट से अधिक सरकारी जमीन को अतिक्रमण से मुक्त कराया गया। कार्रवाई के दौरान विरोध, हंगामा और अफरा-तफरी का माहौल भी देखने को मिला, लेकिन प्रशासन ने सख्ती बरतते हुए अभियान जारी रखा। खजराना क्षेत्र के ताज नगर में सुबह-सुबह शुरू हुई कार्रवाई में करीब 15 पक्के मकानों को बुलडोजर से ढहा दिया गया। इस दौरान लगभग 30 हजार स्क्वेयर फीट जमीन खाली कराई गई। जैसे ही तोड़फोड़ शुरू हुई, बड़ी संख्या में स्थानीय लोग, खासकर महिलाएं, सड़क पर उतर आईं और कार्रवाई का विरोध करने लगीं। स्थिति को संभालने के लिए महिला पुलिस और नगर निगम की महिला टीम

को आगे आना पड़ा। अधिकारियों के अनुसार, इन मकानों को पहले कई बार नोटिस दिए जा चुके थे, लेकिन इसके बावजूद अवैध निर्माण नहीं रोका गया। प्रशासन ने संकेत दिए हैं कि क्षेत्र में चिन्हित अन्य 30 से 40 अवैध निर्माणों पर भी जल्द कार्रवाई की जाएगी, हालांकि कुछ को अस्थायी मोहलत दी गई है।

किला मैदान रोड पर कार्रवाई

किला मैदान रोड पर भी प्रशासन ने कार्रवाई करते हुए लगभग 14 हजार स्क्वेयर फीट जमीन से अतिक्रमण हटाया। यह जमीन पहले ही राज्य सरकार द्वारा नीलाम की जा चुकी थी, लेकिन विकास कार्य शुरू होने से पहले ही यहां कब्जों का मामला सामने आया। जांच में 9 लोगों द्वारा अतिक्रमण की पुष्टि हुई थी। प्रशासन ने सभी को नोटिस जारी किए थे, जिनमें से 2 लोगों ने न्यायालय से स्थगन आदेश प्राप्त कर लिया। एसडीएम निधि वर्मा के नेतृत्व में हुई इस कार्रवाई में 7 अवैध कब्जों को ध्वस्त किया गया। वहीं, दो परिवारों ने अक्षय तृतीया का हवाला देते हुए समय की मांग की, जिस पर प्रशासन ने मानवीय दृष्टिकोण अपनाते हुए उन्हें 24 घंटे की मोहलत दी। अधिकारियों का कहना है कि निर्धारित समय के बाद शेष अतिक्रमण भी हटा दिए जाएंगे। दोनों स्थानों पर चली कार्रवाई के दौरान भारी पुलिस बल तैनात रहा और जेसीबी व अन्य मशीनों की मदद से अवैध निर्माणों को हटाया गया। प्रशासन का स्पष्ट कहना है कि सरकारी जमीन पर कब्जा किसी भी स्थिति में बर्दाश्त नहीं किया जाएगा और शहर में अतिक्रमण के खिलाफ यह अभियान लगातार जारी रहेगा।

भागीरथपुरा चौकी हिरासत में मौत पर चौकी प्रभारी, सिपाही निलंबित

पूछताछ के दौरान संदिग्ध हालात में 45 वर्षीय व्यक्ति की मौत

इंदौर। भागीरथपुरा पुलिस चौकी में हिरासत के दौरान 45 वर्षीय रामजी झा की रविवार दोपहर मौत हो गई। वह शीतल नगर का निवासी था और उसे एक चोरी की मोटरसाइकिल के साथ पकड़ा गया था। पुलिस का कहना है कि पूछताछ के बीच वह पानी पीने के बहाने शौचालय गया, जहां रखे फिनाइल का सेवन कर लिया। तबीयत बिगड़ने पर उसे जिला अस्पताल ले जाया गया, जहां से एमवाय अस्पताल भेजा गया, लेकिन डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। घटना के बाद पुलिस महकमे में हलचल मच गई। मामले की गंभीरता को देखते हुए चौकी प्रभारी उपनिरीक्षक संजय धुर्वे और सिपाही योगेंद्र कौरव को तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया गया है। साथ ही पूरे मामले की न्यायिक जांच के आदेश दिए गए हैं। अधिकारियों का कहना है कि जांच में अन्य किसी की भूमिका सामने आने पर उनके खिलाफ भी सख्त कदम उठाए जाएंगे।

पहले भी हुई ऐसे मौत

इंदौर में पुलिस हिरासत में मौत का यह पहला मामला नहीं है। इससे पहले भी कई घटनाएं सामने आ चुकी हैं। अप्रैल 2019 में वाहन चोरी के संदेह में पकड़े गए 22 वर्षीय संजू की पूछताछ के दौरान मौत हो गई थी, जिसमें थाना प्रभारी समेत कई कर्मियों पर कार्रवाई हुई थी। सितंबर 2022 में मानपुर थाने में लूट के आरोपी अर्जुन की हिरासत में मौत हुई थी, जिसमें कई पुलिसकर्मी निलंबित हुए थे। दिसंबर 2015 में एमआईजी थाने में एक युवक ने शौचालय में फांसी लगा ली थी, जिसके बाद संबंधित पुलिसकर्मियों पर मामला दर्ज किया गया था। हाल ही में राजेंद्र नगर थाना क्षेत्र में एक उपनिरीक्षक को भी प्रताड़ना के आरोप में निलंबित किया गया था। प्रशासन ने पूरे घटनाक्रम की मजिस्ट्रेटी जांच के लिए पत्र भेज दिया है। जांच पूरी होने के बाद ही यह स्पष्ट हो सकेगा कि रामजी की मौत किन परिस्थितियों में हुई और इसमें किसकी जिम्मेदारी तय होगी।

मृतक पर पहले से केस दर्ज

बाणगंगा थाना प्रभारी सियाराम गुर्जर के अनुसार, रामजी के खिलाफ पहले से तीन मामले दर्ज थे और उसका पारिवारिक विवाद भी चल रहा था। पुलिस का दावा है कि वह बरामद मोटरसाइकिल के बारे में जानकारी नहीं दे रहा था, जिसके चलते उसे पूछताछ के लिए उसके घर भी ले जाया गया था। दूसरी ओर, मृतक के परिजनों ने पुलिस की कार्यप्रणाली पर सवाल खड़े किए हैं। उनका कहना है कि चौकी से जिला अस्पताल की दूरी लगभग 7.1 किलोमीटर है, जबकि आसपास कई निजी अस्पताल मौजूद हैं। ऐसे में उसे दूर ले जाने के कारण इलाज में देरी हुई, जिससे उसकी जान जा सकती थी। परिजनों का मानना है कि यदि समय पर नजदीकी अस्पताल में उपचार मिलता, तो परिणाम अलग हो सकता था।

एबी रोड बीआरटीएस से मुक्त किया गया, बस स्टॉप और रेलिंग हटाए गए

बारिश से पहले जलभराव रोकने के लिए सफाई तेज

इंदौर। एबी रोड को बीआरटीएस कॉरिडोर से पूरी तरह मुक्त कर दिया गया है। नगर निगम ने 11.5 किलोमीटर लंबे मार्ग से 17 बस स्टॉप और दोनों ओर लगी रेलिंग हटा दी है। रविवार को नगर निगम आयुक्त क्षितिज सिंघल ने अधिकारियों के साथ स्थल का निरीक्षण कर व्यवस्थाओं का जायजा लिया। चिड़ियाघर के पास सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए लगभग 50 मीटर क्षेत्र में रेलिंग फिलहाल नहीं हटाई गई है। वहीं दो बस स्टॉप का मलबा अभी हटाया जाना बाकी है, क्योंकि वह एलिवेटेड कॉरिडोर की घेराबंदी के भीतर है। बाकी हिस्सों में काम पूरा कर लिया गया है और जहां-जहां ढांचा हटाया गया है, वहां समानांतर रूप से डामर से मरम्मत भी कर दी गई है।

बारिश से पहले सफाई हो – निरीक्षण के दौरान आयुक्त ने कई स्थानों पर सुरक्षा के लिहाज से अतिरिक्त घेराबंदी करने और गहन सफाई के निर्देश दिए। उन्होंने विजय नगर से एलआईजी क्षेत्र तक स्टॉर्म वाटर लाइन की स्थिति देखी और हर चेंबर पर इनलेट चेंबर बनाने के साथ गहराई से सफाई सुनिश्चित करने को कहा। जांच में कुछ स्थानों पर पाइपों के बीच सीधा संपर्क न होने से रुकावट मिली, जिसे तुरंत दूर करने के निर्देश दिए गए। साथ ही स्पष्ट कहा गया कि बारिश शुरू होने से पहले सभी चेंबर और पाइपलाइन पूरी तरह साफ कर दी जाएं, ताकि एबी रोड पर जलभराव की समस्या न बने। इस दौरान अपर आयुक्त अभय राजनगांवकर, सहायक यंत्री शैलेंद्र मिश्रा सहित अन्य अधिकारी भी मौजूद रहे।

विभाग पर बीज महंगे बेचने का आरोप

इंदौर। कृषि विभाग की कार्यप्रणाली एक बार फिर सवालों के घेरे में है। इंदौर संभाग के किसानों ने आरोप लगाया है कि मूंगफली बीज, जिसकी कीमत 1600 सौ निर्धारित थी, उसे 5600 सौ तक वसूला गया। इतना ही नहीं, किसानों पर अन्य कृषि सामग्री भी जबरन थोपे जाने के आरोप लगे हैं, जिससे पूरे मामले में कमीशनखोरी की आशंका गहराती जा रही है। भोपाल में शिकायत किए जाने के बाद मामले की जांच के लिए समिति गठित कर दी गई है। यह समिति बीज वितरण और योजना क्रियान्वयन में हुई अनियमितताओं की पड़ताल कर रही है। विभाग जहां कुछ जिलों में बीज निशुल्क वितरण का दावा कर रहा है, वहीं जमीनी स्थिति इससे उलट दिखाई दे रही है। सांवेर के बाद महू क्षेत्र में 250 से अधिक किसानों को कथित रूप से घटिया गुणवत्ता का बीज मिला, जिससे अंकुरण तक प्रभावित हुआ और उत्पादन की उम्मीद खत्म हो गई।

युवक ने खुदकुशी की, पत्नी के संबंधों को लेकर हुआ विवाद

पत्नी ने मोबाइल से फोटो और मैसेज डिलीट कर दिए

इंदौर। लसूडिया क्षेत्र में युवक ने रविवार को अपने घर में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। घटना का पता तब चला जब उसकी बेटी ने उसे फंदे पर लटका देखा। पुलिस के अनुसार मृतक की पहचान कृष्णा भालेराव (36) पुत्र बलिराम भालेराव, निवासी बापू गांधी नगर के रूप में हुई है। पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है। परिजनों के मुताबिक, मृतक की पत्नी रीना की दोस्ती खरगोन के खामखेड़ा निवासी रविंद्र मानकर से थी। इस बात को लेकर दंपति के बीच लंबे समय से विवाद चल रहा था। बताया गया कि रविंद्र द्वारा कृष्णा के मोबाइल पर फोटो और मैसेज भेजे जाते थे, जिससे घर में तनाव बना रहता था। 16 अप्रैल को भी इसी बात को लेकर विवाद हुआ, जिसमें पत्नी ने मोबाइल से फोटो और मैसेज डिलीट कर दिए। परिजनों ने बताया कि कुछ समय पहले खरगोन में विवाद के दौरान कृष्णा के साथ मारपीट की गई थी और उस पर मामला भी दर्ज कराया गया था।

15 साल पहले हुई थी शादी– कृष्णा और रीना की शादी को करीब 15 साल हो चुके थे। उनके एक बेटा और एक बेटी है। कृष्णा पेंटिंग का काम करता था। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। मामले के सभी पहलुओं की जांच की जा रही है।

पुलिस अभियान में 389 बदमाशों पर कार्रवाई; 176 शराबी चालक पकड़े

ड्रोन पेट्रोलिंग, वारंट तामील, पैदल गश्त से अपराधियों में हड़कंप

इंदौर। शहर में अपराध और असामाजिक गतिविधियों पर लगाम कसने के लिए इंदौर पुलिस कमिश्नरेट ने शनिवार-रविवार की दरमियानी रात बड़ा अभियान चलाया। सरप्राइज चेकिंग और सघन पेट्रोलिंग के दौरान 389 गुंडे-बदमाशों व असामाजिक तत्वों पर वैधानिक कार्रवाई की गई, जिससे शहरभर में हड़कंप मच गया। पुलिस कमिश्नर संतोष कुमार सिंह के निर्देश और एडिशनल कमिश्नर (क्राइम) आरके सिंह के मार्गदर्शन में चारों जोन के डीसीपी के नेतृत्व में यह कार्रवाई देर रात तक चली। अभियान के दौरान 140 से अधिक वारंट तामील किए गए, जिनमें 27 स्थाई, 40 गिरफ्तारी और 73 जमानती वारंट शामिल हैं। नशे में वाहन चलाने वालों पर भी पुलिस ने कड़ा प्रहार किया। 176 शराबी चालकों के खिलाफ मोटर व्हीकल एक्ट की धारा 185 के तहत कार्रवाई करते हुए उनके वाहन जब्त किए गए। इसके अलावा

सार्वजनिक स्थानों पर शराब पीते 3 और गांजा सेवन करते 1 आरोपी को गिरफ्तार किया गया। एक बदमाश को अवैध चाकू के साथ पकड़ा गया। पुलिस ने आदतन अपराधियों पर भी शिकंजा कसते हुए 68 बदमाशों के खिलाफ प्रतिबंधात्मक कार्रवाई की। हॉटस्पॉट और शैडो एरिया में ड्रोन पेट्रोलिंग के साथ निगरानी बढ़ाई गई, वहीं संवेदनशील क्षेत्रों में पैदल गश्त कर संदिग्धों पर नजर रखी गई। पुलिस अधिकारियों ने पकड़े गए बदमाशों को सख्त हिदायत देते हुए डोजियर भरवाए। इंदौर पुलिस ने साफ किया है कि अपराधियों और लापरवाह चालकों के खिलाफ ऐसी कार्रवाई आगे भी लगातार जारी रहेगी।

एसीपी के झगड़े में दरवाजा तोड़कर गिरफ्तारी में पांच पुलिसकर्मी सस्पेंड

निजी लेनदेन विवाद में पुलिस सिस्टम के इस्तेमाल का आरोप

इंदौर। लसूड़िया थाना क्षेत्र में आरोपी के घर का दरवाजा तोड़कर गिरफ्तारी करने के मामले में बड़ा एक्शन हुआ। शिकायत की जांच के बाद डीसीपी कुमार कार्तिक ने पांच पुलिसकर्मियों को निलंबित कर दिया, जबकि पूरे घटनाक्रम में पूर्व एसीपी राकेश गुप्ता की भूमिका को लेकर भी सवाल खड़े हो गए। जानकारी के मुताबिक, स्कीम नंबर 114 निवासी गौरव जैन और विजयनगर के पूर्व एसीपी राकेश गुप्ता के बीच लेनदेन का विवाद चल रहा था। एसीपी ने गौरव को उधार रकम दी थी, जिसके एवज में चेक लिए थे। कुछ दिन बाद एसीपी का ट्रांसफर ग्वालियर हो गया था। वहां पर उन्होंने चेक बाउंस होने के बाद गौरव पर केस दर्ज कर दिया था। जब गौरव को पकड़ा नहीं जा सका तो कोर्ट ने गिरफ्तारी वारंट जारी कर दिया था।

तामिली के लिए वारंट भेजा – इसी वारंट की तामील के लिए दस्तावेज लसूड़िया थाने भेजे गए। वारंट की कार्रवाई के दौरान पांचों पुलिसकर्मी आरोपी गौरव के घर पहुंचे। पुलिस के पहुंचने पर उसने अंदर से दरवाजा बंद कर लिया था। इसके बाद पुलिसकर्मी दरवाजा तोड़ा और घर में घुस गए। यहां से गौरव को गिरफ्तार कर निजी वाहन से ग्वालियर ले गए। इस दौरान 25 हजार रुपए रिश्वत लेने के आरोप भी लगाए गए।

पुलिस कमिश्नर को शिकायत– जमानत पर छूटने के बाद गौरव के कुछ दिन पहले इंदौर लौटे और पूरे मामले की शिकायत पुलिस आयुक्त और डीसीपी से की। शिकायत में अवैध तरीके से गिरफ्तारी, घर में जबरन घुसने और पुलिस कार्रवाई में नियमों के उल्लंघन की बात कही गई। मामले की जांच के बाद डीसीपी ने एसआई संजय बिश्नोई, प्रणीत भदौरिया, नीरज, रवींद्र और दीपेंद्र को निलंबित कर दिया। वहीं हवलदार राकेश शर्मा की भूमिका की अलग से जांच जारी है।

पूर्व एसीपी की भूमिका पर सवाल

मामले में सबसे बड़ा सवाल पूर्व एसीपी की भूमिका को लेकर उठ रहा है। आरोप है कि निजी लेनदेन के विवाद में पुलिस सिस्टम का इस्तेमाल कर कार्रवाई कराई गई। अब जांच इस बिंदु पर भी केंद्रित है कि क्या पुलिस प्रक्रिया का दुरुपयोग हुआ है।

ट्रांसफर के बाद भी नहीं हटे– कुछ दिन पहले संजय को तिलक नगर और प्रणीत को परदेशीपुरा थाने भेजने के आदेश हुए थे। लेकिन दो महीने बाद भी उन्हें रिलीव नहीं किया गया, जिससे वरिष्ठ अधिकारियों में नाराजगी थी। विश्नोई गंभीर मामलों और अंधेकत्ल सुलझाने में के लिए जाने जाते रहे हैं, जबकि प्रणीत खुफिया कार्य देख रहे थे। रविन्द्र कुशवाह क्राइम ब्रांच से हटकर लसूड़िया आए थे और दिनेश जाट भी खुफिया कार्य में लगे थे।

गंदगी पर सख्ती, लापरवाह दरोगा की सेवा खत्म, कई का वेतन कटा

निगम आयुक्त के बीआरटीएस और स्टॉर्म वाटर लाइन पर निर्देश

इंदौर। शहर में सफाई व्यवस्था को लेकर नगर निगम आयुक्त क्षितिज सिंघल ने सख्त रुख अपनाते हुए सोमवार को विभिन्न क्षेत्रों का औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान कई जगह गंदगी और कचरा मिलने पर जिम्मेदार अधिकारियों पर कार्रवाई की गई। जोन 11, वार्ड 54 में रेजिडेंसी पानी की टंकी और आकाशवाणी रोड के पास गंदगी पाए जाने पर क्षेत्रीय दरोगा सचिन विश्नार की सेवा समाप्त करने के निर्देश दिए गए, जबकि संबंधित सीएसआई को फटकार लगाई गई। इसी तरह जोन 18, वार्ड 64 के आईटी पार्क चौराहा और रंजीत कॉलेज रोड के आसपास

खाली प्लॉट में कचरा मिलने पर दरोगा पवन बाली का एक दिन का वेतन काटा गया। जोन 13, वार्ड 77 के तेजाजी नगर, रानी बाग और बिलावली तालाब रोड पर गंदगी मिलने पर दरोगा यश धौलपुरे का सात दिन का वेतन काटने के निर्देश दिए गए। इसके अलावा भोलाराम उस्ताद मार्ग और निहालपुर मुंडी क्षेत्र में सफाई संतोषजनक नहीं मिलने पर संबंधित दरोगाओं का एक-एक दिन का वेतन काटा गया। निगम आयुक्त ने अधिकारियों के साथ 11.30 किमी लंबे बीआरटीएस कॉरिडोर का भी निरीक्षण किया। यहां हटाए गए 17 बस स्टॉप और रेलिंग की स्थिति देखी गई। अधिकारियों को निर्देश दिए गए कि सभी स्टॉर्म वाटर लाइन और चैंबर की गहराई से सफाई की जाए, ताकि बारिश में जलभराव की स्थिति न बने। जहां-जहां अवरोध या क्रॉस कनेक्शन की कमी है, वहां तत्काल सुधार करने को कहा गया। आयुक्त ने स्पष्ट किया कि लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी और बारिश से पहले शहर की सफाई और ड्रेनेज व्यवस्था दुरुस्त करना प्राथमिकता है, ताकि नागरिकों को किसी भी प्रकार की परेशानी न हो।

संपादकीय

भीषण गर्मी में झुलसता मप्र

अप्रैल अभी आधा से ज्यादा ही बीता है, लेकिन सूरज का कोप जानलेवा होता जा रहा है। रतलाम जैसे जिलों में पारा 44 डिग्री तक जा पहुंचा है। बताया जा रहा है कि ये गर्म हवाएं राजस्थान की जगह विदर्भ से आ रही हैं। भोपाल, इंदौर, जबलपुर जैसे राज्य के बड़े शहर बुरी तरह तप रहे हैं। इसका सीधा असर जनजीवन पर पड़ा है। मौसम का यह मिजाज अजीब है। जहां ज्यादातर जिले आग में झुलस रहे हैं, वहीं छह जिलों में बारिश की चेतावनी मौसम विभाग ने दी है। इससे भोपाल जैसे शहरों में उमस और बढ़ गई है। साथ ही मौसम विभाग ने प्रदेश के नर्मदापुरम, छिंदवाड़ा, बालाघाट, छतरपुर, टीकमगढ़, झाबुआ, अलीराजपुर, धार, रतलाम, रायसेन, बैतूल, पांढुर्णा, मंडला, सिवनी, पन्ना और निवाड़ी में लू चलने की चेतावनी जारी की है। कई जगह लू के कारण लू लगने तथा उल्टी दस्त आदि के मरीजों की संख्या भी बढ़ने लगी है। उधर स्कूलों में यह नया सत्र शुरू होने और कुछ जगह परीक्षाओं का समय है। सबसे ज्यादा मुश्किल स्कूली बच्चों की है। लिहाजा कलेक्टरों ने कई जिलों में स्कूलों का समय बदल दिया है। प्रदेश की राजधानी भोपाल में स्कूलों का समय अब सुबह 7:30 से दोपहर 12 बजे तक कर दिया गया है। वहीं, नर्मदापुरम, ग्वालियर, बालाघाट, मैहर, रतलाम, छिंदवाड़ा, नरसिंहपुर, रायसेन, डिंडौरी, अनूपपुर और उमरिया में भी नई टाइमिंग तक ही स्कूल लगेंगे। ग्वालियर जिले में प्री प्राइमरी से लेकर 12वीं तक की सभी कक्षाएं दोपहर 12 बजे तक ही संचालित होंगी। शासन की ओर से पूर्व निर्धारित परीक्षा समेत अन्य आवश्यक कार्यक्रम यथावत रहेंगे। इस बीच मौसम विभाग ने गर्मी से बचने के लिए एडवायजरी जारी करते हुए कहा है कि लू से बचने के लिए वे दिनभर पर्याप्त पानी पिएं और शरीर को हाइड्रेट रखें। दोपहर के समय लंबे समय तक धूप में न रहें। हल्के वजन और रंग के सूती कपड़े पहनें। बच्चे और बुजुर्ग खासतौर पर ध्यान रखें। इस भयंकर गर्मी के कुछ जगह मौसम का मिजाज बदल रहा है। गर्मी के साथ साथ कुछ जिलों में ओला वृष्टि भी हुई। पहले मई को सर्वाधिक गर्म महीना समझा जाता था। अब अप्रैल में ही इतनी गर्मी पड़ जाती है कि मई में अपेक्षाकृत तुलनात्मक रूप से ठंडा लगने लगा है। जाहिर है कि पूरा मौसम चक्र ही बदल रहा है। मौसम विभाग का भी यही कहना है कि आजकल अप्रैल के दूसरे महीने में ज्यादा गर्मी पड़ती है। जबकि शिक्षण संस्थानों में छुट्टियां मई से शुरू होती हैं। समय आ गया है शिक्षण संस्थाओं और खासकर स्कूलों में छुट्टियों का क्रम कुछ बदला जाना चाहिए। अमूमन स्कूल अभी जुलाई में बारिश शुरू होते ही खुलने हैं। इसकी जगह छुट्टियां अप्रैल से मई तक रखकर जून में नया सत्र शुरू करने के बारे में गंभीरता से विचार किया जाना चाहिए। वैसे मौसम का यह बदलाव वैश्विक है। धरती का औसत तापमान बढ़ने का असर हर चीज पर पड़ रहा है। गर्मी बढ़ने से अंटार्कटिका में बर्फ के पहाड़ तेजी से पिघल रहे हैं। जिससे तापमान और ऋतु चक्र का संतुलन बिगड़ रहा है। या तो भीषण गर्मी पड़ती है या फिर भयंकर सर्दी पड़ती है। बारिश होती है तो ऐसी कि जानलेवा बन जाती है। समूचे विश्व में बढ़ते प्रदूषण और मानवीय गतिविधियों के कारण ओजोन छतरी भी दरक रही है। वैज्ञानिक बार बार चेतावनी दे रहे हैं, लेकिन किसी के कानों पर जूं नहीं रेंग रही है। लोग अपने भौतिक और सत्ता स्वार्थ में इन बातों को दरकिनार कर रहे हैं और हमारी धरती धीरे-धीरे विनाश की ओर बढ़ रही है। इसमें कोई सुधार होगा, ऐसा नहीं लगता।

नजरिया

नृपेन्द्र अभिषेक नृप

लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं।

सड़कों को मौत नहीं, जीवन का रास्ता बनाएं

भारत में सड़क नेटवर्क का तेजी से विस्तार, विशेषकर राष्ट्रीय राजमार्गों और एक्सप्रेसवे का निर्माण, विकास और प्रगति का प्रतीक माना जाता है। बेहतर कनेक्टिविटी, कम यात्रा समय और व्यापारिक सुगमता ने अर्थव्यवस्था को गति दी है। लेकिन इस विकास की एक बड़ी कीमत भी चुकानी पड़ रही है। आंकड़े बताते हैं कि देश की कुल सड़कों में राष्ट्रीय राजमार्गों की हिस्सेदारी बहुत कम है, फिर भी सड़क दुर्घटनाओं में होने वाली मौतों का बड़ा हिस्सा इन्हीं पर होता है। यह स्थिति इस बात का संकेत है कि समस्या केवल यातायात की संख्या नहीं, बल्कि सड़क निर्माण की गुणवत्ता, डिजाइन और प्रबंधन से जुड़ी है। राजमार्गों पर दुर्घटनाओं का एक बड़ा कारण ट्रैफिक नियमों का पालन न करना है। तेज गति यानी ओवरस्पीडिंग आज भी सबसे बड़ी वजह बनी हुई है।

सड़कें जीवन को जोड़ने के लिए बनाई जाती हैं, उसे समाप्त करने के लिए नहीं। लेकिन भारत में आज हालात कुछ और ही कहानी कहते हैं। खासकर राजमार्गों और एक्सप्रेसवे पर बढ़ती सड़क दुर्घटनाओं ने इन जीवनदायी रास्तों को मानो 'मौत के गलियारे' में बदल दिया है। यह चिंताजनक स्थिति केवल चालकों की लापरवाही का परिणाम नहीं है, बल्कि यह हमारी अव्यवस्थित योजना, कमजोर कानून-प्रवर्तन और प्रशासनिक जवाबदेही की कमी का सम्मिलित दुष्परिणाम है। हाल ही में न्यायपालिका द्वारा जताई गई चिंता और दिए गए निर्देश इस संकट की गंभीरता को स्पष्ट करते हैं, लेकिन जब तक व्यवस्था की गहराई में मौजूद खामियों को दूर नहीं किया जाएगा, तब तक ये प्रयास केवल अस्थायी राहत ही बनकर रह जाएंगे।

भारत में सड़क नेटवर्क का तेजी से विस्तार, विशेषकर राष्ट्रीय राजमार्गों और एक्सप्रेसवे का निर्माण, विकास और प्रगति का प्रतीक माना जाता है। बेहतर कनेक्टिविटी, कम यात्रा समय और व्यापारिक सुगमता ने अर्थव्यवस्था को गति दी है। लेकिन इस विकास की एक बड़ी कीमत भी चुकानी पड़ रही है। आंकड़े बताते हैं कि देश की कुल सड़कों में राष्ट्रीय राजमार्गों की हिस्सेदारी बहुत कम है, फिर भी सड़क दुर्घटनाओं में होने वाली मौतों का बड़ा हिस्सा इन्हीं पर होता है। यह स्थिति इस बात का संकेत है कि समस्या केवल यातायात की संख्या नहीं, बल्कि सड़क निर्माण की गुणवत्ता, डिजाइन और प्रबंधन से जुड़ी है। राजमार्गों पर दुर्घटनाओं का एक बड़ा कारण ट्रैफिक नियमों का पालन न करना है। तेज गति यानी ओवरस्पीडिंग आज भी सबसे बड़ी वजह बनी हुई है। जिन सड़कों को तेज और सुगम यात्रा के लिए बनाया जाता है, वहीं गति नियंत्रण के पर्याप्त साधन नहीं होते। इसके साथ ही लापरवाह ड्राइविंग, जैसे लेन अनुशासन की कमी, अचानक ओवरटेक करना और सुरक्षा नियमों की अनदेखी दुर्घटनाओं के खतरे को और बढ़ा देती है। जब नियमों का पालन सख्ती से नहीं होता, तो लोग उन्हें हल्के में लेने लगते हैं और यही लापरवाही जानलेवा साबित होती है।

एक बड़ी समस्या है राजमार्गों के किनारे अवैध पार्किंग और अतिक्रमण। अक्सर ट्रक और बसें सड़क के किनारे या कई बार मुख्य मार्ग पर ही खड़ी कर दी जाती हैं, खासकर रात के समय। तेज रफ्तार से चल रहे वाहनों के लिए यह अचानक सामने आने वाली बाधा घातक साबित होती है। इसके अलावा, सड़क किनारे ढाबे, दुकानें और अस्थायी बाजार भी अतिक्रमण कर लेते हैं, जिससे पैदल लोगों की आवाजाही बढ़ जाती है और यातायात बाधित होता है। ये सभी स्थितियाँ मिलकर सड़कों को असुरक्षित और अनिश्चित बना देती हैं। इन्फ्रास्ट्रक्चर की कमियाँ भी दुर्घटनाओं को बढ़ाने में बड़ी भूमिका निभाती हैं। कई जगहों पर सड़कें ठीक तरह से डिजाइन नहीं की गई होतीं, संकेतक (साइन बोर्ड) पर्याप्त नहीं होते, रोशनी की कमी रहती है और जरूरी जगहों पर सुरक्षा बैरियर नहीं लगाए जाते। कई बार राजमार्ग घनी आबादी वाले क्षेत्रों से गुजरते हैं, लेकिन वहां पैदल पारपथ, सर्विस लेन या गति नियंत्रित करने के उपाय नहीं होते। इससे यह स्पष्ट होता है कि सड़क निर्माण में सुरक्षा को प्राथमिकता नहीं दी जाती, बल्कि केवल गति और विस्तार पर जोर दिया जाता है।

जवाबदेही की कमी भी इस समस्या को और गंभीर बनाती है। सड़क प्रबंधन में कई एजेंसियाँ शामिल होती हैं- राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण, राज्य सरकारें, ट्रैफिक पुलिस और

स्थानीय प्रशासन। लेकिन इनके बीच समन्वय की कमी के कारण काम सही ढंग से नहीं हो पाता। जब कोई दुर्घटना होती है, तो जिम्मेदारी तय करना मुश्किल हो जाता है और अक्सर कोई ठोस कार्रवाई नहीं होती। इस बिखरी हुई व्यवस्था के कारण लापरवाही बनी रहती है और सुधार की गति धीमी पड़ जाती है। न्यायपालिका ने इस स्थिति को सुधारने के लिए कई निर्देश दिए हैं, जैसे अतिक्रमण हटाना, पार्किंग को नियंत्रित करना, आधुनिक निगरानी प्रणाली लगाना और विभिन्न एजेंसियों के बीच बेहतर तालमेल सुनिश्चित करना। ये कदम निश्चित रूप से जरूरी हैं, लेकिन इनकी सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि इन्हें कितनी गंभीरता से लागू किया जाता है। हमारे देश में अक्सर अच्छे नियम बनाए जाते हैं, लेकिन उनका पालन सही ढंग से नहीं हो पाता। इसलिए असली चुनौती नीतियाँ बनाना नहीं, बल्कि उन्हें जमीन पर उतारना है।

तकनीक भी सड़क सुरक्षा को बेहतर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। स्मार्ट ट्रैफिक सिस्टम, स्पीड कैमरा, नंबर प्लेट पहचान प्रणाली और रियल-टाइम मॉनिटरिंग जैसे उपाय नियमों के पालन को सुनिश्चित कर सकते हैं। डेटा के आधार पर दुर्घटना-प्रवण क्षेत्रों की पहचान कर वहां विशेष कदम उठाए जा सकते हैं। लेकिन तकनीक तभी प्रभावी होगी, जब उसके साथ मजबूत प्रशासनिक व्यवस्था और जवाबदेही भी जुड़ी हो। सड़क सुरक्षा में आम लोगों की भूमिका भी बेहद अहम है। अक्सर इसे केवल सरकार की जिम्मेदारी माना जाता है, लेकिन यह हर नागरिक का कर्तव्य भी है। वाहन चलाते समय सीट बेल्ट लगाना, मोबाइल फोन का उपयोग न करना, लेन का पालन करना और गति सीमा का सम्मान करना जैसे छोटे-छोटे कदम भी कई जिंदगियाँ बचा सकते हैं। जागरूकता अभियान और सख्त दंड व्यवस्था लोगों में जिम्मेदारी की भावना विकसित कर सकते हैं।

हालांकि यह भी सच है कि केवल व्यक्तिगत सावधानी से समस्या का समाधान नहीं हो सकता। यदि सड़कें ही खराब हों, संकेतक न हों या अचानक अवरोध सामने आ जाए, तो सावधान चालक भी दुर्घटना का शिकार हो सकता है। इसलिए सड़क सुरक्षा को एक साझा जिम्मेदारी के रूप में देखना होगा, जिसमें सरकार और नागरिक दोनों की भूमिका समान रूप से महत्वपूर्ण हो। एक और महत्वपूर्ण पहलू है आपातकालीन सेवाओं की व्यवस्था। कई मामलों में समय पर इलाज मिलने से जान बचाई जा सकती है, लेकिन अक्सर एंबुलेंस देर से पहुंचती है या आसपास उचित चिकित्सा सुविधा उपलब्ध नहीं होती। यदि राजमार्गों के किनारे आधुनिक ट्रॉमा सेंटर और बेहतर एंबुलेंस नेटवर्क विकसित किए जाएँ, तो मृत्यु दर को काफी हद तक कम किया जा सकता है।

सड़क दुर्घटनाओं की आर्थिक और सामाजिक कीमत भी बहुत बड़ी होती है। एक दुर्घटना केवल एक व्यक्ति की जान नहीं लेती, बल्कि पूरे परिवार को संकट में डाल देती है। कई बार परिवार का कमाने वाला सदस्य खो जाता है, जिससे आर्थिक और मानसिक दोनों तरह का नुकसान होता है। इस दृष्टि से सड़क सुरक्षा केवल एक तकनीकी मुद्दा नहीं, बल्कि एक मानवीय समस्या है, जिस पर तुरंत ध्यान देने की आवश्यकता है। अब समय आ गया है कि हम सड़क निर्माण और प्रबंधन के अपने दृष्टिकोण को बदलें। हर स्तर पर सुरक्षा को प्राथमिकता दी जानी चाहिए, चाहे वह योजना बनाना हो, निर्माण करना हो या संचालन करना। अंतरराष्ट्रीय मानकों को अपनाना, नियमित सुरक्षा जांच करना और जोखिम कम करने वाले उपायों को लागू करना बेहद जरूरी है। साथ ही नियमों का उल्लंघन करने वालों के लिए सख्त दंड और पारदर्शी जवाबदेही व्यवस्था भी सुनिश्चित करनी होगी।

सच कहें तो यहां एक प्रश्न उठता है कि भारत विश्वस्तरीय सड़कें बना सकता है या नहीं, बल्कि यह है कि क्या वह उन्हें अपने नागरिकों के लिए सुरक्षित बना सकता है। ऐसा विकास, जो मानव जीवन की कीमत पर हो, वास्तव में विकास नहीं कहा जा सकता। सड़कें अवसर, प्रगति और जुड़ाव का प्रतीक होनी चाहिए, न कि भय और मृत्यु का।

वास्तव में राजमार्गों पर बढ़ती दुर्घटनाएँ हमारे विकास मॉडल की कमजोरियों को उजागर करती हैं। नीतियाँ और न्यायिक निर्देश दिशा दिखाते हैं, लेकिन उनकी सफलता हमारे सामूहिक प्रयासों पर निर्भर करती है। अब समय है कि सड़कें मौत के गलियारे नहीं, बल्कि सुरक्षित और सुगम यात्रा के मार्ग बनें। तभी हम सच्चे अर्थों में विकास को सार्थक बना पाएंगे और मानव जीवन की गरिमा को बनाए रख सकेंगे।

एकात्म धाम

धर्मेन्द्र सिंह लोधी

राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार), संस्कृति, पर्यटन, धार्मिक न्यास एवं धर्मस्व विभाग

अद्वैत वेदान्त की सबसे बड़ी साधना स्थली

आज से लगभग 1200-1500 वर्ष पहले भारत की स्थिति को याद कीजिए। समाज अंधविश्वासों में जकड़ा था, दर्शन के नाम पर भ्रम था और देश सांस्कृतिक रूप से खंडित हो रहा था। ऐसे समय में दक्षिण के केरल में कालड़ी नामक स्थान पर शिव के अंश के रूप में बालक शंकर का प्राकट्य हुआ। उस बालक ने बुझते हुए सनातन धर्म के दीपक में अपने ज्ञान का घी डालकर उसे पुनः प्रज्वलित किया था। वह कोई साधारण बालक नहीं थे। 8 वर्ष की आयु में चारों वेदों का ज्ञान, 12 वर्ष की आयु में सभी शास्त्रों में पारंगत और 16 वर्ष की आयु में 'ब्रह्मसूत्र भाष्य' की रचना! यह किसी मनुष्य के लिए असंभव है, यह केवल ईश्वरीय शक्ति ही कर सकती थी। ऐसे आचार्य शंकर को उनके प्रकटोत्सव पर संपूर्ण भारतवर्ष नमन कर रहा है।

जब बालक शंकर सन्यास लेकर गुरु की खोज में निकले, तो उनके कदम मध्य प्रदेश की पावन धरा ओंकारेश्वर की ओर बढ़े। नर्मदा के तट पर गुरु गोविंद भगवत्पाद ने जब उनसे पूछा— तुम कौन हो? तब शंकर ने जो उत्तर दिया, वही अद्वैत का सार है। उन्होंने यह नहीं कहा कि मैं एक बालक हूँ या सन्यासी हूँ। उन्होंने कहा— न मृत्युर्न शंका न मे जातिभेदः... चिदानन्दरूपः शिवोऽहम् शिवोऽहम्। अर्थात् मैं तो आनंद स्वरूप शिव हूँ।

ओंकारेश्वर की गुफाओं में अद्वैत वेदांत का वह बीज बोया गया, जिसने आगे चलकर पूरे भारत को एक सूत्र में पिरोया। आज ओंकारेश्वर में बन रहा 'एकात्म धाम' इसी ऐतिहासिक घटना का जीवंत स्मारक है। आचार्य शंकर केवल एक दार्शनिक नहीं थे, वे भारत के पहले सांस्कृतिक राष्ट्र निर्माता थे। उन्होंने शस्त्र नहीं, शास्त्र उठाए। उन्होंने पैदल पूरे भारत की यात्रा की और शास्त्रार्थ के माध्यम से मतभेदों को मिटाया। उन्होंने भारत की चारों दिशाओं में— उत्तर में बद्रिकाश्रम, दक्षिण में श्रृंगेरी, पूर्व में पुरी और पश्चिम में द्वारका— मठ स्थापित किए। यह इस बात का प्रमाण था कि भारत भौगोलिक रूप से ही नहीं, बल्कि आध्यात्मिक रूप से भी एक अखंड इकाई है। उन्होंने अद्वैत का संदेश दिया। उन्होंने सिखाया कि जीव और ब्रह्म अलग नहीं हैं। सर्वं खल्विदं ब्रह्म—अर्थात् सब कुछ ईश्वर ही है। जब सब ईश्वर है, तो समाज में छुआछूत, भेदभाव और घृणा का कोई स्थान नहीं बचता।

प्रश्न उठता है कि आज 21वीं सदी में हमें आचार्य शंकर की क्या आवश्यकता है? आज जब दुनिया डिप्रेशन, अकेलेपन और आपसी संघर्ष से जूझ रही है, तब शंकर का अद्वैतवाद हमें मानसिक शांति देता है। यह हमें बताता है कि हम अकेले नहीं हैं, हम उस अनंत चेतना का हिस्सा हैं। आज का विज्ञान (क्वांटम फिजिक्स) भी कहता है कि सब कुछ ऊर्जा है। आचार्य शंकर ने हज़ारों साल पहले इसे ब्रह्म कहा था। यदि हम अद्वैत को समझें, तो हम पर्यावरण को नष्ट नहीं करेंगे, क्योंकि प्रकृति भी हमारा ही विस्तार है।

एकात्म धाम जब पूर्ण रूप से क्रियाशील हो जाएगा, तो यह केवल एक दर्शनीय स्थल नहीं, बल्कि एक जीवंत विश्वविद्यालय और सांस्कृतिक केंद्र के रूप में उभरेगा। आने वाले समय में यहाँ का आचार्य शंकर अंतरराष्ट्रीय अद्वैत वेदांत संस्थान दुनिया भर के विचारकों के लिए आकर्षण का केंद्र होगा। यहाँ अद्वैत वेदांत पर आधारित अल्पकालिक और दीर्घकालिक कोर्सेज शुरू होंगे। वर्ष भर यहाँ देश-विदेश के शीर्ष दार्शनिकों और वैज्ञानिकों के बीच संवाद होंगे, जहाँ चेतना और आधुनिक विज्ञान के संबंधों पर शोध होगा। एक डिजिटल और फिजिकल लाइब्रेरी होगी जिसमें हजारों दुर्लभ पांडुलिपियाँ और वेदांत ग्रंथ उपलब्ध होंगे।

आने वाले समय में यहाँ आने वाले श्रद्धालु केवल दर्शन नहीं करेंगे, बल्कि अद्वैत को साक्षात जिएंगे। एकात्म धाम पूर्ण होने पर यहां के प्रमुख आकर्षण इस तरह होंगे -

आभासी यात्रा- अद्वैत लोक संग्रहालय में 3 डी होलोग्राम और वीआर टेक्नोलॉजी के जरिए श्रद्धालु आदि गुरु शंकराचार्य के साथ उनकी भारत यात्रा पर निकलेंगे। श्रद्धालु साक्षात देखेंगे कि कैसे उन्होंने केरल से कश्मीर तक की यात्रा की।

लेजर और साउंड शो- प्रतिदिन संध्या काल में माँ नर्मदा की महिमा और अद्वैत दर्शन पर आधारित एक भव्य लेजर शो आयोजित किया जाएगा, जो मान्धाता पर्वत की पहाड़ियों को अपनी रोशनी से सराबोर कर देगा।

नौका विहार - नर्मदा जी के जल में नौका विहार करते हुए श्रद्धालुओं को ऑडियो गाइड के माध्यम से इस क्षेत्र के आध्यात्मिक महत्व की जानकारी दी जाएगी।

ध्यान और साधना केंद्र - यहाँ विशेष ध्यान कक्ष होंगे जहाँ मौन साधना की व्यवस्था होगी। यहाँ लोग अपनी भागदौड़ भरी जिंदगी से ब्रेक लेकर हफ़्तों तक साधना कर सकेंगे। प्रतिदिन प्रातः काल में सामूहिक योग शिविर आयोजित किए जाएंगे, जो न केवल शारीरिक बल्कि मानसिक शांति पर केंद्रित होंगे।

सांस्कृतिक और सामाजिक गतिविधियां - यहाँ भव्य अद्वैत कलाग्राम स्थापित होगा। स्थानीय और राष्ट्रीय कलाकार अपनी कला का प्रदर्शन करेंगे। यहाँ पारंपरिक चित्रकला, मूर्तिकला और संगीत की कार्यशालाएं होंगी। हर वर्ष एक भव्य एकात्म यात्रा का आयोजन होगा, जो समाज के हर वर्ग को जाति और पंथ से ऊपर उठकर जोड़ने का कार्य करेगी। यहाँ एक आधुनिक गुरुकुल की झलक मिलेगी जहाँ विद्यार्थियों को वेदों के साथ-साथ आधुनिक शिक्षा भी दी जाएगी।

स्थानीय आर्थिक विकास - एकात्म धाम पूर्ण होने पर जब यहाँ दुनिया भर से पर्यटक आएंगे, तो होटल, होमस्टे, गाइड, और हस्तशिल्प के माध्यम से हज़ारों स्थानीय युवाओं को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार मिलेगा। स्थानीय स्वयं सहायता समूहों द्वारा तैयार किए गए नर्मदा प्रसाद और स्मृति चिह्नों का एक बड़ा बाजार विकसित होगा।

आने वाले समय में एकात्म धाम का स्वरूप ऐसा होगा कि यहाँ से कोई भी व्यक्ति केवल फोटो खींचकर नहीं जाएगा, बल्कि अपने भीतर एक रूपांतरण लेकर जाएगा। यह स्थान भारत के उस गौरव को पुनः स्थापित करेगा जिसमें कहा गया था— वसुधैव कुटुंबकम्। यह धाम दुनिया को यह सिखाएगा कि संघर्ष का हल युद्ध नहीं, बल्कि एकात्मता का बोध है। आज के इस उथल-पुथल भरे विश्व में हमारा देश यशस्वी प्रधानमंत्री माननीय नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में संपूर्ण विश्व को आध्यात्मिक और सांस्कृतिक उन्नति का मार्ग दिखा रहा है। प्रदेश के लोकप्रिय मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव प्रदेश की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत को उच्चतम शिखर पर ले जाने के लिए कार्य कर रहें हैं। भव्य एकात्म धाम उसी पावन चिंतन का परिणाम है। आचार्य शंकर मात्र 32 वर्ष जिए, लेकिन अपनी अल्पायु में उन्होंने वह कार्य किया जो हज़ारों वर्षों तक मानवता का मार्गदर्शन करेगा। उनके प्रकटोत्सव पर हमें संकल्प लेना चाहिए कि हम जात-पात के भेदों को भुलाकर एकात्म समाज बनाएंगे, और आदिगुरू के आदर्शों के अनुरूप संपूर्ण भारतवर्ष को एकसूत्र में पिरोने का कार्य करेगा। विवेक चूडामणि में वे कहते हैं कि मनुष्य जन्म दुर्लभ है, और उससे भी दुर्लभ है मोक्ष की इच्छा और महापुरुषों का सानिध्य। हम सब सौभाग्यशाली हैं कि हमें आज हजारों सालों से चली आ रही आदिगुरू शंकराचार्य की परम्परा सानिध्य प्राप्त है।

ऊँट किस करवट बैठेगा ?

अमेरिका-ईरान वार्ता

रागिनी श्रीवास्तव

लेखक कनाडा निवासी साहित्यकार हैं।

आज की वैश्विक राजनीति में अमेरिका और ईरान के बीच चल रही वार्ता केवल दो देशों तक सीमित नहीं रह गई है, बल्कि यह अंतरराष्ट्रीय संबंधों, ऊर्जा बाजार और विश्व शांति का केंद्र बन चुकी है। हाल की घटनाएँ स्पष्ट करती हैं कि स्थिति अत्यंत जटिल और अनिश्चित है सचमुच 'ऊँट किस करवट बैठेगा', यह कहना मुश्किल है।

वर्तमान परिदृश्य में एक ओर दोनों देश संवाद जारी रखने की बात कर रहे हैं, वहीं दूसरी ओर तनाव लगातार बढ़ रहा है। हाल ही में होर्मुज़ जलडमरूमध्य को लेकर तनाव ने वैश्विक चिंता बढ़ा दी है, क्योंकि यह मार्ग दुनिया की बड़ी तेल आपूर्ति का प्रमुख केंद्र है। दूसरी ओर अमेरिका ने भी सख्त रुख अपनाते हुए संकेत दिया है कि यदि समझौता नहीं हुआ तो सैन्य विकल्प से भी पीछे नहीं हटेगा। इससे यह साफ हो जाता है कि यह वार्ता केवल 'शांति' की कोशिश नहीं, बल्कि 'दबाव की कूटनीति' भी है।

इस विनाशकारी युद्ध के मुख्य विवादित मुद्दे , परमाणु कार्यक्रम, आर्थिक प्रतिबंध और क्षेत्रीय प्रभाव और सुरक्षा है। ईरान अपने परमाणु कार्यक्रम और यूरेनियम संवर्धन को जारी रखना चाहता है, जबकि अमेरिका इसे सीमित करने पर जोर दे रहा है। यह विवाद ईरान परमाणु समझौता के बाद से और भी संवेदनशील बन गया है। ईरान चाहता है कि उस पर लगे सभी आर्थिक प्रतिबंध तुरंत हटाए जाएँ, जबकि अमेरिका चरणबद्ध राहत देने की नीति पर कायम है। अमेरिका चाहता है कि ईरान अपने मिसाइल कार्यक्रम और क्षेत्रीय प्रभाव (प्रॉक्सी समूहों के जरिए) को सीमित करे, जबकि ईरान इसे अपनी संप्रभुता और सुरक्षा का हिस्सा मानता है।

ईरान का कहना है कि बातचीत में 'कुछ प्रगति' हुई है, लेकिन अंतिम समझौता अभी दूर है। वहीं अमेरिका के भीतर भी जल्दबाज़ी में समझौता करने को लेकर संदेह है। ऐसे में स्थिति 'आधी आशा, आधी आशंका' की बनी हुई है। अब प्रश्न उठता है कि मिडिल ईस्ट का ऊँट कौन सी करवट लेगा जिसकी तीन सम्भावनाये हो सकती है

1. **पूर्ण समझौता (सकारात्मक परिदृश्य):** यदि समझौता हो जाता है, तो युद्ध का खतरा कम होगा, तेल की कीमतें स्थिर होंगी और मध्य पूर्व में शांति की संभावना बढ़ेगी।
2. **आंशिक समझौता (मध्य मार्ग):** कुछ मुद्दों पर सहमति और कुछ पर मतभेद बने रह सकते हैं। इससे अस्थायी राहत मिलेगी, लेकिन स्थायी समाधान नहीं होगा।
3. **वार्ता विफल (नकारात्मक परिदृश्य):** यदि बातचीत विफल होती है, तो सैन्य टकराव की आशंका बढ़ सकती है। इसका प्रभाव वैश्विक तेल संकट, महंगाई और अंतरराष्ट्रीय अस्थिरता के रूप में सामने आ सकता है। अमेरिका-ईरान वार्ता आज एक ऐसे मोड़ पर खड़ी है जहाँ हर कदम निर्णायक साबित हो सकता है। दोनों देशों के बीच गहरा अविश्वास, क्षेत्रीय राजनीति और घरेलू दबाव इस प्रक्रिया को और जटिल बना रहे हैं। इसलिए फिलहाल यही कहा जा सकता है कि 'ऊँट अभी बैठा नहीं है, बल्कि करवट बदलने की स्थिति में है।'

यदि कूटनीति हावी रही तो शांति की राह खुल सकती है, लेकिन यदि टकराव बढ़ा, तो उसके प्रभाव से पूरी दुनिया अछूती नहीं रहेगी। जैसा कि सभी जानते है इस युद्ध में अनेक आधुनिक हथियारों और मिसाइलों का उदय हुआ है जो पहले से कहीं अधिक विध्वंसक और विनाशकारी है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता और ड्रोन जैसी नई तकनीकों का उपयोग युद्ध के हथियारों में किया जा रहा है। एक राष्ट्र दूसरे को परमाणु हथियारों के प्रयोग को लेकर डरा धमका रहे है ऐसे में एल्बर्ट आइंस्टीन का एक वाक्य याद आता है, मैं नहीं जानता कि तीसरा विश्व युद्ध किन हथियारों से लड़ा जाएगा, लेकिन चौथा विश्व युद्ध छड़ियों और पत्थरों से लड़ा जाएगा।

अल्बर्ट आइंस्टीन का यह उद्धरण बताता है कि एक संभावित तीसरा विश्व युद्ध इतना विनाशकारी होगा कि वह सभ्यता के अधिकांश हिस्से को नष्ट कर सकता है।

अर्थात, जीवित बचे लोग प्राचीन औजारों का उपयोग करके जीवित रहने के लिए मजबूर होंगे, जिससे मानवता प्रागैतिहासिक अवस्था में वापस चली जाएगी। यह उद्धरण मानवता के आत्म-विनाश की संभावना को उजागर करता है, खासकर परमाणु हथियारों के आगमन के साथ। इसका अर्थ है कि तीसरे विश्व युद्ध के विनाश से सीखे गए सबक इतने गहरे होंगे कि भविष्य के संघर्ष बहुत कम विनाशकारी साधनों से लड़े जाएंगे, शायद संसाधनों की कमी या संगठित समाज के पतन के कारण। जबकि आइंस्टीन ने शायद इन शब्दों को स्पष्ट रूप से नहीं कहा हो, लेकिन यह उनके युद्ध के खतरों और विनाशकारी परिणामों के बारे में ज्ञात विचारों को दर्शाता है। विश्व की ताजा स्थिति और युद्ध के आसार देखते हुए तीसरे विश्व युद्ध की कल्पना मात्र से सिहर जाते है। चारों ओर युद्ध का वातावरण है चाहे रूस और यूक्रैन हो या इज़राइल और ईरान हो या फिर भारत और पाक, या विश्व का कोई अन्य देश। आसमान में बारूदों के विस्फोटों के काले धुए के बादल छाये है धन ,जन की हानि हो रही है। पर्यावरण प्रदूषित हो रहा है। काश किसी मुद्दे पर स्थायी शांति समझौता हो सकता ? और ऊँट किसी करवट बैठ जाता ?

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पंकज प्रिंटर्स एंड पैकेजिंग, 16, अल्फा इंडस्ट्रीयल पार्क, जाखिया, इंदौर, म.प्र.-453555 से मुद्रित एवं 662, साई कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी

कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल

संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी

स्थानीय संपादक
हेमंत पाल

प्रबंध संपादक
रमेश रंजन त्रिपाठी

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

अरुण अर्णव खरे

लेखक व्यंग्यकार हैं।

वादा तेरा वादा

आज सुबह एक पुराना फिल्मी गीत कानों में पड़ा -'वादा तेरा वादा, मारा गया मैं बंदा सीधा-सादा।' गाना सुनते ही मन में सवालों की आवाजाही शुरू हो गई। चूँकि मैंने वह फिल्म नहीं देखी, इसलिए मुझे नहीं पता कि वह सीधा-सादा बंदा किस वादे पर 'मारा गया' था। मैं कल्पना नहीं कर पा रहा हूँ, कि वह सच में मारा गया था। यदि मारा गया होता तो फिर परदे पर कौन गाना गा रहा था और गाते-गाते सबको बता भी रहा था। मतलब साफ है, वह मरा तो कदापि नहीं था। हो सकता है मरने की स्थिति तक पहुँच गया हो और गाने के लिए जीवित बच गया हो। फिल्मों में ऐसी अनहोनी होती रहती है।

मुझे लगता है उसने वादा को खतरनाक सिद्ध करने की गरज से यह अतिश्योक्तिपूर्ण वितंडा रचा हो। इसके विपरीत भी हो सकता है। उससे सच में कोई ऐसा वादा किया गया हो जिससे उसकी जिंदगी पर बन आई हो। मैं सारी संभावित स्थितियों पर विचार कर रहा हूँ। मुझे लगता है सबसे पहले उस बंदे ने ही मुलाक़ात के पहले दिन 'चाँद-तारे तोड़ कर कदमों में रख देने' और 'मांग में सितारे सजा देने' जैसे वादे किए होंगे और उसने भी जोश में आकर 'मैं तुम्हारा हर दिन होली और हर रात दीवाली बना दूँगी' टाइप फरेबी वादा कर दिया होगा। हो सकता है अगली मुलाक़ात में उसने 'आए हो तुम मेरी ज़िंदगी में बहार बनके' जैसा कोई पासा फेंका हो और दोनों गठबंधन में बँध गए हों। कुछ दिनों में ही जिंदगी के यथार्थ ने उन्हें बहार में पतझर का एहसास करा दिया हो और वह इस झटके को संभाल नहीं पाया हो। बंदा वैसे सयाना लगता है। अपने वादे को भूल कर, उसके वादे पर टसुए बहाते हुए अच्छी सिंपैथी बटोर रहा है।

जरूरी नहीं जैसा मैं सोच रहा हूँ वैसा ही हुआ होगा। मैंने तो एक काल्पनिक संभावना व्यक्त की है। बंदे का दिल टूटने की कोई दूसरी वाजिब वजह भी हो सकती है। दोनों अलग-अलग जातियों के होंगे या फिर अलग-अलग धर्मों के भी हो सकते हैं। आज के लव जेहाद की स्थिति के मुकाबले उस दौर में तो और भी खतरनाक स्थिति रही होगी। बंदे ने उससे घर से भाग चलने की बात कही होगी और उसने वादा भी कर दिया होगा लेकिन ऐन वक्त पर हिम्मत नहीं जुटा पाई होगी। ऐसा नहीं हुआ होगा तो अमीरी-गरीबी वाला मसला बीच में आ गया होगा। ऐसा उस समय में होता भी बहुत था। घरवाले लड़की को अक्सर कमरे में बंद कर देते और लड़के की गुंडों से पिटाई करवा दी जाती। बंदे के साथ भी यही सलूक हुआ होगा तभी तो वह सूफियाना अंदाज में गाता फिर रहा था।

असल मुद्दे की बात तो यह है कि बंदा सीधा-सादा था ही नहीं। सीधा-सादा होता तो इतने जोखिम वाला काम करता ही क्यों? सीधा-सादा बंदा प्रेम की ऐसी खतरनाक पींगे बढाता ही नहीं और पिटने के बाद गा-गाकर दुनिया को बताने की हिम्मत तो कतई नहीं जुटा पाता? कहते हैं प्रेम अंधा होता है। बंदा भी अंधा हो गया होगा प्रेम में, और प्रेम के अंधत्व के प्रभाव में उसके ऐबों को भी गुण समझ बैठा हो। बाद में जब विवेक लौटा होगा तो खुद को ठगा महसूस किया होगा। ऐसी स्थिति में वह किसी अहाते में बैठकर या तो गम गलत करता या दाढ़ी बढ़ाकर, फटे पुराने कपड़ों में बस्ती बस्ती गाता फिरता। उसने दूसरा रास्ता चुना। गा गाकर एक किसम से उसने सबको चेताया भी, किसी के वादे पर भरोसा मत करना। हम शायद बंदे को गलत समझ बैठे हैं। वह किसी लड़की-वड़की के वादे से नहीं मारा गया। सीधा-सादा था तो जरूर किसी राजनीतिक वादे से मारा गया था। उसने गरीबी हटाओ के वादे पर विश्वास किया होगा और गरीबी नहीं हटी सो गाने बैठ गया। उस समय गाने की छूट थी सो बिंदास गा सका। दशकों गुजर गए पर उसकी किसी ने नहीं सुनी। 'अच्छे दिनों' के वादे पर ऐसा रीझे कि गाना गाने लायक भी नहीं बचे। वादों की सबसे बड़ी खासियत यही है कि वे कभी खत्म नहीं होते, बस अपग्रेड होते रहते हैं। वे वादा टूटने को विफलता नहीं मानते बल्कि इसे 'नए वादे के लिए' मुफीद अवसर के रूप में लेते हैं। वादे कबके जुमले हो गए, पता ही नहीं चला और गाना गाने की सारी सहूलियतें भी छिन गईं। लोग अब वाद्ययंत्र बन गए हैं और वे उसको अपनी मर्जी से मनचाहे तरीके से बजा रहे हैं।

पेद्रो सांचेज़

डॉ. सुधीर सक्सेना

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

ट्रंप की आंखों की किरकिरी

29 फरवरी, 1972 को स्पेन की राजधानी मैड्रिड में जन्मे पेद्रो सन् 2018 से स्पेन के प्रधानमंत्री हैं। इसके अलावा वह सत्तारूढ़ स्पेनिश सोशलिस्ट वर्कर्स पार्टी के महासचिव भी है। सोशलिस्ट इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस का नौवां अध्यक्ष होना उनकी महत्ता और विचारधारा को इंगित करता है। उनकी राजनीतिक यात्रा दो दहाई पहले तब शुरू हुई थी, जब उन्होंने मैड्रिड में पार्षद का चुनाव लड़ा था। उनका राजनीतिक करियर धूपछाँही रहा है और उन्हें सफलता रातों-रात या सेंतमेत में नहीं मिली। यहां तक कि उन्हें महासचिव पद के लिये भी पापड़ बेलने पड़े। पिता पेद्रो सांचेज फर्नांडेज़ संस्कृति मंत्रालय के रूपकर कलाओं व संगीत के राष्ट्रीय संस्थान में कार्यरत थे और माँ मग्दलीना सिविल सर्वेंट थी। मजेदार बात है कि माँ- बेटे ने वकालत की सनद एक साथ हासिल की।

अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप वैश्विक परिदृश्य में उभरे उन नायकों को कतई पसंद नहीं करते हैं, जो उनकी बात नहीं मानते हैं। स्पेन के प्रधानमंत्री पेद्रो सांचेज़ ऐसे नेताओं में अग्रणी हैं। दुनिया के खुदमुख्तार होने के दर्प में बैठे ट्रंप को न तो पेद्रो का चेहरा रास आ रहा है और न ही उनकी बोली सुहाती है। लेकिन पेद्रो हैं कि अपनी कथनी और करनी से उन्हें क्षुब्ध और रुष्ट करने का कोई मौका नहीं छोड़ते, फलत: वह ट्रंप की आंखों की ऐसी किरकिरी बनकर उभरे हैं, जो दिनोंदिन ज्यादा बड़ी और तकलीफदेह होती जा रही है। चाहे नाटो का मामला हो या स्पेनी एयरबेस के इस्तेमाल की अनुमति, उन्होंने ट्रंप के कहे की अवज्ञा तो की ही, 18 अप्रैल को बार्सिलोना में ब्राजील, दक्षिण अफ्रीका, कोलंबिया और दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्राध्यक्षों के चौथे 'लोकतंत्र बचाव' सम्मेलन की मेजबानी भी कर डाली। यही नहीं, इसी रोज़ उन्होंने विश्व के प्रगतिशील ताकतों को गतिशील करने के प्रयोजन से ब्राजील के लूला डी सिल्वा और दक्षिण अफ्रीका के सिरिल रामाफोसा के साथ करीब तीन हजार तरक्कीपसंद अफसरों, कार्यकर्ताओं और समाचार विश्लेषकों के सम्मेलन को संबोधित भी किया। इस सम्मेलन में ट्रंप की विरोधी हिलेरी क्लिंटन की वीडियो क्लिप भी दिखाई गई, जिसमें हिलेरी कहती सुनी गयीं कि राह में कितनी भी विषमताएं क्यों न हों, हम बेहतर भविष्य रच सकते हैं।

लोकतंत्र की रक्षा के लिए आहूत सम्मेलन को लूला, रामाफोसा और सांचेज़ के अलावा मेक्सिको की क्लाउडिया शीनबाम और कोलंबिया के गुस्तावो पेद्रो ने भी सम्भोदित किया और सुरक्षा परिषद पर पुनर्विचार की मांग की। कौन हैं ये पेद्रो सांचेज़, जिन्होंने विश्व में अमेरिका के वर्चस्व के खिलाफ संघर्ष का बीड़ा उठाया है और जो अमेरिका की लानत मलामत के साथ ही वामोन्मुख ताकतों को एकजुट कर रहा है?

29 फरवरी, 1972 को स्पेन की राजधानी मैड्रिड में जन्मे पेद्रो सन् 2018 से स्पेन के प्रधानमंत्री हैं। इसके अलावा वह सत्तारूढ़ स्पेनिश सोशलिस्ट वर्कर्स पार्टी के महासचिव भी है। सोशलिस्ट इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस का नौवां अध्यक्ष होना उनकी महत्ता और विचारधारा को इंगित करता है। उनकी राजनीतिक यात्रा दो दहाई पहले तब शुरू हुई थी, जब उन्होंने मैड्रिड में पार्षद का चुनाव लड़ा था। उनका राजनीतिक करियर धूपछाँही रहा है और उन्हें सफलता रातों-रात या सेंतमेत में नहीं मिली। यहां तक कि उन्हें महासचिव पद के लिये भी पापड़ बेलने पड़े। पिता पेद्रो सांचेज फर्नांडेज़ संस्कृति मंत्रालय के रूपकर कलाओं व संगीत के राष्ट्रीय संस्थान में कार्यरत थे और माँ मग्दलीना सिविल सर्वेंट थी। मजेदार बात है कि माँ- बेटे ने वकालत की सनद एक साथ हासिल की। ब्रेक डांस और बास्केट बॉल के शौकीन पेद्रो यूँ तो 1993 में ही वर्कर्स पार्टी से जुड़ गये थे, लेकिन सन 1995 में स्नातक होने के बाद वह ग्लोबल परामर्शदात्री फर्म में काम करने न्यूयार्क चले गये। कुछ अर्सा ब्रसेल्स में बिताने के बाद, वह योरोपीय यूनियन के शिष्टमंडल में शामिल रहे।

उन्होंने बोस्निया-हर्जगोविना में काम किया और वहाँ से लौटकर पोलिटिक्स एवं अर्थशास्त्र में डिग्री हासिल की है। उनकी अध्ययन-वृति कि चार साल बाद उन्होंने तीसरी डिग्री हासिल की और सन 2012 में डॉक्टरेट! उस साल वह व्याख्याता भी रहे। पेद्रो स्पेन के पहले ऐसे प्रधानमंत्री हैं, जो फर्राटेदार इंग्लिश बोलते-समझते हैं। सन् 2014 का वर्ष उनके जीवन में वसंत लेकर आया। इस साल वह पार्टी के महासचिव और नेता प्रतिपक्ष बने। अगले वर्ष संपन्न आमचुनाव में वह प्रधानमंत्री पद के प्रत्याशी थे, लेकिन उनकी पार्टी दूसरी पायदान पर रही। पार्टी का महासचिव का पद फिसलने के बाद आठ माह में फिर उनके हाथों में आ गया। एक जून 2018 को पीएम मारिआनो राजोय के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव के बाद नरेश फेलिप षष्टम ने उन्हें प्रधानमंत्री मनोनीत किया। बतौर पीएम उन्होंने जोखिम उठाये। स्त्रैप-पोल कराया। जोखिम उन्हें फला। 2019 और 2023 में वह पुनर् पीएम बने। दीगर है कि उन्हें छोटे-मोटे दलों से गठजोड़ करना पड़ा। पत्नी बेगीना गोमेज के सरकारी कामों में

दखल को लेकर भी वह विवादों में रहे।

पेद्रो अपने देश में संघीय ढाँचे के दृढ़ पैरोकार हैं। इसे वह कैटालोनिया को देश के भीतर बनाये रखने के लिये जरूरी मानते है। वह वित्तीय सुधारों के भी हिमायती हैं। घरेलू मोर्चे पर उनकी नीतियां स्पष्ट हैं। वह युवकों को बेरोजगारी भत्ता देने के पक्षधर हैं और आव्रजन के प्रति उनकी नीति उदार है। आव्रजकों के लिए उन्होंने 'ओपन डोर' पालिसी अपनायी है। यहां तक कि उन्होंने अफगान शरणार्थियों के लिये शिविर खोले, जिसकी भूरि-भूरि प्रशंसा हुई। लैंगिक समानता के पक्षधर पेद्रो के मानवाधिकार और पर्यावरण पर विचार स्पष्ट है। घृणा-वाणी और अपसूचना को वह पसंद नहीं करते और अति-धनाढ्यों पर टैक्स की पैरवी करते हैं। शीनबाम और लूला जैसे राष्ट्रनायकों से उनकी निभती है। लूला के साथ वह शिखरवार्ता भी कर चुके हैं और शीनबाम के कथन से सहमत हैं कि विभिन्न देशों को सैन्य-बजट की दस फीसद राशि हरीतिमा पर खर्च करनी चाहिये। दोनों नेता युद्ध के बजाय जीवन के बीज बोना चाहते हैं। वह कहते हैं-यदि धुर दक्षिण वैश्विक है तो हमें भी होना चाहिये।

रामाफोसा और उनका साझा मत है कि यूएनओ दंतविहीन संगठन है और सुरक्षा परिषद् की संरचना पर पुनर्विचार होना चाहिये। वजह यह कि रूस और अमेरिका जैसे परिषद के सदस्य ही उन्मादी हैं। अमेरिका ने ईरान तो रूस ने उक्राइना के खिलाफ जंग छेड़ रखी है। पेद्रो मानते हैं कि ट्रंप को अंतरराष्ट्रीय नियमों की कोई परवाह नहीं है और वह बल प्रयोग का आदी है। आप्रवासियों के प्रति उदार पेद्रो ने सेनेगल, मोरक्को और माली के शरणार्थियों के लिये स्पेन के दरवाजे खोल रखे हैं। सन 2027 तक वह इन देशों के करीब नौ लाख आव्रजकों के पुनर्वास को कानूनी जामा पहनायेंगे। वह आव्रजन को विधिसम्मत बनाना चाहते हैं। अमेरिका के वेनजुएला में दखल की उन्होंने निंदा की थी और इस्त्रायल की गाजा व अन्यत्र कार्रवाइयों का तीखा विरोध। उनकी दृष्टि में इस्त्रायल अंतरराष्ट्रीय कानूनों के उल्लंघन का दोषी है। वह इस्त्रायल को जातीय-संहार का दोषी मानते हुये उससे कोई कारोबार नहीं करना चाहते। वह कहते हैं कि स्पेन के पास एटम बम नहीं है लेकिन स्पेन इस्त्रायल को जंग से रोकने की कोशिश करता रहेगा। हाल में वह चीन गये तो विभिन्न वैश्विक मुद्दों पर उनके और जिनपिंग के सुर यकसां थे। इसके पहले वह जर्मन चांसलर ओल्फ शाल्ज और अमेरिकी राष्ट्रपति जो बायडन से मिले थे। समान राय कायम करने के लिये वह योरोपीय यूनियन के चार्ल्स माइकल और उर्सुला वान डेरलेयेन से भी मिले। योरोपीय यूनियन को अधिक सक्रिय और एकात्म बनाने के साथ ही वह स्पेन को विश्व मंच पर प्रभावी भूमिका में देखना चाहते हैं। उनके जेहन में अतीत के शक्तिशाली स्पेन की छवि है।

वह योरोपीय यूनियन और यूरो दोनों को मजबूती देने की बात कहते हैं और मानते हैं कि ईयू के दुश्मन ईयू के भीतर ही हैं। ट्रंप-विरोध में अग्रणी पेद्रो जब-तब ट्रंप को ठेंगा दिखाने से बाज नहीं आते। उन्होंने वेनेजुएला और ईरान में अमेरिकी कार्रवाई का विरोध किया और नाटो को पांच फीसद ट्रंप की गुजारिश ठुकरा दी। उन्होंने दो टूक कहा कि स्पेन पूर्ववत दो प्रतिशत योगदान ही देगा। उन्होंने ट्रंप की स्पेन से कारोबारी रिश्ते तोड़ने की धमकी की भी चिंता नहीं की। इन कारणों से उनका ट्रंप की आँखों की किरकिरी बनकर उभरना स्वाभाविक है। ट्रंप को पेद्रो सांचेज इसलिये भी नागवार गुजरते हैं, क्योंकि उन्होंने स्पेन, ब्राजील, दक्षिण अफ्रीका, कोलंबिया और उरुग्वे का अघोषित मंच बना रखा है और विश्व-मंच पर अमेरिका की नीतियों की निंदा और विरोध का कोई मौका नहीं छोड़ते। पेद्रो के मिजाज को इससे समझा जा सकता है कि उन्होंने शपथ ग्रहण समारोह में बाइबिल और सलीब का कोई इस्तेमाल नहीं किया और तानाशाह फ्रैंको की कब्र को खोदकर उसके अवशेषों को अन्यत्र दफनाने के आदेश में उन्हें कोई झिझक नहीं हुई।

भारत में युवा प्रेम की बदलती तस्वीर

विचार

मनीषा मंजरी

लेखक साहित्यकार हैं।

भारत में प्रेम कभी केवल दो व्यक्तियों के बीच का निजी अनुभव नहीं रहा, यह हमेशा सामाजिक संरचना, पारिवारिक अपेक्षाओं और सांस्कृतिक मूल्यों के साथ गहराई से जुड़ा रहा है। यहाँ रिश्ते केवल भावनाओं से नहीं, बल्कि परंपराओं की स्वीकृति से भी संचालित होते हैं। ऐसे में जब आज का युवा अपने जीवन में स्वतंत्रता, व्यक्तिगत चुनाव और भावनात्मक संतुलन को प्राथमिकता देने लगा है, तो प्रेम और रिश्तों की परिभाषा में बदलाव स्वाभाविक है। फिर भी, यह परिवर्तन सहज नहीं है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है, जहाँ आधुनिकता और परंपरा के बीच लगातार संवाद, और कभी-कभी टकराव, चल रहा है। आज का युवा इसी द्वंद्व के बीच अपने रिश्तों को जी रहा है, जहाँ एक ओर आत्मनिर्भरता की चाह है, और दूसरी ओर सामाजिक संरचना की सीमाएँ।

रिश्तों के प्रति बदलती परिपक्वता

समकालीन युवा अपने रिश्तों को लेकर पहले की तुलना में अधिक जागरूक और जिम्मेदार दृष्टिकोण अपनाते दिखाई दे रहे हैं। अब प्रेम केवल एक भावनात्मक आकर्षण नहीं, बल्कि एक ऐसी साझेदारी के रूप में देखा जा रहा है, जिसे समझ, संवाद और संतुलन की आवश्यकता होती है। इसी कारण से, अब युवा कपल्स अपने रिश्तों में आने वाली समस्याओं को नजरअंदाज करने के बजाय उन्हें सुलझाने का प्रयास करते हैं। काउंसलिंग और थेरेपी की ओर बढ़ता रुझान इसी सोच का परिणाम है। यह इस बात का संकेत है कि वे रिश्तों को केवल निभाने के लिए नहीं, बल्कि बेहतर बनाने के लिए भी प्रतिबद्ध हैं। इस परिवर्तन में एक सूक्ष्म भावनात्मक पहलू भी जुड़ा है, अब लोग यह स्वीकार करने लगे हैं कि रिश्तों में उलझन होना स्वाभाविक है, और उसे समझना भी उतना ही जरूरी है। यह स्वीकार्यता रिश्तों को अधिक ईमानदार और वास्तविक बनाती है।

डिजिटल युग और रिश्तों की बदलती संरचना

तकनीकी विकास ने जिस प्रकार हमारे जीवन को प्रभावित किया है, उसी प्रकार उसने हमारे रिश्तों की प्रकृति को भी बदल दिया है। सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्म्स ने लोगों को जोड़ने के नए अवसर प्रदान किए हैं, लेकिन इसके साथ ही रिश्तों की स्पष्टता को कुछ हद तक जटिल भी बना दिया है। 'सिचुएशनशिप'जैसे नए शब्द इसी बदलते परिदृश्य की देन हैं। ये ऐसे रिश्ते होते हैं जिनमें भावनात्मक जुड़ाव तो होता है, लेकिन कोई स्पष्ट प्रतिबद्धता नहीं होती। यह प्रवृत्ति विशेष रूप से शहरी युवाओं में देखी जा रही है, जहाँ व्यक्तिगत स्वतंत्रता और आत्म-खोज को अधिक महत्व दिया जाता है। हालाँकि, इस प्रकार के रिश्तों में एक हल्की-सी भावनात्मक अनिश्चितता भी बनी रहती है। जब रिश्ते को कोई स्पष्ट नाम नहीं मिलता, तो उसमें जुड़ी अपेक्षाएँ भी अस्पष्ट हो जाती हैं। ऐसे में कई बार लोग भावनात्मक रूप से जुड़ तो जाते हैं, लेकिन उस जुड़ाव को परिभाषित नहीं कर पाते।

छोटे शहरों में उभरती नई अभिव्यक्तियाँ

यह परिवर्तन केवल महानगरों तक सीमित नहीं है। छोटे शहरों और कस्बों में भी युवा अब अपनी भावनाओं और रिश्तों को लेकर अधिक सजग हो रहे हैं। फर्क केवल इतना है कि वहाँ यह बदलाव अपेक्षाकृत शांत और संयमित रूप में दिखाई देता है। ऑडियो-आधारित सोशल प्लेटफॉर्म्स और डिजिटल माध्यमों ने उन्हें एक ऐसा सुरक्षित स्थान दिया है, जहाँ वे बिना प्रत्यक्ष सामाजिक दबाव के अपनी बात रख सकते हैं। यह एक महत्वपूर्ण परिवर्तन है, क्योंकि यह दर्शाता है कि अभिव्यक्ति की आवश्यकता हर सामाजिक स्तर पर समान रूप से मौजूद है। यहाँ भावनाएँ वही हैं, इच्छाएँ वही हैं, बस उन्हें जीने का तरीका थोड़ा अलग और अधिक सावधानीपूर्ण है।

सामाजिक संरचना और निजी भावनाओं का द्वंद्व

भारतीय समाज की सबसे बड़ी विशेषता उसकी परंपराएँ हैं, लेकिन यही परंपराएँ कई बार व्यक्तिगत स्वतंत्रता के रास्ते में चुनौती भी बन जाती हैं। आज भी अनेक युवा अपने रिश्तों को सार्वजनिक रूप से स्वीकार नहीं कर पाते। इसके पीछे परिवार की अपेक्षाएँ, जाति और धर्म से जुड़े सामाजिक मानदंड, और विवाह की पारंपरिक व्यवस्था जैसे कई कारण होते हैं। इस स्थिति में युवा अपने व्यक्तिगत भावनात्मक जीवन और सामाजिक जिम्मेदारियों के बीच संतुलन बनाने की कोशिश करते हैं। यह संतुलन हमेशा सहज नहीं होता। कई बार इसमें समझौते करने पड़ते हैं, और कई बार अपने ही भावनाओं को सीमित करना पड़ता है। फिर भी, इस पूरे परिदृश्य में एक सकारात्मक पक्ष यह है कि युवा अब इन सीमाओं को समझते हुए भी अपने निर्णयों के प्रति अधिक सजग हो रहे हैं। वे परंपराओं का सम्मान करते हुए अपनी पहचान को भी बनाए रखने का प्रयास कर रहे हैं।

लिव-इन रिलेशनशिप: स्वीकृति की ओर एक कदम

शहरी भारत में लिव-इन रिलेशनशिप का बढ़ता चलन इस बात का प्रमाण है कि युवा अब अपने रिश्तों को समझने के लिए नए रास्ते अपनाने लगे हैं। यह एक ऐसा विकल्प है, जिसमें दो लोग बिना विवाह के बंधन में बंधे, एक-दूसरे के साथ समय बिताकर अपनी संगति को समझना चाहते हैं। हालाँकि, इस विचार को अभी भी व्यापक सामाजिक स्वीकृति प्राप्त नहीं हुई है। कई बार ऐसे संबंधों को लेकर पूर्वाग्रह देखने को मिलते हैं, और व्यावहारिक स्तर पर भी चुनौतियाँ सामने आती हैं, जैसे कि आवास से जुड़ी समस्याएँ। फिर भी, यह बदलाव इस बात का संकेत है कि युवा अब अपने जीवन के महत्वपूर्ण निर्णयों को लेकर अधिक आत्मनिर्भर और व्यावहारिक दृष्टिकोण अपना रहे हैं।

आज का भारतीय युवा प्रेम को एक नई दृष्टि से देख रहा है। उसके लिए प्रेम केवल एक सामाजिक दायित्व नहीं, बल्कि एक भावनात्मक साझेदारी है, जिसमें समझ, संवाद और स्वतंत्रता का विशेष महत्व है। फिर भी, यह यात्रा पूरी तरह सरल नहीं है। आधुनिकता और परंपरा के बीच यह संतुलन बनाना एक निरंतर प्रक्रिया है, जिसमें संवेदनशीलता और धैर्य दोनों की आवश्यकता होती है। संक्षेप में, आज का प्रेम एक ऐसे मोड़ पर खड़ा है जहाँ वह न पूरी तरह परंपरागत है, और न ही पूरी तरह आधुनिक। वह इन दोनों के बीच एक संतुलन खोज रहा है, एक ऐसा संतुलन, जिसमें भावनाएँ भी सुरक्षित रहें और सामाजिक ताने-बाने की गरिमा भी बनी रहे। शायद यही इस दौर के प्रेम की सबसे सच्ची और प्रासंगिक तस्वीर है।

अदृश्य धागों से बुनी दुनिया

विचार

कुमार सिद्धार्थ

लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं।

दुनिया को जानने-समझने के कई रास्ते हैं। विज्ञान उसे तथ्यों और नियमों की कसौटी पर परखता है, दर्शन उसे प्रश्नों और विचारों की रोशनी में देखता है, जबकि कला उसे अनुभव और संवेदना के माध्यम से व्यक्त करती है। कई बार कोई छोटा-सा प्रतीक भी जीवन की गहरी सच्चाइयों को उजागर कर देता है। जापान की एक लोककथा ऐसा ही एक प्रतीक सामने रखती है लाल धागे का।

कहा जाता है कि जब कोई बच्चा जन्म लेता है तो उसकी छोटी उंगली में एक अदृश्य लाल धागा बंध जाता है, जो किसी दूसरे व्यक्ति से जुड़ा होता है। यह धागा दोनों के जीवन को किसी न किसी रूप में एक-दूसरे से जोड़ देता है। लोकविश्वास यह भी कहता है कि यह धागा उस रक्त-नाड़ी का विस्तार है जो हमारे हृदय से छोटी उंगली तक जाती है। यह लोककथा केवल भाग्य की कल्पना नहीं है; यह मनुष्य के जीवन में संबंधों की अनिवार्यता का रूपक है।

मनुष्य का जीवन दरअसल संबंधों से ही निर्मित होता है। हम अपने आप को भले ही स्वतंत्र व्यक्ति मानें, लेकिन हमारी पहचान अनेक रिश्तों, स्मृतियों और अनुभवों से मिलकर बनती है। परिवार, मित्रता, समाज, संस्कृति और साझा इतिहास ये सभी हमारे अस्तित्व को आकार देते हैं।

इन संबंधों का एक बड़ा हिस्सा दिखाई नहीं देता, लेकिन उनका प्रभाव जीवन में लगातार बना रहता है। जैसे किसी जाल के महीन धागे एक-दूसरे में उलझकर पूरी संरचना को थामे रहते हैं, वैसे ही हमारे संबंध भी जीवन की पूरी बुनावट को संभाले रखते हैं।

यदि जीवन को एक रूपक में समझना हो तो वह किसी सीधी रेखा की तरह नहीं, बल्कि धागों से बुनी हुई एक जटिल संरचना की तरह है। हर संबंध एक धागे जैसा है कभी मजबूत, कभी ढीला, कभी उलझा हुआ और कभी टूट जाने के कगार पर। रिश्तों की यही जटिलता जीवन को अर्थ भी देती है और चुनौती भी।

आज के समय में दुनिया पहले से कहीं अधिक जुड़ी हुई दिखाई देती है। तकनीक, संचार और डिजिटल माध्यमों ने दूरियों को लगभग समाप्त कर दिया है। एक क्लिक में हम दुनिया के किसी भी हिस्से से जुड़ सकते हैं। लेकिन इसके बावजूद मनुष्य के भीतर अकेलेपन की भावना भी उतनी ही तीव्र होती जा रही है।

यह हमारे समय का एक बड़ा विरोधाभास है बाहरी जुड़ाव बढ़ रहा है, लेकिन भावनात्मक दूरी भी गहरी हो रही है। ऐसे समय में यह विचार कि हम सब अदृश्य धागों से जुड़े हुए हैं, हमें अपने अस्तित्व की एक नई समझ देता है।

स्मृतियाँ भी इन धागों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। वे हमारे भीतर अतीत की उपस्थिति बनाए रखती हैं। किसी व्यक्ति से जुड़ी एक छोटी-सी स्मृति भी वर्षों बाद अचानक जीवित हो उठती है और हमें उन क्षणों में वापस ले जाती है जिन्हें हम बीत चुका समझते हैं।

इसी तरह किसी संबंध का टूटना केवल एक व्यक्ति से दूरी नहीं होता, बल्कि हमारे जीवन की बुनावट का एक धागा ढीला पड़ जाना होता है। शायद इसलिए मनुष्य संबंधों के प्रति इतना संवेदनशील होता है।

जीवन की एक और सच्चाई उसकी अनिश्चितता है। हम योजनाएँ बनाते हैं, लक्ष्य तय करते हैं, लेकिन जीवन हमेशा सीधी रेखा में नहीं चलता। कभी कोई अनजान व्यक्ति अचानक हमारे जीवन में प्रवेश कर जाता है और हमारी सोच की दिशा बदल देता है। कभी कोई रिश्ता धीरे-धीरे समय की धुंध में खो जाता है।

इन सबके बीच जीवन हमें यह सिखाता है कि हर अनुभव चाहे, वह सुख का हो या दु:ख का, हमारी आंतरिक यात्रा का हिस्सा है। यही अनुभव धीरे-धीरे हमारी समझ को गहरा बनाते हैं।

कला इसी समझ की खोज का एक माध्यम है। कलाकार अपने निजी अनुभवों हानि, स्मृति, प्रेम और विछोह को किसी प्रतीक या रूप में व्यक्त करता है। वह अपने अनुभवों को इस तरह प्रस्तुत करता है कि वे केवल उसकी कहानी न रहकर एक साझा मानवीय अनुभव बन जाएँ।

जब हम किसी कलाकृति को देखते हैं, तो उसमें हमें केवल कलाकार का संसार नहीं दिखाई देता, बल्कि कहीं न कहीं अपनी कहानी भी दिखाई देने लगती है। यही कला की शक्ति है वह व्यक्तिगत को सार्वभौमिक बना देती है।

दरअसल मनुष्य की भावनाएँ बहुत अलग नहीं होतीं। अलग-अलग भाषाओं, संस्कृतियों और देशों के बावजूद प्रेम, दुख, आशा, भय और स्मृति जैसी भावनाएँ सभी मनुष्यों में समान रूप से मौजूद रहती हैं। यही हमारी साझा मानवता है।

आज जब दुनिया कई तरह के विभाजनों से गुजर रही है धर्म, जाति, राष्ट्र और विचारधाराओं के आधार पर तब यह याद रखना और भी जरूरी हो जाता है कि हम सब मूलत: एक ही मानवीय अनुभव के हिस्सेदार हैं।

शायद यही अदृश्य धागों का अर्थ भी है। वे हमें यह याद दिलाते हैं कि हम अलग-अलग होकर भी एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं।

जीवन की सबसे बड़ी सुंदरता भी इसी साधारण बुनावट में छिपी है। रोजमर्रा के छोटे-छोटे क्षण, मामूली-सी मुलाकातें, स्मृतियों की हल्की आहटें और संबंधों की गर्माहट ये सब मिलकर जीवन को अर्थ देते हैं।

कभी-कभी हमें बस इतना ही करना होता है कि इन अदृश्य धागों को पहचानें, उन्हें संभाल कर रखें और उस साझा मानवता को याद रखें जो हम सबको एक-दूसरे से जोड़ती है। शायद यही वह अदृश्य लाल धागा है, जिससे जीवन की पूरी दुनिया बुनी हुई है।

संपतिया उइके

नारी शक्ति का अधिकार और लोकतांत्रिक जिम्मेदारी

भारत की लोकतांत्रिक व्यवस्था में महिलाओं की भागीदारी केवल एक अधिकार नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माण की अनिवार्य आवश्यकता है। एक ऐसी महिला, जिसने अपने जीवन में अभाव, संघर्ष और सामाजिक चुनौतियों का सामना करते हुए सार्वजनिक जीवन में स्थान बनाया हो, वह भली-भांति समझ सकती है कि अवसर मिलने पर महिलाएं समाज को किस दिशा में ले जा सकती हैं।

आज जब देश में महिला आरक्षण को लेकर महत्वपूर्ण पहल की जा रही है, तब यह आवश्यक है कि सभी पक्ष मिलकर इस विषय पर सकारात्मक और रचनात्मक दृष्टिकोण अपनाएं। यह देश की आधी आबादी की भागीदारी सुनिश्चित करने का सशक्त प्रयास है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 'नारी शक्ति वंदन' को 21वीं सदी का एक महत्वपूर्ण संकल्प बताया है। यह उस भारत की परिकल्पना है, जहां महिलाएं नीति निर्माण और नेतृत्व की प्रक्रिया में सक्रिय भूमिका निभाएं और विकास की दिशा को सशक्त बनाएं।

महिला आरक्षण को लेकर सरकार द्वारा गंभीर और प्रतिबद्ध प्रयास किए गए हैं, जिससे महिलाओं की भागीदारी को संस्थागत स्वरूप दिया जा सके। इस दिशा में आवश्यक प्रक्रियाएं भी आगे बढ़ाई गईं, लेकिन सभी पक्षा की सहमति के अभाव में यह पहल अपने अपेक्षित परिणाम तक नहीं पहुंच सकी। यह विषय इतना महत्वपूर्ण है कि इसे सभी पक्षों के सहयोग और सकारात्मक सहभागिता के साथ आगे बढ़ाया जाना आवश्यक है, ताकि देश की आधी आबादी को उनका उचित प्रतिनिधित्व सुनिश्चित किया जा सके।

महिला आरक्षण का 33 प्रतिशत प्रावधान केवल प्रतिनिधित्व बढ़ाने का प्रयास नहीं है, बल्कि यह सामाजिक संरचना को संतुलित करने का एक सशक्त माध्यम है। इससे महिलाओं को निर्णय प्रक्रिया में अधिक भागीदारी मिलेगी, नीति निर्माण में संवेदनशीलता बढ़ेगी और समाज के विभिन्न वर्गों की आवाज को उचित मंच प्राप्त होगा। विशेष रूप से ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों की महिलाओं के लिए यह अवसर अत्यंत महत्वपूर्ण साबित हो सकता है।

अनुभव यह दर्शाते हैं कि जब महिलाओं को अवसर मिलता है, तो वे समाज में व्यापक और सकारात्मक परिवर्तन लाने में सक्षम होती हैं। ग्राम पंचायत से लेकर विभिन्न स्तरों तक, महिलाओं ने अपनी नेतृत्व क्षमता का प्रभावी परिचय दिया है। स्व-सहायता समूहों के माध्यम से भी महिलाओं ने आर्थिक और सामाजिक बदलाव को नई दिशा दी है, जो नारी सशक्तिकरण का सशक्त उदाहरण है।

यह आवश्यक है कि महिला सशक्तिकरण के इस प्रयास को सभी के सहयोग और समन्वय से आगे बढ़ाया जाए। यह किसी एक पक्ष का नहीं, बल्कि पूरे समाज का विषय है और इसमें सामूहिक प्रतिबद्धता ही सफलता का आधार बनेगी।

आज भारत की महिलाएं जागरूक हैं, आत्मनिर्भर हैं और अपने अधिकारों के प्रति सजग हैं। उनकी यह बढ़ती भागीदारी देश के विकास को नई गति दे रही है और आने वाले समय में यह परिवर्तन और अधिक व्यापक रूप में दिखाई देगा। नारी सशक्तिकरण का यह अभियान केवल एक पहल तक सीमित नहीं है, बल्कि यह भारत के सामाजिक और लोकतांत्रिक भविष्य को सशक्त बनाने की दिशा में एक सतत और दूरदर्शी प्रयास है।

(लेखिका, मध्यप्रदेश शासन की लोक स्वास्थ्य यांत्रिकीय मंत्री हैं)

पानी बचाना हमारी जरूरत भी है और जिम्मेदारी भी : मुख्यमंत्री

'जल गंगा संवर्धन अभियान' से प्रदेश में जल संरक्षण को मिली नई गति

राष्ट्रीय स्तर पर तीसरे स्थान पर पहुंचा मध्यप्रदेश

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रदेश में जल संरक्षण को जन-आंदोलन बनाया जा रहा है। पानी बचाना बेहद जरूरी है। यह हमारी सामाजिक जिम्मेदारी भी है, जिससे हमारी आने वाली पीढ़ियां प्रकृति के इस अनमोल वरदान से कभी भी कमी महसूस नहीं करें। इसके लिए हमें अपने वर्तमान जल स्त्रोतों के साथ सूख चुके जल स्त्रोतों को संरक्षित करना ही होगा। उन्होंने कहा कि पानी बचाने के लिए प्रदेश में जल गंगा संवर्धन अभियान चलाया जा रहा है। सरकार और समाज के साझा प्रयासों से हो रहे इस अभियान में बीते एक माह में उल्लेखनीय प्रगति हुई है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने प्रदेश के सभी नागरिकों से इस अभियान में सक्रिय सहभागिता का आह्वान किया है।

प्रदेश में संचालित 'जल गंगा संवर्धन अभियान' ने अल्प समय में ही उल्लेखनीय प्रगति दर्ज की है। विगत 19 मार्च 2026 से प्रारंभ हुआ यह अभियान जल संरक्षण, जल संरचनाओं के संवर्धन और जनभागीदारी का एक व्यापक जन-आंदोलन बनता जा रहा है। इस अभियान के प्रभाव से ही मध्यप्रदेश राष्ट्रीय स्तर पर अपनी रैंकिंग सुधारकर अब तीसरे स्थान पर आ गया है। अभियान से पहले मध्यप्रदेश नेशनल रैंकिंग में छठवें स्थान पर था।

राज्य सरकार द्वारा आगामी 30 जून तक चलाए जा रहे इस अभियान में 16 विभागों की 58 गतिविधियां नियत की गई हैं। इसके लिए लगभग 6 हजार 278 करोड़ रुपये का वित्तीय लक्ष्य तय किया गया है। इस अभियान में कुल 2 लाख 44 हजार से अधिक जल संरक्षण एवं संवर्धन कार्यों को चिन्हित कर लगभग 6 हजार 236 करोड़ रुपये की लागत से विकास कार्यों का क्रियान्वयन किया जा रहा है।

अभियान की मॉनिटरिंग एकीकृत डैश बोर्ड से

आयुक्त, मनरेगा ने बताया कि अभियान की एक ही प्लेटफार्म पर नियमित मॉनिटरिंग के लिए एक एकीकृत डैश बोर्ड तैयार किया गया है, जिससे सभी विभाग अपनी-अपनी विभागीय गतिविधियों की प्रगति दर्ज कर रहे हैं। इस डैश बोर्ड से जिलेवार रैंकिंग भी सुनिश्चित की जा रही है। इस डैश बोर्ड से प्रशासनिक एवं विभागीय पारदर्शिता और स्वस्थ प्रतिस्पर्धा को भी बढ़ावा मिल रहा है। प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग ने महत्वपूर्ण उपलब्धियां हासिल की हैं। अभियान अंतर्गत 39 हज़ार 977 खेत तालाबों का निर्माण, 59 हज़ार 577 कूप-रीचार्ज संरचनाओं तथा 21 हज़ार 950 से अधिक पहले से निर्मित जल संरचनाओं को पुनर्जीवित भी किया गया है। इसके साथ ही अमृत सरोवरों के निर्माण और उनके उपयोग को भी बढ़ावा दिया जा रहा है।

नगरीय क्षेत्रों में जल संरक्षण

नगरीय क्षेत्रों में भी जल संरक्षण को लेकर व्यापक कार्य किए जा रहे हैं। नगरीय विकास एवं आवास विभाग द्वारा तालाब, कुएं और पुरानी बावड़ियों के संवर्धन, नालों की सफाई और सौंदर्यीकरण तथा रैन वॉटर हार्वेस्टिंग सिस्टम की स्थापना जैसे कार्य तेजी से किए जा रहे हैं। इसके अतिरिक्त तेज़ गर्मी को देखते हुए नगरीय निकायों द्वारा विभिन्न स्थानों पर प्याऊ की स्थापना भी की गई है।

म.प्र. जन अभियान परिषद चला रही जनजागरूकता गतिविधियाँ

म.प्र. जन अभियान परिषद के माध्यम से राज्य में जल संरक्षण को लेकर व्यापक जन जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए। इन कार्यक्रमों में 5 लाख 25 हजार से अधिक व्यक्तियों की सक्रिय सहभागिता दर्ज की गई। साथ ही प्रदेश के विभिन्न विकासखंडों में 2 हज़ार 682 जल मंदिर (प्याऊ) स्थापित किए गए हैं।

स्कूलों में जागरूकता गतिविधियां

स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा भी इस अभियान में व्यापक तौर पर भागीदारी की जा रही है। राज्य के हजारों विद्यालयों में जल रैलियां, निबंध, पोस्टर प्रतियोगिताएं और संवाद कार्यक्रम आयोजित कर विद्यार्थियों और अभिभावकों को जल संरक्षण के प्रति जागरूक किया गया है।

तकनीकी नवाचार अंतर्गत वॉटरशेड विकास कार्यों की रियल टाइम मॉनिटरिंग, ऑनलाइन स्वीकृति और मोबाइल ऐप आधारित ट्रैकिंग प्रणाली लागू की गई है, जिससे कार्यों की गुणवत्ता और प्रशासनिक पारदर्शिता भी सुनिश्चित हो रही है।

वन और पर्यावरण विभाग द्वारा भी जल संरक्षण के साथ पारिस्थितिकीय संतुलन को ध्यान में रखते हुए विभिन्न फील्ड गतिविधियां की जा रही हैं। नदियों के जल की गुणवत्ता का परीक्षण, जल संरचनाओं का निर्माण तथा पौधरोपण की तैयारी जैसे कार्य इसमें शामिल किए गए हैं।राज्य सरकार द्वारा सतत् मॉनिटरिंग और नियमित रूप से समीक्षा की जा रही है। इससे धरातल पर मौजूद व्यावहारिक कमियों को दूर करने में भी मदद मिल रही है। 'जल गंगा संवर्धन अभियान' से मध्यप्रदेश में जल संरक्षण की दिशा में ठोस परिणाम मिलने शुरू हो गए है। मध्यप्रदेश सरकार की यह पहल देश के दूसरे राज्यों के लिए एक अनुकरणीय मॉडल बनती जा रही है।

सर्व सनातन ब्राह्मण समाज ने धूमधाम से मनाया भगवान परशुराम का प्रकट उत्सव

शिव परशुराम मंदिर बडोरा में हवन पूजन, परशुराम चौक पर भंडारा प्रसादी संपन्न

बैतूल। सर्व सनातन ब्राह्मण समाज के द्वारा समाज के आराध्य भगवान परशुराम का प्रगट उत्सव धूमधाम से मनाया गया। जिसमें शिव परशुराम मंदिर बडोरा में भगवान गणेश, कार्तिकेय, नंदिदेव, भृंगीदेव, कीर्तिवीर्य, कुबेरदेव, भीलट देव, सिलट देव, वीरभद्र, बहसंख्यक रुद्र रुद्री सहित वासुकि नाथ भगवान शिव पार्वती उनके प्रिय सप्त ऋषि नव गृह, समस्त नक्षत्र देव एवं षोडश मातृकाओं सहित भगवान परशुराम के षोडशोपचार पूजन किया गया। अंत में सैकड़ों श्रद्धालुओं द्वारा विराट हवन में आहुति समर्पित कर शिव पंचायत सहित भगवान परशुरामजी की महाआरती सम्पन्न की। साथ ही शाम को परशुराम चौक पर विधायक डॉ. योगेश पंडाग्रे, भाजपा जिलाध्यक्ष सुधाकर पवार, समाजसेवी मुकेश खंडेलवाल, पूर्व नपाध्यक्ष व पार्षद आनंद प्रजापति की उपस्थिति में फरसा पूजन कर विशाल भंडारे का आयोजन किया गया। जिसमें सैकड़ों श्रद्धालुओं ने भंडारा प्रसादी ग्रहण की। इस अवसर पर प्रमुख रूप से सुश्री उषा द्विवेदी, महेंद्र दीक्षित, सनातन ब्राह्मण महासमाज अध्यक्ष सुभाष पांडे, उपाध्यक्ष अनिल मिश्रा, वरिष्ठ पत्रकार डॉ. मयंक भार्गव, वरिष्ठ पत्रकार संजय द्विवेदी, धीरू मिश्र, रमाकांत अवस्थी, सुरेंद्र दुबे, दुर्गेश नंदिनी, विकास मिश्रा, शेखर सुमण आदि स्वजातीय बंधु मौजूद थे।

भगवान परशुराम के जन्मोत्सव पर निकाली शोभायात्रा

बैतूल। ब्राह्मणों के आराध्य देव भगवान परशुराम के जन्मोत्सव को जिलेभर में धूमधाम के साथ मनाया गया। सबसे पहले परशुरामजी के जन्मोत्सव पर 16 अप्रैल को विशाल रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें बड़ी संख्या में विप्र समाज के युवाओं ने भाग लिया। उसके बाद भगवान परशुराम चौक पर स्वच्छता अभियान और फिर शनिवार शाम को दुर्गा मंदिर कोठीबाजार से भव्य शोभायात्रा निकाली गई थी। यह शोभायात्रा कोठीबाजार स्थित दुर्गा मंदिर प्रांगण से शुरू होकर लल्ली चौक, बस स्टैंड होते हुए लगभग दो किमी का सफर तय करते हुए गंज माता मंदिर पर समाप्त हुई। भव्य शोभायात्रा में भगवान परशुराम के प्रमुख अस्त्र और शक्ति के प्रतीक फरसे को लेकर तथा भक्तिगीतों, भजनों के साथ ब्राह्मण समाज के सदस्यों ने बड़ी संख्या में भाग लिया। खासकर महिलाओं की भी बड़ी उपस्थिति दर्ज की गई। युवा भगवान परशुराम की झांकियों में सजे हुए थे, ब्राह्मण समाज के परिजनों ने बढ़-चढ़कर इस शोभायात्रा में भाग लेकर इसका आकर्षण दुगुना बना दिया। शोभायात्रा में ब्राह्मण समाज के परिजनों ने बारी-बारी से भारी-भरकम स्टील के फरसे को उठाकर भगवान परशुराम के नाम का जयकारा लगाया। कोठीबाजार से लेकर गंज तक पूरा शहर ब्राह्मण एकता और शक्ति से गूंज उठा।शोभायात्रा मार्ग पर विभिन्न स्थानों पर समाजजनों और अन्य समाज के लोगों ने भी पुष्प वर्षा कर शोभायात्रा का स्वागत किया। पूरे रास्ते जयकारों और भक्ति गीतों से वातावरण भक्तिमय बना रहा।

जल गंगा संवर्धन अभियान से जल संरक्षण की दिशा में हुआ अभूतपूर्व कार्य

विभिन्न जिलों से मिल रहे हैं सकारात्मक परिणाम

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में प्रदेश में संचालित जल गंगा संवर्धन अभियान जल संरक्षण, पर्यावरण संवर्धन और ग्रामीण विकास का प्रभावी माध्यम बनकर उभरा है। अभियान के तहत जल स्त्रोतों के पुनर्जीवन और नई जल संरचनाओं के निर्माण को गति मिली है। जनभागीदारी से जल प्रबंधन सशक्त हुआ है। इसके परिणामस्वरूप प्रदेश के विभिन्न जिलों में जल उपलब्धता में वृद्धि हुई है, कृषि उत्पादन में सुधार हुआ है और जैव विविधता को संरक्षण मिला है। साथ ही ग्रामीण अर्थव्यवस्था भी सुदृढ़ हुई है और लोगों की आजीविका में सकारात्मक परिवर्तन आया है।

छिंदवाड़ा- पालाचौरई में तालाब निर्माण से बढ़ी कृषि उत्पादकता

छिंदवाड़ा जिले के विकासखंड जुन्नारदेव का ग्राम पालाचौरई हरियाली और समृद्धि की मिसाल बनकर उभरा है। अभियान में ग्राम में जल संरचनाओं के निर्माण और पुराने जल स्त्रोतों के पुनर्जीवन को प्राथमिकता दी गई। मत्स्य पालन तथा पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग के समन्वित प्रयासों से आधा एकड़ से लेकर ढाई एकड़ तक के तालाबों का निर्माण किया गया, जिससे वर्षभर जल उपलब्धता सुनिश्चित हुई है।जल स्तर में वृद्धि का सीधा लाभ कृषि क्षेत्र को मिला है। पूर्व में वर्षा पर निर्भर रहने वाले किसान अब सिंचित खेती कर रहे हैं। वर्तमान में किसान 3 फसलें लेकर उत्पादन और आय दोनों में वृद्धि कर रहे हैं। रबी सीजन में गेहूं, चना, मसूर, सरसों, मटर का उत्पादन बढ़ा है। जायद सीजन में मूंग एवं उड़द की खेती भी संभव हो पाई है। इसके अतिरिक्त किसानों ने मछली पालन, मोती उत्पादन एवं सिंघाड़ा जैसी गतिविधियों से आय के वैकल्पिक स्त्रोत विकसित किए हैं। ग्राम की आर्थिक स्थिति मजबूत हुई है, पलायन में कमी आई है और युवा कृषि से जुड़कर आत्मनिर्भर बन रहे हैं।

डॉ. जवाहर कर्नावट लंदन में वातायन शिखर सम्मान से होंगे अलंकृत

भोपाल । प्रदेश के प्रखर वक्ता, लेखक तथा अंतरराष्ट्रीय हिंदी केंद्र रबींद्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय भोपाल के निदेशक डॉ. जवाहर कर्नावट को वातायन यूरोप द्वारा वातायन शिखर सम्मान से लंदन में सम्मानित किया जाएगा। उन्हें यह 'लाइफ टाइम अचीवमेंट अवॉर्ड' 29 अप्रैल 2026 की शाम हाउस आफ लॉर्ड्स (ब्रिटिश संसद) में आयोजित सम्मान समारोह में प्रदान किया जाएगा। वातायन की स्थापना भारत -ब्रिटेन के मध्य शांति सद्भाव के लिए 2003 में लंदन में हुई थी । यह संस्था विश्व की अनेक प्रसिद्ध साहित्यिक संस्थाओं से भी जुड़ी हुई है और प्रतिवर्ष भाषा,कला, साहित्य, पत्रकारिता के लिए भारत एवं यूरोप के चुनिंदा व्यक्तित्वों को सम्मानित करती है। डॉ. कर्नावट का चयन हिंदी भाषा एवं पत्रकारिता के क्षेत्र में उनके वैश्विक योगदान को दृष्टिगत रखते हुए किया गया है। इसके पूर्व यह सम्मान भारत के पूर्व शिक्षा मंत्री श्री रमेश पोखरियाल निशंक स्वीडन के प्रोफेसर हाइंस वेसलर आदि को भी प्रदान किया जा चुका है। डॉ. कर्नावट के साथ ही वातायन साहित्य सम्मान बी.बी.सी. लंदन की पूर्व कार्यक्रम प्रस्तोता डॉ. अर्चना शर्मा, तथा ब्रिटेन की भाषाविद सुश्री सुरेखा चोफला तथा लेखिका शैल अग्रवाल को भी प्रदान किया जाएगा।

आंगनबाड़ी केन्द्र में मनाया पोषण पखवाड़ा

बैतूल। शहर के भगतसिंह वार्ड- 2 में पोषण पखवाड़ा कार्यक्रम आयोजित किया गया। 9 अप्रेल से शुरू यह कार्यक्रम आगामी 23 अप्रैल तक चलेगा। जिसके अंतर्गत गर्भवती धात्री माताओं एवं जन्म से 2 वर्ष तक के बच्चों का वजन, ऊंचाई, टीकाकरण एवं स्वास्थ्य संबंधी जानकारी प्रदान करना एवं 3-6 वर्ष तक के बच्चों के समुचित विकास के आवश्यक पोषक तत्वों की जानकारी अभिभावकों को प्रदान करना है। इस संबंध में आंगनवाड़ी कार्यकर्ता श्रीमती कौशल्या हजारे ने बताया कि जीवन के पहले 6 वर्ष में बच्चों के मस्तिष्क का अधिकतम विकास हो जाता है। स्वच्छ भोजन, बेहतर स्वास्थ्य, मजबूत शरीर, जिससे बच्चों का हर कदम पोषण की ओर अग्रसर हो। इस कार्यक्रम के दौरान आंगनवाड़ी सहायिका सरिता मालवी, स्वास्थ्य विभाग से एएनएम सरोज सिंह बघेल, गभर्वती धात्री तथा 3-6 वर्ष तक के बच्चे उपस्थित थे।

आंगनबाड़ी में घुसी तेज रफ्तार बलेनो, बच्चों के प्लेग्राउंड तक पहुंची, ड्राइवर फरार

बैतूल। शहर के महावीर वार्ड स्थित आंगनवाड़ी केंद्र में सोमवार दोपहर एक बड़ा हादसा टल गया। एक तेज रफ्तार बलेनो कार अनियंत्रित होकर सडक़ से उतर गई और केंद्र की बाउंड्री तोड़ते हुए बच्चों के प्ले ग्राउंड तक जा पहुंची। घटना के समय बच्चे केंद्र में मौजूद नहीं थे, जिससे एक बड़ा हादसा टल गया। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, कार की रफ्तार काफी तेज थी। केंद्र में घुसने से पहले कार ने वहां बने भगवान गणेश मंदिर के चबूतरे को भी क्षतिग्रस्त कर दिया। टक्कर इतनी जोरदार थी कि कार की दिशा पश्चिम से पूर्व की ओर बदल गई। बताया जा रहा है कि कार में दो लोग सवार थे। घटना के तुरंत बाद वे वाहन को लॉक कर मौके से फरार हो गए। आंगनवाड़ी कार्यकर्ता सुनीता तिवारी ने इस मामले की शिकायत पुलिस में की है। सूचना मिलने पर डायल 100 की टीम मौके पर पहुंची और घटनास्थल का निरीक्षण किया।

मुख्यमंत्री ने कृषि मंत्री के निवास पर पहुंचकर वर-वधू को दिया आशीर्वाद

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने सोमवार को मुरैना में किसान कल्याण एवं कृषि विकास मंत्री श्री ऐदल सिंह कंषाना के निवास पहुंचकर उनकी नातिनी आयुष्मति दीपिका (पुत्री स्वर्गीय श्री भूरा सिंह कंषाना) एवं आयुष्मान यतेन्द्र (पुत्र श्री राव राजेश्वर सिंह, निवासी सिरसौद दयेली, ग्वालियर) को विवाह अवसर पर आशीर्वाद प्रदान किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने नवदंपति को शुभाशीष देते हुए उन्हें उपहार भी भेंट किए और उनके सुखद एवं समृद्ध वैवाहिक जीवन की कामना की।इस अवसर पर वरिष्ठ विधायक एवं प्रदेशाध्यक्ष श्री हेमंत खंडेलवाल, सांसद श्री शिव मंगल सिंह तोमर, महापौर श्रीमती शारदा सोलंकी सहित जनप्रतिनिधि एवं परिजन उपस्थित थे।

सक्रिय हुए 4 खतरनाक सिस्टम ! भीषण लू के बीच 23 अप्रैल से शुरू होगी 'आफत की गर्मी'

भोपाल-रायसेन, बैतूल में बादल; रतलाम-खरगोन में बूंदाबांदी

भोपाल (नप्र)। प्रदेश में इस वक्त आसमान से आग बरस रही है। पारा 45 डिग्री के निकट पहुंच गया है। एक तरफ राजस्थान से आ रही गर्म हवाओं ने ग्वालियर-सागर संभाग को 'भट्ठी' बना दिया है, तो दूसरी तरफ बिहार से आ रही नमी विंध्य और महाकौशल में आंधी-तूफान की स्थिति बना रहीं हैं। अगले 48 घंटों में एमपी के 20 जिलों में 'हीटवेव' का टॉर्चर रहेगा, जबकि 23 अप्रैल की रात मौसम में बदलाव नजर आएगा। भोपाल, रायसेन और बैतूल में आज सोमवार सुबह से बादल छाए हैं। रायसेन में रात में बूंदाबांदी भी हुई। धार जिले में तेज धूप निकली है। शहर की सड़कों पर सन्नाटा पसरा है। लोग केवल जरूरी काम होने पर ही घरों से बाहर निकल रहे हैं।

मध्य प्रदेश में मौसम का 'डबल अटैक' पड़ रहा है। पारा राकेट की रफ्तार से उछल रहा है। बीते 24 घंटों में 45एष्ट के निकट पहुंच रहा है। नौगांव में 44.3एष्ट डिग्री तक पहुंच गया है। ग्वालियर-चंबल से लेकर बुंदेलखंड तक राजस्थानी हवाएं जमकर तपा रहीं है। आधे से अधिक हिस्से में लू के हालात बन गए हैं। इधर कुछ हिस्सों में बीते दो दिन से गरज-चमक के साथ बारिश की स्थिति बन रही है। मौसम विभाग के अनुसार अगले तीन दिन में मौसमी बदलाव नजर आएगा।

झुलसाने वाली गर्मी के बीच आंधी-बारिश का अलर्ट

अप्रैल का महीना अपने तीखे तेवर दिखा रहा है। राज्य में इस समय तीन अलग-अलग मौसम प्रणालियां एक साथ सक्रिय हैं, जिसके कारण प्रदेश के आधे हिस्से में भीषण लू चल रही है, तो वहीं कुछ हिस्सों में गरज-चमक के साथ आंधी और बूंदाबांदी की स्थिति बनी हुई है। मौसम विभाग ने अगले 5 दिनों के लिए 'येलो अलर्ट' जारी किया है।मौसम वैज्ञानिकों के अनुसार, इस समय बिहार से मध्य प्रदेश तक एक ट्रफ लाइन गुजर रही है। साथ ही, राजस्थान के ऊपर एक चक्रवात और महाराष्ट्र के ऊपर एंटी-साइक्लोन सक्रिय है। इन प्रणालियों के मिलन से हवाओं में अस्थिरता पैदा हो गई है, जिससे दिन में तपती गर्मी और शाम को अचानक आंधी का दौर शुरू हो जाता है।

प्रदेश के अलग-अलग इलाकों में कैसा रहेगा मौसम

ग्वालियर-चंबल में सबसे ज्यादा तपिश रहेगी। ग्वालियर, मुरैना और शिवपुरी में पारा 42 से 44 डिग्री तक पहुंच सकता है। यहां राजस्थान की ओर से आ रही गर्म हवाओं के कारण लू का सबसे ज्यादा असर रहेगा। दोपहर में धूल भरी आंधी चलने की भी संभावना है।

भोपाल-इंदौर संभाग में शाम को राहत, दिन में आफत जैसी स्थिति बनेगी। भोपाल सहित इंदौर, उज्जैन और सीहोर में तापमान 40 से 43 डिग्री के बीच बना रहेगा। महाराष्ट्र के एंटी-साइक्लोन की वजह से दिन में लू जैसे हालात रहेंगे, लेकिन स्थानीय प्रभाव से शाम को हल्की आंधी चल सकती है।

जबलपुर-शहडोल-रीवा संभागों में आंधी और बारिश का अलर्ट दिया गया है। पूर्वी मध्य प्रदेश में ट्रफ लाइन का असर ज्यादा है। यहां 38 से 41 डिग्री तापमान के साथ 40-60 किमी/घंटा की रफ्तार से तेज हवाएं चल सकती हैं। जबलपुर और शहडोल संभाग में कहीं-कहीं गरज-चमक के साथ हल्की बारिश की भी संभावना है।

बुंदेलखंड और दक्षिण मध्य प्रदेश में सागर, छतरपुर और टीकमगढ़ में धूल भरी आंधी और भीषण गर्मी रहेगी। वहीं बैतूल और छिंदवाड़ा जैसे दक्षिणी जिलों में नमी के कारण बादल छाए रहेंगे और हल्की बूंदाबांदी हो सकती है।

23 अप्रैल से फिर बदलेगा मिजाज

रिटायर्ड मौसम विज्ञानी डॉ. शैलेंद्र नायक के अनुसार 23 अप्रैल को एक नया पश्चिमी विक्षोभ हिमालयी क्षेत्र में प्रवेश करेगा। इसका असर मध्य प्रदेश में 24 और 25 अप्रैल को दिखाई देगा, जिससे तापमान में थोड़ी गिरावट आ सकती है और आंधी-बारिश की गतिविधियां तेज होंगी।

संक्षिप्त समाचार

मुख्यमंत्री स्वेच्छानुदान से दो हितग्राहियों को उपचार हेतु 1.50 लाख की आर्थिक सहायता स्वीकृत

विदिशा (निप्र)। सामान्य प्रशासन विभाग से प्राप्त आदेश के अनुपालन में मुख्यमंत्री स्वेच्छानुदान मद अंतर्गत वित्तीय वर्ष 2026-2027 हेतु दो हितग्राहियों को उपचार के लिए आर्थिक सहायता राशि स्वीकृत की गई है। कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता द्वारा संबंधित अस्पतालों के लिए जारी आदेश के अनुसार विदिशा जिले के श्री इदरीस अहमद (पिता सिद्दीकी अहमद) को उनके उपचार हेतु भोपाल स्थित एशियन ग्लोबस लिवर एंड गैस्ट्रोएंटरोलॉजी सेंटर हॉस्पिटल में उपचार के लिए 50 हजार रुपए की सहायता राशि स्वीकृत की गई है। वहीं श्रीमती राधाबाई रघुवंशी पति श्री विजय सिंह रघुवंशी, निवासी गुलाबगंज को गैस्ट्रोकेयर मल्टी स्पेशियलिटी हॉस्पिटल भोपाल में उपचार हेतु एक लाख रुपए की आर्थिक सहायता प्रदान की गई है। इस प्रकार कुल 02 हितग्राहियों को उपचार सहायता के रूप में 1,50,000 (एक लाख पचास हजार रुपए मात्र) की राशि स्वीकृत की गई है। उक्त राशि संबंधित अस्पतालों के बैंक खातों में सीधे भुगतान किए जाने के निर्देश दिए गए हैं। यह सहायता मुख्यमंत्री स्वेच्छानुदान योजना के अंतर्गत जरूरतमंद व्यक्तियों को स्वास्थ्य उपचार में राहत प्रदान करने के उद्देश्य से दी जाती है, जिससे गंभीर बीमारियों से जूझ रहे मरीजों को आर्थिक संबल मिल सके।

पेयजल समस्याओं के निराकरण के लिए पीएचई विभाग द्वारा लगाए जा रहे शिविर

सीहोर (निप्र)। लोक स्वास्थ्य यांत्रिकीय विभाग द्वारा सीहोर जिले में पेयजल समस्याओं के निराकरण के लिए शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। शिविरों में आंगनबाड़ी कार्यकर्ता, आशा कार्यकर्ता को एफटी के किट के माध्यम से पेयजल परीक्षण और पंप ऑपरेटर्स को योजना के संचालन का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। साथ ही पेयजल स्त्रोतों के आस-पास सफाई रखने के लिए प्रेरित किया जा रहा है। पेयजल समस्याओं के निराकरण के लिए स्थापित कंट्रोल रूम में 203 शिकायतें प्राप्त हुई है, जिनमें से लगभग 183 शिकायतों का त्वरित एवं सम्यक निराकरण किया जा चुका है। सीहोर जिले में विभिन्न विकास खण्डों में 15 नलकूपों की सफाई का कार्य पूर्ण कराया गया है। विगत 01 माह मे जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में स्थापित लगभग 58 हैंडपंपों में नए राइजर पाइप बढाकर हैंडपंपों को चालू किया गया है। इसके साथ ही ऐसे हैंडपंप जिनका जल स्तर कम होने के कारण आंशिक रूप से क्रियाशील थे, उनमें 26 सिंगल फेज मोटर पंप डालकर सुचारू पेयजल आपूर्ति प्रारम्भ की गई है।

भादाकुई के ओम साई वेयरहाउस उपार्जन केंद्र को श्री ओम वेयरहाउस गुलरपुरा पर किया गया स्थानांतरित

सीहोर (निप्र)। कलेक्टर श्री बालागुरू के. द्वारा किसानों की सुविधा को दृष्टिगत रखते हुए भैरूंदा के भादाकुई स्थित ओम साई वेयरहाउस उपार्जन केंद्र को निरस्त कर गुलरपुरा स्थित श्री ओम वेयरहाउस पर स्थानांतरित कर दिया गया है। जिन किसानों ने आगामी तारीखों के लिए इस उपार्जन केंद्र पर अपने स्लॉट बुक किए है वह तारीख यथावत रहेंगी, केवल उपार्जन केंद्र बदला गया है। यानी अब किसान ओम साईं वेयरहाउस के स्थान पर श्री ओम वेयरहाउस पर अपनी उपज विक्रय करेंगे। जिला उपार्जन प्रभारी आकाश चंदेल ने बताया कि जांच के दौरान भादाकुई के ओम साई वेयरहाउस उपार्जन केंद्र पर स्लॉट बुकिंग से अधिक खरीदी एवं आगामी दिवसों के स्लॉट बुकिंग वाले कृषकों से खरीदी करने की अनियमितता पाई गई थी, जिस पर त्वरित कार्रवाई करते हुए कलेक्टर श्री बालागुरू के. ने इस उपार्जन केंद्र को निरस्त कर स्थानांतरित कर दिया, ताकि किसानों को कोई परेशानी न हो। कलेक्टर ने निर्देश दिए हैं कि नवीन उपार्जन केंद्र श्री ओम वेयरहाउस पर किसानों से खरीदी यथावत जारी रखी जाए, ताकि उपार्जन प्रक्रिया में कोई रुकावट न हो। इसके साथ ही कलेक्टर श्री बालागुरू के. द्वारा इस अनियमितता के लिए गोदाम संचालक श्री चतरनारायण महेश्वरी, कृषि विभाग की एईओ श्रीमती पायल नागर और भादाकुई सहकारी समिति के प्रबंधक को कारण बताओ नोटिस जारी किए गए हैं। नोटिस का 03 दिन में जवाब नहीं देने पर संबंधितों के विरूद्ध कार्रवाई की जाएगी।

यातायात नियम तोड़ने वालों पर सख्ती: निलंबित ड्राइविंग लाइसेंस बहाल कराने के लिए रिफ्रेशर ट्रेनिंग अनिवार्य

विदिशा (निप्र)। यातायात नियमों का उल्लंघन करने वाले वाहन चालकों के विरुद्ध सख्त कार्रवाई करते हुए अब निलंबित ड्राइविंग लाइसेंस को पुनः चालू कराने के लिए रिफ्रेशर ट्रेनिंग कोर्स अनिवार्य कर दिया गया है। मोटरयान अधिनियम के तहत वाहन चेकिंग के दौरान गंभीर उल्लंघन पाए जाने पर चालानी कार्रवाई के साथ-साथ चालक का ड्राइविंग लाइसेंस जब्त कर उसे निलंबित अथवा निरस्त करने के लिए परिवहन कार्यालय भेजने का प्रावधान है। जिला परिवहन अधिकारी द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार वित्तीय वर्ष 2025-26 (01 अप्रैल 2025 से 31 मार्च 2026) के दौरान यातायात नियमों का उल्लंघन करने वाले 121 वाहन चालकों के ड्राइविंग लाइसेंस निलंबित किए गए हैं। जिन प्रमुख उल्लंघनों पर यह कार्रवाई की जाती है, उनमें तेज गति से वाहन चलाना या रेसिंग करना, खतरनाक तरीके से वाहन चलाना, नशे की हालत में वाहन चलाना, असुरक्षित स्थिति में वाहन चलाना, दोपहिया वाहन पर हेलमेट या अन्य सुरक्षा उपकरणों का उपयोग न करना तथा एम्बुलेंस जैसे आपातकालीन वाहनों को रास्ता न देना शामिल हैं। परिवहन विभाग ने स्पष्ट किया है कि अब ऐसे निलंबित लाइसेंसों की बहाली तब तक नहीं की जाएगी, जब तक संबंधित वाहन चालक किसी मान्यता प्राप्त संस्था से रिफ्रेशर ट्रेनिंग कोर्स पूर्ण नहीं कर लेता। सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय, भारत सरकार के निर्देशानुसार 20 अप्रैल से यह व्यवस्था लागू कर दी गई है, जिसके तहत बिना रिफ्रेशर कोर्स के लाइसेंस का निलंबन स्वतः समाप्त होने की प्रक्रिया समाप्त कर दी गई है। अधिकारियों ने बताया कि यह कदम सड़क सुरक्षा को बढ़ावा देने और वाहन चालकों को यातायात नियमों के प्रति जागरूक बनाने के उद्देश्य से उठाया गया है। भविष्य में नियमों का उल्लंघन करने वाले चालकों को न केवल दंडात्मक कार्रवाई का सामना करना पड़ेगा, बल्कि उन्हें अनिवार्य रूप से प्रशिक्षण प्राप्त कर सुरक्षित ड्राइविंग के प्रति जागरूकता के लिए हर संभव प्रयास किए जा रहे हैं।

प्रतिस्पर्धा के युग में स्वंय की प्रतिभा को निखारें विद्यार्थी : कलेक्टर

जिला स्तरीय मेधावी विद्यार्थी सम्मान समारोह आयोजित

प्रावीण्य सूची में अव्वल स्थान पाने वाले विद्यार्थियों को मिलेगा किंडल ई बुक रीडर

हरदा (निप्र)। कलेक्टर श्री सिद्धार्थ जैन ने कहा कि प्रतिस्पर्धा के युग में विद्यार्थियों को स्वयं की प्रतिभा निखारना जरूरी है। इसके लिए वह पूरी मेहनत के साथ अध्ययन करें। साथ ही अपने उज्ज्वल कैरियर के लक्ष्य पर फोकस करें। श्री जैन शनिवार को कलेक्ट्रेट में आयोजित जिला स्तरीय मेधावी विद्यार्थी सम्मान समारोह को संबोधित कर रहे थे। समारोह में 10वीं एवं 12वीं बोर्ड कक्षा में राज्य तथा जिले की प्राविण्य सूची में स्थान पाने वाले 15 छात्र छात्राओं एवं उनके अभिभावकों को सम्मानित किया गया। अपने संबोधन में कलेक्टर ने आगे कहा कि महाविद्यालयों में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थी स्वयं में बेहतर तार्किक क्षमता विकसित करें। साथ ही अध्ययन के लिए चयनित विषयों को अपने जेहन में उतारें। अध्ययन में पूर्णता लाने के लिए अपने विषय से संबंधित ज्यादा से ज्यादा प्रश्न पूछने की क्षमता विकसित करें। दसवीं कक्षा उत्तीर्ण विद्यार्थी अपनी रूचि के बिषय का चयन करें । उन्होंने कहा कि प्रावीण्य सूची में अव्वल स्थान पाने वाले विद्यार्थियों को किंडल ई बुक रीडर भी प्रदान की जाएगी। इस बुक रीडर से विद्यार्थियों को उपयोगी किताबों को अध्ययन करने में मदद मिलेगी। साथ ही विद्यार्थियों के लिए कैरियर काउंसलिंग सत्र आयोजित कर उन्हें बेहतर कैरियर निर्माण के लिए आवश्यक मार्गदर्शन प्रदान किया जाएगा। कलेक्टर ने कहा कि विद्यार्थी एडवांस कोडिंग एवं एआई कोर्सेज से जरूर जुड़ें। अंत में उन्होंने संबंधित शालाओं के शिक्षकों, विद्यार्थियों एवं उनके अभिभावकों को शुभकामनाएं दीं। साथ ही विद्यार्थियों के उज्जवल भविष्य की कामना की। समारोह में राज्य स्तर एवं जिला स्तर की प्रावीण्य सूची में स्थान पाने वाले जिन विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया उनमें गौरव विद्या निकेतन रहटगांव की छात्रा कुमारी थल वंदना मल्हारे, लक्ष्मी बाई विद्या मंदिर टिमरनी के छात्र प्रवीण मालाकार, सनराइज स्कूल टिमरनी की छात्रा कुमारी हर्षिता चौरसिया, तक्षशिला एकेडमी हरदा की छात्रा कुमारी तनवी शर्मा, शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय टिमरनी की छात्रा कुमारी शीतल राजपूत, रेड फ्लावर स्कूल नकवाड़ा की छात्रा कुमारी दिशा राजपूत, शासकीय बालक उच्चतर माध्यमिक विद्यालय टिमरनी के छात्र जय राठौड़, मां शारदा विद्यापीठ हरदा की छात्रा कुमारी आयुषी शर्मा, हरदा स्कूल आफ एजुकेशन हरदा की छात्रा कुमारी भूमि नागले, डॉ. बी.आर. अंबेडकर शासकीय उत्कृष्ट विद्यालय हरदा के छात्र श्री मोहित दुधे, महर्षि ज्ञानपीठ स्कूल हरदा की छात्रा कुमारी सिमरन यादव, शासकीय कन्याउच्चतर माध्यमिक विद्यालय सिराली की छात्रा कु. निषाद तथा इंपीरियल पब्लिक स्कूल खिरकिया की छात्रा कुमारी फाल्गुनी भैसारे शामिल है। कार्यक्रम के अंत में जिला शिक्षा अधिकारी श्री डी. एस. रघुवंशी ने आभार व्यक्त किया इस दौरान सर्व शिक्षा अभियान के जिला कार्यक्रम समन्वयक श्री बलवंत पटेल ने कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की।

कलेक्टर ने जनगणना 2027 के तहत स्व-गणना पोर्टल पर किया ऑनलाइन पंजीकरण

सीहोर (निप्र)। कलेक्टर श्री बालागुरू के. ने कहा कि 16 अप्रैल से प्रदेश में जनगणना का शुभारंभ हो गया है। यह सिर्फ आंकड़ों की प्रक्रिया नहीं बल्कि हमारे देश के भविष्य को सही दिशा देने का महत्वपूर्ण कार्य है। जनगणना देश के विकास की नींव है। इस बार की जनगणना डिजिटल और आधुनिक तकनीक के साथ हो रही है। उन्होंने कहा कि जिले के नागरिकों को इसमें पूर्ण निष्ठा और सत्यता के साथ भाग लेना चाहिये। प्रदेश में 16 से 30 अप्रैल तक ऑनलाइन स्व-गणना का कार्य हो रहा है। एक से 30 मई तक मकान सूचीकरण होगा। यह प्रक्रिया डिजिटल रूप से होगी। कलेक्टर श्री बालागुरू के ने स्व-गणना पोर्टल पर स्वयं का प्रारंभिक पंजीकरण किया। कलेक्टर श्री बालागुरू के ने कहा कि यह जनगणना हमारी अगली पीढ़ी के उज्जवल भविष्य के लिए है। प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है कि जनगणना में वह सही, सटीक और पूर्ण जानकारी दे।

अग्निदुर्घटना पीड़ित परिवारों को खाद्यान्न सामग्री उपलब्ध कराई

हरदा (निप्र)। टिमरनी विकासखंड के तहसील रहटगांव के वनाँचल के ग्राम बड़झिरी मे गत दिवस अचानक आग लगने से 08 परिवारो के बसें घर जल गए, आगजनी की इस दुखद घटना मे परिवार के पास तन पर पहने कपड़ो के अलावा कुछ नहीं बचा, पूर्ण रूप से घर जलकर नष्ट हो गए तथा खाद्यान्न, कपडे, बर्तन सभी आगजनी मे नष्ट हो गए। कलेक्टर श्री सिद्धार्थ जैन के निर्देश पर शनिवार को उचित मूल्य दुकान के विक्रेता श्री आमीन खान एवं सहायक विक्रेता श्री भैयालाल परते ने ग्राम बड़झिरी में पीड़ित परिवारों को प्रति परिवार 50 किलोग्राम खाद्यान्न उपलब्ध कराया।

"न्याय सेवा में उत्कृष्टता का नया अध्याय

जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, हरदा को आईएसओ 9001: 2015 एवं 14001: 2015 प्रमाण पत्र प्राप्त हुआ"

हरदा (निप्र)। प्रधान जिला न्यायाधीश एवं अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण श्री अरविंद रघुवंशी के मार्गदशन में जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, हरदा को अंतर्राष्ट्रीय गुणवत्ता मानकों के अनुरूप कार्य करने तथा सेवा प्रदान करने के परिणामस्वरूप इंटरनेशनल स्टैण्डर्ड आग्रेनाईजेशन, नई दिल्ली के प्रतिनिधि श्री शिवांशु तिवारी द्वारा अध्यक्ष श्री रघुवंशी को आईएसओ प्रमाण पत्र क्रमांक 9001: 2015 एवं 14001: 2015 औपचारिक रूप से प्रदान किया गया।

कार्यक्रम के दौरान अध्यक्ष श्री रघुवंशी ने अपने उद्बोधन में व्यक्त किया कि आज शनिवार 18 अप्रैल को कार्यालय जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, हरदा में एक ऐतिहासिक एवं गौरवपूर्ण अवसर का पल है। यह प्रमाणन इस बात का प्रमाण है कि जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, हरदा द्वारा पारदर्शी प्रशासनिक व्यवस्था, गुणवत्तापूर्ण विधिक सेवाएँ, पर्यावरण संरक्षण के मानकों का पालन जनहितकारी योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन सफलतापूर्वक सुनिश्चित किया जा रहा है। न्यायाधीश व सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण हरदा श्री चंद्रशेखर राठौर ने कहा कि यह उपलब्धि प्रधान जिला व सत्र न्यायाधीश एवं अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, हरदा श्री रघुवंशी के कुशल मार्गदर्शन एवं सतत प्रयासों का परिणाम है। कार्यालय जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, हरदा आईएसओ प्रमाण पत्र प्राप्त करने वाला प्रदेश में चौथा प्राधिकरण बन गया है। उन्होने कहा कि सुधार एक निरंतर प्रक्रिया है जो आगे भी सतत् रूप से जारी रहेगी। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण समाज के अंतिम व्यक्ति तक विधिक सहायता पहुंचाने के लिए निरंतर प्रयासरत है। कार्यक्रम में आईएसओ के प्रतिनिधि श्री शिवांशु तिवारी ने अपने उद्बोधन में कहा कि आईएसओ प्रमाण पत्र का मुख्य उद्देश्य कार्यालय द्वारा किए जाने वाले कार्यों को व्यक्ति उन्मुखी ना होकर सेवा उन्मुखी किया जाना है। उनके द्वारा आईएसओ प्रमाण पत्र प्राप्ति हेतु निर्धारित मापदण्डों की जानकारी देते हुए बताया गया कि कार्यालय जिला विधिक सेवा प्राधिकरण हरदा द्वारा इन मापदण्डों को पूरा किया गया है, जिसके कारण उन्हें आईएसओ प्रमाण पत्र प्रदान किया जा रहा है। कार्यक्रम में विशेष न्यायाधीश श्री जयदीप सिंह, प्रधान न्यायाधीश कुटुंब न्यायालय श्री सुधीर कुमार चौधरी, तृतीय जिला न्यायाधीश श्री निसार अहमद, मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट श्री लवकेश सिंह, जिला रजिस्ट्रार श्री एस.के. भदकारिया, न्यायिक मजिस्ट्रेट प्रथम श्रेणी श्रीमती चेतना रूसिया, न्यायिक मजिस्ट्रेट प्रथम श्रेणी श्री प्रेमदीप शाह, जिला विधिक सहायता अधिकारी श्री सौरभ कुमार दुबे, अध्यक्ष जिला अधिवक्ता संघ श्री जगदीश विश्वकर्मा, सचिव जिला अधिवक्ता संघ हरदा श्री शैलेन्द्र जोशी, संघ के कार्यकारिणी सदस्यगण, चीफ लीगल एड डिफेंस काउंसिल श्री जवाहर पारे, डिप्टी चीफ लीगल एड डिफेंस काउंसिल श्री अनीस मोहम्मद खान, असिस्टेंट लीगल एड डिफेंस काउंसिल श्रीमती अंतिमा चोलकर, जिला प्राधिकरण के कर्मचारीगण उपस्थित रहे।

जिले में स्वगणना को लेकर उत्साह, डिजिटल जनगणना में बढ़-चढ़कर भागीदारी की अपील

बैतूल (निप्र)। जिले में आगामी जनगणना 2027 के तहत स्वगणना (सेल्फ एन्यूमरेशन) को लेकर उत्साह का माहौल देखा जा रहा है। जिला योजना अधिकारी एवं अतिरिक्त जिला जनगणना अधिकारी श्री नरेन्द्र कुमार गौतम ने बताया कि इस बार की जनगणना पूरी तरह डिजिटल होगी, जिसमें स्वगणना एक अहम और आकर्षक पहल है। मध्यप्रदेश में 16 अप्रैल से इसकी शुरुआत हो चुकी है, जो 30 अप्रैल तक चलेगी। उन्होंने बताया कि जिले में स्वगणना का विधिवत प्रारंभ बैतूल कलेक्टर एवं प्रमुख जनगणना अधिकारी डॉ. श्री सौरभ संजय सोनवणे द्वारा स्वगणना करके स्व्य आई डी प्राप्त कर की गयी थी और जिलेवासियों से इसी अभिनव पहल का अधिकतम प्रयोग कर जनगणना में अपनी सहभागिता करने की विनम्र अपील की गई।

इसी प्रकार अपर कलेक्टर एवं जिला जनगणना अधिकारी श्रीमति वंदना जाट द्वारा स्वगणना कर जिला कलेक्ट्रेट में स्थापित स्वगणना सेल्फी पाईंट में सेल्फी लेकर समस्त अधिकारियों, कर्मचारियों और जिले वासियों को स्वगणना की प्रेरक अपील की गई। इसी कड़ी में आगे जनगणना समन्वय समिति की सदस्य और जिला सूचना अधिकारी श्रीमती रचना श्रीवास्तव, डिप्टी कलेक्टर श्रीमती तृप्ति पटेरिया आदि वरिष्ठ अधिकारियों सहित विभिन्न जिला प्रमुखों जैसे जिला खनिज अधिकारी श्री मनीष पालेवार, अन्वेषक योजना श्री राकेश आहूजा आदि ने भी स्वगणना करके डिजीटल जनगणना की इस सरल तकनीकी प्रक्रिया के माध्यम से प्रथम चरण मकान सूचीकरण की प्रक्रिया स्वगणना के रूप में पूर्ण करने की अपील की है।

विदित हो कि स्वगणना में कोई भी भारतीय नागरिक भारत की भौगोलिक सीमा के भीतर आधिकारिक स्वगणना पोर्टल पर जाकर विधिवत 33 प्रश्नों का जवाब स्वयं भर सकता है। सभी प्रश्नों के जवाब भरने और भरे गये जवाब से संतुष्ट होने पर उन्हें सबमिट करने पर पोर्टल से एक स्वगणना आई डी जनरेट होती है, जिसे स्व्य आईडी कहा जाता है। 1 मई से 30 मई 2026 के मध्य जब प्रगणक आपके घर जनगणना के लिए आये तो प्रगणक को यह स्व्य आईडी प्रदाय किया जाना होता है। प्रगणक भरी गयी जानकारी का सत्यापन करता है और जानकारी पुष्ट होने पर सत्यापित कर देता है। अगर किसी कारण वश निर्धारित प्रश्नों में से किसी प्रश्न का जवाब संपादित करना हो तो प्रगणक द्वारा ऐसा करके भी सही जानकारी संकलित की जा सकती है।

विद्यार्थियों और शिक्षकों ने रखे जल संरक्षण पर अपने विचार

जल संरक्षण के प्रति जागरूकता के लिए विद्यार्थी ने निकाली रैली

सीहोर (निप्र)। कलेक्टर श्री बालागुरू के. के निर्देशानुसार जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत जिले में अनेक जल संरक्षण गतिविधियां आयोजित की जा रही हैं। इसी क्रम में भैरूंदा के शासकीय सांदीपनि स्कूल में प्रेरणादायक कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यक्रम में जल के महत्व, संरक्षण और भविष्य के लिए इसकी आवश्यकता पर शिक्षकों एवं विद्यार्थियों ने अपने विचार साझा किए। इस अवसर पर सभी ने जल एवं जल स्त्रोतों के संरक्षण का संकल्प भी लिया।

एफटीके किट से पेयजल परीक्षण का दिया प्रशिक्षण

अभियान के अंतर्गत पीएचई विभाग द्वारा ग्राम भील खेड़ी सड़क आंगनवाड़ी कार्यकर्ता, सहायिका और आशा कार्यकर्ता को एफ़टीके किट के माध्यम से पेयजल परीक्षण का प्रशिक्षण दिया गया तथा पंप ऑपरेटर्स को वॉल्व वाइस योजना संचालन का प्रशिक्षण दिया गया। इसके साथ ही पेयजल स्त्रोतों के आस पास साफ़ सफ़ाई बनाए रखने के लिए प्रेरित किया गया।

जल संरक्षण के लिए निकाली गई जागरूकता रैली

सीहोर के पीएम एक्सीलेंस कॉलेज एवं शासकीय कन्या महाविद्यालय में अभियान के अंतर्गत जल संरक्षण के प्रति नागरिकों को जागरूक करने के लिए जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए। इस अवसर पर निबंध, भाषण और वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया और विद्यार्थियों द्वारा जागरूकता रैली भी निकाली गई।

सस्टेनेबल कृषि व समन्वित कार्ययोजना पर दिया जोर

कृषि उत्पादन (ए.पी.सी.) समूह की बैठक सम्पन्न

बैतूल (निप्र)। कलेक्ट्रेट सभागार में शनिवार को कलेक्टर डॉ. सौरभ संजय सोनवणे की अध्यक्षता में जिले के कृषि उत्पादन (ए.पी.सी.) समूह की बैठक आयोजित की गई। बैठक में कृषि एवं संबद्ध विभागों के जिला व विकासखण्ड स्तरीय अधिकारी, एफपीओ समूहों के प्रतिनिधि, कस्टम हायरिंग सेंटर के प्रतिनिधि तथा किसान संघ के पदाधिकारी उपस्थित रहे।

बैठक की शुरुआत कृषि विभाग की समीक्षा से हुई, जिसमें उप संचालक कृषि द्वारा विभागीय योजनाओं एवं गतिविधियों की जानकारी पॉवर पॉइंट प्रेजेंटेशन के माध्यम से प्रस्तुत की गई। ग्रीष्मकालीन फसलों में उचित सिंचाई संसाधनों के उपयोग के निर्देश दिए गए तथा मूंगफली और उड़द फसल का रकबा बढ़ाने की संभावनाओं पर चर्चा की गई।

कलेक्टर डॉ. सोनवणे ने जिले में सस्टेनेबल कृषि को बढ़ावा देने के लिए कार्ययोजना तैयार करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि किसान मृदा स्वास्थ्य के अनुरूप कृषि के साथ उद्यानिकी, मत्स्य पालन और पशुपालन को भी अपनाएं, जिससे आय में वृद्धि के साथ मृदा की गुणवत्ता भी बेहतर बनी रहे। उन्होंने 'पर ड्रॉप मोर क्रॉप 'की थीम पर उत्पादकता बढ़ाने तथा संतुलित एवं जैविक खाद के उपयोग को प्रोत्साहित करने पर जोर दिया। खरीफ फसलों की समीक्षा के दौरान वर्तमान परिस्थितियों में मक्का और सोयाबीन फसल के उत्पादन पर चर्चा की गई। वहीं सोयाबीन की उत्पादकता बढ़ाने के लिए मेढ़-नाली एवं रेज्ड बेड पद्धति अपनाने तथा जुलाई के अंतिम सप्ताह से अगस्त मध्य तक कीट प्रबंधन करने की सलाह दी गई।

उर्वरकों की उपलब्धता की समीक्षा करते हुए कलेक्टर डॉ ने जिले में भंडारण क्षमता एवं आपूर्ति व्यवस्था की जानकारी ली और संबंधित अधिकारियों को पर्याप्त उपलब्धता सुनिश्चित करने के आवश्यक निर्देश दिए। नरवाई जलाने की घटनाओं पर कम दंडात्मक कार्रवाई को लेकर उन्होंने नाराजगी जताई।बैठक में फसल बीमा की समीक्षा के दौरान 4 अप्रैल को हुई ओलावृष्टि से प्रभावित किसानों को बीमा राशि उपलब्ध कराने के निर्देश संबंधित बीमा कंपनी को दिए गए। कलेक्टर डॉ सोनवणे ने किसानों की आय बढ़ाने के लिए राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन, एफपीओ एवं विभिन्न विभागों के बीच समन्वय एवं कन्वर्जेंस के माध्यम से नवाचार करने पर जोर दिया। समन्वित कृषि प्रणाली के क्लस्टर विकसित करने के निर्देश भी दिए गए।

पशुपालन विभाग की समीक्षा में कृत्रिम गर्भाधान, पशु रोग नियंत्रण, दुग्ध उत्पादन एवं मिल्क रूट की जानकारी ली गई। साथ ही चारा विकास, प्राकृतिक एवं जैविक खेती को बढ़ावा देने के निर्देश दिए गए।

क्षीरधारा ग्राम योजना अंतर्गत चयनित 37 आदर्श ग्रामों में विभिन्न गतिविधियों के संचालन पर भी जोर दिया गया। साइलेंज यूनिट की संभावनाओं का आकलन करने के निर्देश भी अधिकारियों को दिए गए। कलेक्टर डॉ सोनवणे ने सभी मैदानी अधिकारियों को स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार समन्वित कार्ययोजना बनाकर प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।

जन आक्रोश महिला पदयात्रा में भोपाल की सड़कों पर उतरीं मंत्री-सांसद और बीजेपी कार्यकर्ता

महिला आरक्षण बिल गिरने के विरोध में पद यात्रा, नारी अपना अपमान कभी नहीं भूलती : सीएम यादव

भोपाल (नप्र)। महिला आरक्षण बिल पास नहीं होने पर बीजेपी अब आक्रामक हो गई है। भोपाल में सीएम मोहन यादव के नेतृत्व में महिलाओं ने जन आक्रोश महिला पद यात्रा निकाली हैं। इस दौरान सीएम मोहन यादव ने कांग्रेस पर तीखा प्रहार किया है। उन्होंने कहा कि महिला आरक्षण बिल न पास होने पर कांग्रेस ने उसका मजाक उड़ाया। कांग्रेस नेत्री प्रियंका गांधी को शर्म आनी चाहिए।

लोकसभा में महिला आरक्षण संशोधन बिल पास नहीं हो पाने के विरोध में मध्य प्रदेश बीजेपी ने सोमवार को जन आक्रोश महिला पद यात्रा निकाली। इसमें मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव, बीजेपी के प्रदेश अध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल समेत मंत्री- सांसद और बीजेपी महिला मोर्चा की नेता-कार्यकर्ता शामिल हुईं।

पद यात्रा भोपाल के एमवीएम कॉलेज ग्राउंड से लोक भवन होते हुए रोशनपुरा चौराहे पहुंची। यहां मुख्यमंत्री ने काले गुब्बारे उड़ाकर इसका समापन किया।

इससे पहले हुई सभा में मुख्यमंत्री यादव ने कहा- नारी सब भूल सकती है लेकिन अपना अपमान कभी नहीं भूलती। कांग्रेस और उसके सहयोगियों ने महिलाओं के अधिकार का बिल गिरने पर खुशियां मनाईं। जश्न मनाया। हम बहनों के अधिकार को कुचलने के खिलाफ विधानसभा का विशेष सत्र बुलाकर निंदा प्रस्ताव पारित करेंगे।

प्रियंका गांधी पर बरसे सीएम

मोहन यादव ने कहा कि प्रियंका गांधी बड़ी-बड़ी बातें करती थीं, कहती थीं मैं लड़की हूं, लड़ सकती हूं। अब उनकी ये बड़ी-बड़ी बातें कहां गईं, जब बहनों के

अधिकार का उन्होंने गला घोंट दिया। कांग्रेस ने आजादी के समय शुरू की अपनी परंपरा को निभाया। प्रियंका-राहुल के पिता ने भी तीन तलाक के कानून को लेकर बहनों के अधिकार पर डाका डाला था। उन्होंने कहा कि इस आक्रोश को देश के सामने लाना है।

ये आपके हक की आग

इसके साथ ही सीएम मोहन यादव ने कहा कि ये जो आपके अंदर की आग है, अपने हक की आग है, इसे बुझने नहीं देना है। कांग्रेस और उसके साथी विपक्षी दलों ने बहनों के हक पर डाका डाला है। वे अपने मंसूबों में कभी कामयाब नहीं हो सकते। भारत में बहनों के हक के लिए भाइयों ने सदैव लड़ाइयां लड़ीं। राजा राम मोहन राय ने सती प्रथा के खिलाफ लड़ाई शुरू की। ज्योतिबा फुले ने नारी समानता के लिए लड़ाई लड़ी। डॉ. भीमराव अंबेडकर ने बहनों को अधिकार दिलाने के लिए लड़ाई शुरू की। महात्मा गांधी से लेकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने महिलाओं के हक में आवाज उठाई। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा था कि नारी सब भूल जाती है, कभी अपना अपमान नहीं भूलती। यह हमको याद रखना है।

सरकार बहनों के निर्णय के साथ

उन्होंने कहा कि हमारी पार्टी ने चाहा था कि सब दल मिलकर इसका समर्थन करें, लेकिन ऐसा हुआ नहीं। देश की आधी आबादी की इच्छा का गला घोंटने वालों आपको कब्र से निकालकर सजा दी जाएगी। आपने बहनों के साथ अन्याय किया है। आपको ये बहनें माफ नहीं करेंगी। सीएम मोहन यादव ने कहा कि आज मन में इस बात का आक्रोश है कि हमारे बहनों के लिए जो अवसर मिला था, उसे विपक्ष ने कुचल दिया। हमारी परंपरा तो मातृ सत्ता की रही है। जब तक हम सीता नहीं बोलते, तब तक भगवान राम भी आशीर्वाद नहीं देते। जब तक राधा को याद नहीं करो, तब तक कन्हैया भी मुस्कुराते नहीं हैं। उनका आशीर्वाद नहीं मिलता है। बिना माता के महादेव का आशीर्वाद कैसे मिल सकता है।

विधानसभा का विशेष सत्र बुलाकर करेंगे निंदा

सीएम मोहन यादव ने कहा कि आज भोपाल से पदयात्रा निकल रही है। इस आक्रोश को पूरे देश के सामने लाना है। बहनों ने अक्षय तृतीया पर यहां आकर लोकतांत्रिक मार्ग को अपनाया है। इस बात के लिए मैं बहनों का वंदन करता हूं। हमारी सरकार बहनों के निर्णय के साथ खड़ी है। हर जगह निंदा प्रस्ताव पारित करेंगे। विधानसभा का विशेष सत्र बुलाकर निंदा करेंगे।

यह आक्रोश हर समाज में दिखना चाहिए : हेमंत

विपक्ष ने भारत के सपने को तोड़ दिया। यह आक्रोश घर-घर तक जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि मैं बहनों से आह्वान करता हूं कि यह आक्रोश हर समाज में दिखना चाहिए। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल ने यह भी कहा कि जन आक्रोश और विरोध हर क्षेत्र और हर मोहल्ले में हो। महिला आरक्षण के विरोधी बेनकाब हो। गौरतलब है कि सीएम मोहन यादव के नेतृत्व में हजारों की संख्या में महिलाएं आज भोपाल की सड़कों पर उतरी थीं। सीएम ने साफ कहा है कि यह आंदोलन थमने वाला नहीं है। आगे भी यह लड़ाई जारी रहेगी।

54 बाघों की मौत से हिला सिस्टम

अब रिजर्व के बाहर भी मिलेगा स्पेशल प्रोटेक्शन , आएगी सुरक्षा नीति

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश में बाघों की लगातार हो रही मौतों ने वन्यजीव प्रेमियों और सरकार की नींद उड़ा दी है। साल 2025 में रिकॉर्ड 54 बाघों की मौत के मामले में नेशनल टाइगर कंजर्वेशन अथॉरिटी ने मध्य प्रदेश हाईकोर्ट में एक विस्तृत हलफनामा दाखिल किया है। इसमें बाघों को बचाने के लिए एक नई और हाईटेक सुरक्षा नीति का खुलासा किया गया है, जो अब रिजर्व की सीमाओं से बाहर भी लागू होगी।

एनटीसीए ने कोर्ट को बताया कि अब केवल टाइगर रिजर्व ही नहीं, बल्कि उनसे सटे जंगलों, गलियारों और क्षेत्रीय डिवीजनों में भी वही सुरक्षा मिलेगी जो रिजर्व के अंदर उपलब्ध होती है। इसके लिए टाइगर आउटसाइड टाइगर रिजर्व योजना शुरू की गई है। सबसे अहम बात यह है कि साल 2025-26 के पहले चरण के लिए मध्य प्रदेश के 8 फॉरेस्ट डिविजन को चुना गया है।

एआई और आधुनिक हथियारों से होगी घेराबंदी

बाघों के अंगों की तस्करी और शिकार रोकने के लिए अब पुराने तरीके नहीं चलेंगे। एनटीसीए ने राज्यों को आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित मॉनिटरिंग सिस्टम और वायरलेस संचार को मजबूत करने का निर्देश दिया है। इसके साथ ही, इंटेलिजेंस गैदरिंग, स्ट्राइक फोर्स की तैनाती और अपराध का पता लगाने के लिए आधुनिक हथियारों के उपयोग पर जोर दिया गया है।

इन्वायलेट रहेगा कोर एरिया

हाईकोर्ट में दायर हलफनामे में वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, 1972 की धारा 38 - (4)(आई) का हवाला देते हुए स्पष्ट किया गया कि नेशनल पार्क और अभयारण्यों के कोर क्षेत्रों को इन्वायलेट रखा जाना अनिवार्य है। यानी बाघों के संरक्षण के लिए इन क्षेत्रों में मानवीय हस्तक्षेप पूरी तरह वर्जित रहेगा। नंदकिशोर काले, सहायक महानिरीक्षक (वन) ने कहा प्रोजेक्ट टाइगर के तहत हम अब उन इलाकों पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं जहां बाघ रिजर्व से बाहर निकलकर जा रहे हैं। इन कॉरिडोर क्षेत्रों में सुरक्षा को अभेद्य बनाना और एआई का उपयोग करना हमारी प्राथमिकता है।

एमपी की 23634 पंचायत और 444 तहसीलों में लगेंगे विंड सिस्टम

हर 15 मिनट में मौसम और बारिश की जानकारी सरकार को मिलेगी

भोपाल (नप्र)। एमपी में अब खेती-किसानी और प्राकृतिक आपदाओं की निगरानी पूरी तरह डिजिटल होने जा रही है। प्रदेश सरकार ने राज्य की सभी 23,634 ग्राम पंचायतों में ऑटोमैटिक रेन गेज और सभी 444 तहसीलों में ऑटोमैटिक वेदर स्टेशन स्थापित करने की बड़ी योजना शुरू की है।

इस काम के लिए कृषि विभाग ने निविदा जारी कर कार्यान्वयन भागीदारों से आवेदन मांगे हैं। इस सिस्टम की सबसे बड़ी विशेषता यह होगी कि अब मौसम और बारिश का सटीक डेटा हर 15 मिनट में सीधे सरकार के पोर्टल पर अपडेट होगा, जिससे सूखे और अतिवृष्टि जैसी स्थितियों की रियल-टाइम रिपोर्टिंग संभव हो सकेगी।

परियोजना की लागत और बजट

इस महत्वाकांक्षी परियोजना को केंद्र और राज्य सरकार के साझा सहयोग से जमीन पर उतारा जा रहा है। सरकारी आंकड़ों के अनुसार, एक ऑटोमैटिक रेन गेज की स्थापना पर लगभग 35,000 से 40,000 और तहसील स्तर के वेदर स्टेशन पर 1.5 लाख से 2 लाख तक का खर्च आने का अनुमान है।

प्रदेश की 24,000 से अधिक लोकेशन्स को कवर करने के लिए इस पूरे प्रोजेक्ट पर करीब 100 करोड़ से 120 करोड़ का निवेश किया जाएगा। भारत सरकार इस कुल लागत का 50 प्रतिशत हिस्सा वायबिलिटी गैप फंडिंग के रूप में प्रदान करेगी, जबकि बाकी की राशि राज्य सरकार और चयनित एजेंसियां वहन करेंगी।

इसकी जरूरत क्यों पड़ी?

वर्तमान में मौसम की जानकारी केवल जिला या ब्लॉक स्तर पर उपलब्ध होती है, जो स्थानीय स्तर पर होने वाली प्राकृतिक घटनाओं का सटीक आकलन करने के लिए पर्याप्त नहीं है। अक्सर देखा गया है कि एक ही तहसील के भीतर किसी एक गांव में भारी बारिश (अतिवृष्टि) होती है, जबकि दूसरे गांव में सूखा रहता है।

डेटा के इस अभाव के कारण प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के तहत किसानों के नुकसान का सही आकलन नहीं हो पाता था और दावों के निपटान में देरी होती थी। अब हर पंचायत में यंत्र लगने से यह समस्या पूरी तरह खत्म हो जाएगी और किसानों को उनके वास्तविक नुकसान का मुआवजा मिल सकेगा।

यह कैसे काम करेगा?

यह पूरा सिस्टम पूरी तरह से ऑटोमैटिक और सौर ऊर्जा से संचालित होगा। पंचायतों में लगे रेन गेज और तहसीलों में लगे वेदर स्टेशन में आधुनिक सेंसर और सिम कार्ड आधारित टेलीमेट्री सिस्टम लगा होगा।

ये उपकरण हर 15 मिनट के अंतराल पर बारिश की मात्रा, हवा की गति, तापमान और नमी जैसे मानकों को रिकॉर्ड करेंगे और वायरलेस तकनीक के जरिए सीधे विंड्स के केंद्रीय सर्वर को डेटा भेज देंगे। इस प्रक्रिया में किसी मानवीय हस्तक्षेप की आवश्यकता नहीं होगी, जिससे डेटा की शुद्धता और पारदर्शिता बनी रहेगी।

भोपाल-जोधपुर एक्सप्रेस की जनरेटर कार में धुआं

20 मिनट तक अनदेखी, फिर धुएं से घिरा स्टेशन, यात्रियों को सांस लेने में हुई दिक्कत

भोपाल (नप्र)। भोपाल रेलवे स्टेशन पर सोमवार दोपहर करीब 3:30 बजे उस समय हड़कंप मच गया, जब भोपाल से जोधपुर जाने वाली भोपाल-जोधपुर एक्सप्रेस की जनरेटर कार से अचानक धुआं उठने लगा। घटना प्लेटफॉर्म नंबर-6 पर हुई, लेकिन धुएं का असर इतना ज्यादा था कि प्लेटफॉर्म नंबर-1 तक इसका गुबार पहुंच गया। इससे अन्य प्लेटफॉर्म पर बैठे यात्रियों को भी सांस लेने में दिक्कत का सामना करना पड़ा।

प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक, जनरेटर कार से अचानक तेज धुआं और हल्की आग की लपटें दिखाई दीं। देखते ही देखते पूरा स्टेशन धुआं-धुआं हो गया। हालांकि रेलवे स्टाफ और इंजीनियरिंग टीम ने तुरंत मौके पर पहुंचकर स्थिति को नियंत्रित कर लिया, जिससे एक बड़ा हादसा टल गया।

शॉर्ट सर्किट की आशंका, जनरेटर कार में हादसा

भोपाल रेल मंडल के प्रवक्ता नवल अग्रवाल ने बताया कि ट्रेन को प्लेटफॉर्म पर शिफ्ट करने के दौरान पावर ऑन किया गया

था, तभी जनरेटर कार में शॉर्ट सर्किट की वजह से धुआं निकलने लगा। प्रारंभिक जांच में तार जलने की बात सामने आई है। फिलहाल स्थिति पूरी तरह नियंत्रण में है और इंजीनियरों की टीम जांच में जुटी हुई है।

यात्री नहीं थे मौजूद

राहत की बात यह रही कि घटना के समय ट्रेन प्लेटफॉर्म पर पूरी तरह लगी नहीं थी और उसमें यात्री मौजूद नहीं थे। यह ट्रेन शाम 4:50 बजे भोपाल से रवाना होती है। अधिकारियों के मुताबिक, वैकल्पिक व्यवस्था कर ट्रेन को समय पर रवाना करने की कोशिश की जा रही है।

करीब 20 मिनट बाद चला पता, तब तक फैल चुका था धुआं

अधिकारियों की बातचीत में यह भी सामने आया कि शुरुआती कुछ मिनटों तक किसी को स्पष्ट रूप से आग या धुएं का अंदेशा नहीं हुआ। जनरेटर कार के अंदर तकनीकी गड़बड़ी धीरे-धीरे बढ़ती रही, लेकिन करीब 15-20 मिनट बाद जब धुआं तेजी से पूरे प्लेटफॉर्म और आसपास के क्षेत्र में फैल गया, तब कर्मचारियों और मौजूद लोगों को स्थिति की गंभीरता का एहसास हुआ। इसके बाद तुरंत फायर बूस्टर की मदद से आग पर काबू पाया गया।

अन्य प्लेटफॉर्म पर भी असर, यात्रियों को हुई परेशानी

घटना के दौरान स्टेशन परिसर में धुएं का गुबार फैल गया, जिससे अन्य प्लेटफॉर्म पर बैठे यात्रियों को भी परेशानी हुई। कुछ देर के लिए अफरा-तफरी का माहौल बन गया, हालांकि स्थिति जल्द सामान्य कर ली गई।

फायर बूस्टर से बुझाई गई आग, बदला जाएगा इंजन

अधिकारियों के मुताबिक, आग को फायर बूस्टर की मदद से तुरंत काबू में कर लिया गया। इसके बाद एहतियातन जनरेटर कार को अलग कर दिया गया और वैकल्पिक इंजन व पावर कार की व्यवस्था की जा रही है। बातचीत में यह भी सामने आया कि इंजन बदला जाएगा और तकनीकी जांच के बाद ही ट्रेन को आगे रवाना किया जाएगा।

ईरान युद्ध का असर

भोपाल में हुई शादियां...लकड़ी की भट्टियों पर बना भोजन

भोपाल (नप्र)। राठौर संघ भोपाल द्वारा 20 अप्रैल 2026 को पंडित खुशीलाल शर्मा आयुर्वेदिक चिकित्सा संस्थान परिसर, दशहरा मैदान, कलियासोत डेम, नेहरू नगर में सामूहिक विवाह एवं परिचय सम्मेलन आयोजित किया गया। कार्यक्रम में समाज के कई जोड़े वैदिक रीति-रिवाजों के साथ विवाह बंधन में बंधे, जबकि करीब 250 युवक-युवतियों ने परिचय सम्मेलन में हिस्सा लिया।

कार्यक्रम की शुरुआत सुबह 8 बजे दीप प्रज्जवलन और गणेश वंदना के साथ हुई। इसके बाद सुबह 9 से 12 बजे तक परिचय सम्मेलन आयोजित किया गया। परिचय सत्र के बाद सामूहिक विवाह संस्कार संपन्न हुआ, जिसमें नवदंपतियों को आशीर्वाद दिया गया और विदाई समारोह भी आयोजित किया गया। ईरान युद्ध के बाद घरेलू गैस, पेट्रोल और डीजल की स्थिति को देखते हुए आयोजन समिति ने लकड़ी की भट्टियों पर भोजन बनाने का निर्णय लिया। सम्मेलन में बनने वाला अधिकांश भोजन लकड़ी की आग पर तैयार किया गया, जिससे आयोजन बिना किसी बाधा के पूरा हो सका। भोजन व्यवस्था के लिए पारंपरिक चूल्हों और लकड़ी की भट्टियों का उपयोग किया गया। इससे एक ओर जहां गैस पर निर्भरता कम हुई, वहीं आयोजन में पारंपरिक पद्धति की झलक भी देखने को मिली।सम्मेलन को पर्यावरण के अनुकूल बनाने के लिए प्लास्टिक पर पूरी तरह प्रतिबंध रखा गया।

2 घंटे तड़पती रही प्रसूता, इंजेक्शन से मौत

सागर (नप्र)। सागर के बुंदेलखंड मेडिकल कॉलेज (बीएमसी) में सोमवार सुबह 30 वर्षीय प्रसूता की इलाज के दौरान मौत हो गई। परिजनों ने डॉक्टरों पर लापरवाही बरतने और स्टाफ द्वारा गलत इंजेक्शन लगाने का आरोप लगाते हुए अस्पताल परिसर में जमकर हंगामा किया।

पुलिस ने मौके पर पहुंचकर परिजनों को समझाइश देकर शांत करा दिया है, वहीं परिजन मामले की निष्पक्ष जांच की मांग कर रहे हैं, जबकि अस्पताल प्रबंधन की ओर से अब तक कोई जवाब सामने नहीं आया है।

मौत की खबर मिलते ही परिवार के लोग अस्पताल में जमा हो गए और प्रबंधन पर इलाज में लापरवाही का आरोप लगाकर हंगामा शुरू कर दिया। मृतका के परिजनों ने आरोप

लगाते हुए कहा, सध्या को अस्पताल में भर्ती किया था। वह 2 घंटे तक तड़पती रही, लेकिन किसी ने इलाज नहीं किया। रविवार रात अचानक उसकी तबीयत बिगड़ गई। मौजूद अस्पताल स्टाफ ने एक इंजेक्शन लगाया, जिसके बाद तबीयत और बिगड़ गई। इसी दौरान संध्या की मौत हो गई।

हंगामा कर रहे परिजनों ने यह भी आरोप लगाया है कि प्रसूता की मौत के बाद से बीएमसी प्रबंधन ने अब तक उन्हें मृत संध्या का चेहरा नहीं देखने दिया है। परिजनों ने पुलिस और प्रशासन से मामले की निष्पक्ष जांच कर दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने की मांग की है। अस्पताल में हंगामे की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और परिजनों को समझाइश देकर शांत कराया। इस पूरे मामले को लेकर बीएमसी प्रबंधन की तरफ से अब तक कोई आधिकारिक पक्ष सामने नहीं आया है।

विभाग से साहब की बेरूखी

अपर मुख्य सचिव स्तर के एक आला अधिकारी को सरकार ने एक बड़े महकमे की जिम्मेदारी बड़े अरमानों के साथ दी थी, लेकिन लगता है कि साहब महकमे के मिजाज के हिसाब से रम नहीं पा रहे हैं। ऐसा महकमा जो कि पूरे समय एक्टिव मोड में रहता है, वहां साहब को अवकाश पर अवकाश भा रहा हैं। वैसे भी वे मुख्य धारा के विभाग को छोड़ अतिरिक्त प्रभार वाले महकमे में उनका ध्यान ज्यादा रहता था। अपर मुख्य सचिव की मुख्यमंत्री पूर्व में सार्वजनिक तौर पर जमकर प्रसंशा कर चुके है। एसीएस को पूर्ववर्ती विभाग इतना रम रहा था कि वह इससे हटने का विचार भी नहीं कर सके, लेकिन सीएम की शाबासी के बाद तबादलों में उनका नाम आने का एसीएस को भरोसा नहीं हो रहा था। भरोसा भी कैसे होता जब पूर्ववर्ती विभाग के एक प्रोजेक्ट की दिल्ली से निगरानी हो रही हो और एसीएस प्रोजेक्ट से शुरू से जुडे हों। ऐसी दशा में तबादला समझ से परे हैं। अब बताया जा रहा है कि विभाग से साहब का मन भर गया है, ऐसे में उनकी ये बेरूखी कहीं महकमे से विदाई की वजह बन जाए, तो कोई आश्चर्य नहीं होगा।

मोहन का मंत्रालय
आशीष चौधरी

कांग्रेस के 'रुद्राक्ष' नेता

मध्य प्रदेश कांग्रेस के एक वरिष्ठ नेता पार्टी में रुद्राक्ष के लिए जाने जाते हैं। वरिष्ठ नेता एक महत्वपूर्ण विभाग की जिम्मेदारी तो संभाल ही रहे हैं वहीं उन्होंने इन दिनों 'पंडित प्रदीप मिश्रा' वाली कार्यशाली भी अपना ली है और वह उनसे मिलने वाले पार्टी नेताओं को रुद्राक्ष के लाभ-हानि भी बताते हैं। वरिष्ठ नेता की योग्यता से वैसे तो पूरी पार्टी लाभांवित है लेकिन रूद्राक्ष का प्रसाद अभी कुछ ही पदाधिकारियों को मिल रहा है। वरिष्ठ नेता के यहां रुद्राक्ष का बड़ा पेड़ लगा है, जो चर्चा का विषय है। पिछले दिनों एक कांग्रेस के पदाधिकारी को वरिष्ठ नेता ने रुद्राक्ष भेंट किया और यहां तक कहा कि अब तुम्हारे सितारे बुलंदियों पर होंगे। पदाधिकारी ने भी वरिष्ठ नेता के आशीर्वचन को शिरोधार्य किया। बता दें कांग्रेस के इन वरिष्ठ नेता के पास भाजपा की राज्य सरकार को मीडिया के माध्यम से घेरने की जिम्मेदारी है। वरिष्ठ नेता पूर्व मंत्री भी रह चुके हैं।

सत्ता के लिए संकल्प !

पिछले दो दशक से मध्य प्रदेश में सत्ता से बाहर कांग्रेस के नेता किसी भी तरह अब प्रदेश में अपनी सरकार बनाने के लिए संकल्पित है। इसके लिए उन्होंने न केवल अपने कार्यकर्ताओं को चार्ज करना शुरू कर दिया है, बल्कि वह अब ऐसे-ऐसे संकल्प भी ले रहे हैं जो कांग्रेस की पूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी की याद दिलाती है। पिछले दिनों कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी ने ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्षों के सम्मेलन में यहाँ तक कहा कि उन्हें न मुख्यमंत्री बनना है, ना मंत्री, बल्कि वह प्रदेश में कांग्रेस की सरकार बनाने के लिए दिन-रात लगे हैं और इसके लिए उनकी खून की आखिरी बूंद भी लग जाए तो वह इसके लिए तैयार हैं। पटवारी का यह संकल्प कब पूरा होगा यह तो वक्त ही तय करेगा।

कलेक्टर साहब का मिशन पूरा

प्रदेश के महाकौशल क्षेत्र में पदस्थ एक कलेक्टर साहब का मिशन पूरा हो गया है। ऐसा उनका कहना अपने समर्थकों के बीच है। समर्थक बताते हैं कि कलेक्टर ने जिले में एक बड़ी धार्मिक जिम्मेदारी को बखूबी निभाया और अब उनकी जिले में कलेक्ट्री करने की इच्छा नहीं है। सूत्रों का कहना है कि कलेक्टर के निवेदन पर पिछले दिनों मुख्यमंत्री भी जिले का दौरा कर एक बड़े धार्मिक स्थल के कई बड़े कार्यों का न केवल शुभारंभ किया बल्कि शिलान्यास भी कर दिया। इसके बाद कलेक्टर साहब अब कहने लगे हैं कि महाकाल के बाद उनकी यह मनोकामना भी पूरी हो गई। बता दें कि उक्त कलेक्टर साहब एक केंद्रीय मंत्री के खास हैं।